अभक्ष्य अनंतकाय विचार.

प्रकाशक

श्री जैन संस्कार मंडळ.

[illegible].

☞ वांचो. ☜

पुस्तकने जेम तेम ज्यां त्यां रखडतुं मुकवुं नहि,
अशुद्ध हाथे पुस्तकने अडवुं नहि तेम
उघाडे मुखे पुस्तक वांचवुं नहि.

अगत्यनी सूचना.

बहु कोइ भव्य आत्माओने पवित्र ज्ञानामृतनो अपूर्व लाभ अनुकूळताथी मळे एवा शुद्ध उद्देशथी भेट दाखल आपवामां आवतां कोइ पण पुस्तक उपर कोइए पण मिथ्या मारापणानी ममता बुद्धि राखी कोइ रीते पुस्तकनो दुरुपयोग करवो नहि, पण प्रमाद रहित पूरती काळजी राखी तेनो जाते लाभ लइ बीजा सर्वे ते जिज्ञासु भाइ व्हेनोने ते भेट दाखल मळेलां पुस्तकनो छूटथी लाभ लेवा देवो अने एवी रीते बनतो फायदो उपजाववो, भेट दाखल अपातां पुस्तकोनो पवित्र उद्देश सफळ करवो. ए रीते दरेक भाइ व्हेनोने नम्रतापूर्वक खास भलामण करीए छीए. जे उच्च उद्देशथी पुस्तको भेट दाखल आपवामां आवे छे ते उद्देश सफळ थाय अने तेनी कोइ रीते आशातना थती अटके एटलुं सूचवी विरमीए छीए.

किंमत- काळजीपूर्वक पठन, मनन अने परिशीलन.

१०

परोपकाराय सतां विभूतय:

अभक्ष्य अनंतकाय विचार.

योजक,

प्राणलाल मंगळजी शाह.

रसनेन्द्रियमां लुब्ध थवाथी जाणतां अजाणतां लेवाता दूषणोथी दूषित थयेला अने थता जैनबन्धुओना अनुग्रहार्थे

श्री भारुंदा निवासी शेठ रामाजी पदमाजीनी आर्थिक सहाय वडे.

छपावी प्रसिद्ध कर्ता.

श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ तरफथी

शाह वेणीचंद सुरचंद—महेसाणा.

झवेरी हीराभाइ मंछुभाइ—सुरत.

शाह रायचंद उगरचंद—धसइ.

आवृत्ति ४ थी. प्रत ४०००.

वीर संवत् २४४९ सने १९२३. विक्रम संवत १९७९.

मूल्य, ०-२-६.

धी सूर्यप्रकाश प्रिन्टींग प्रेसमां मुळचंदभाई त्रीकमलाले छाप्युं
ठेकाणुं कालुपुर टंकशाळ–अमदावाद

ग्रंथ संबंधी अमारो अभिप्राय.

आ ग्रंथ छपाया पहेलां तेनुं आद्यंत अवलोकन करीने ज्यां सुधारवा जरुर जणाइ त्यां सुधारवा ग्रंथकर्त्ताने सूचव्युं हतुं, तेथी तेमणे फॅर कॉपी करतां लक्ष्य राख्युं लागे छे. उक्त ग्रंथ तैयार करवामां मि. प्राणलाल मंगळजीए अथाग परिश्रम लीधो छे. तेमज पुष्कळ वखतनो व्यय करी अनेक शंकित स्थळे पूछवा लायक विद्वान् साधुओ तथा श्रावकोना अभिप्राय मेळवी जेम बने तेम काळजीथी अभक्ष्य अनंतकाय संबंधी सविस्तर ब्यान आपवा प्रयत्न कर्यो छे. खपी श्रावक श्राविकाओने उक्त विषय बाबत एक उपयोगी गाइडनी गरज सारे एटले दरजे ग्रंथकर्त्ताए तेमां मथन कर्युं छे, ते फळीभूत थाओ ! विशेषे करीने प्रस्तुत ग्रंथ जैन मतानुयायीने उपयोगी छे, केमके अभक्ष्य अनंतकायने समजी तेनो त्याग करवामां जैनो जेवा मशहुर छे तेवा अन्य मतानुयायी नथी; तोपण जो आ ग्रंथने कोइ तत्त्वरुचि होइ मध्यस्थता पूर्वक वांचशे तो ते कांइने कंइ लाभ मेळवी शकशे. छपायेलो ग्रंथ में उतावळथी उपर टपके जोयो छे; एकंदर तेथी खरी जनोने तो लाभज संभवे छे; दूषमां

पोरा जोनारा छिद्र बुद्धिने तो तेथी लाभ थइ नहीं ज शके ए स्वाभाविक समजाय छे. आ छोटा पण ग्रंथ उपरथी कर्तानुं धर्ममां केवुं ज्ञनुन छे, तथा व्रत नियमोमां तेनी केवी द्रढ टेक छे, ते प्रसंगे झळकी आवे छे. वधारे प्रशंसा करवानो अत्र अवकाश नथी. फक्त तेनो प्राथमिक श्रम सफळ थाय माटे दरेक तत्त्वजीज्ञासु सज्जनने आ ग्रंथ आद्यंत वांची तेमांथी गुण ग्रहण करी लेवा साग्रह भळामण करी अत्र विरमुं छुं.

ली. सन्मित्र कर्पूरविजय.

प्रस्तावना.

व्रतधारी श्रावको मुख्यत्वे करीने बावीश अभक्ष्यना त्यागी होय छे तेमना उपयोगनो जागृतिने अर्थे तथा धन्य भव्य प्राणिओना हितने माटे बावीश अभक्ष्य, अनाचरणीय वस्तुओ वगेरे संबंधी किंचित् अधिकार दर्शाव्यो छे, ते वांची विचारी तदनुसार वर्तन राखवा तेओ यथाशक्ति उजमाळ थशे तो स्वपरने अति हितकारी थशे. केटलाक बंधुओ बावीश अभक्ष्य अगर बीजा नियमो ले छे पण तेनुं यथार्थ स्वरुप समज्या वगर लेवाथी पाछळथी व्रतमां स्खलना पडे छे, जेथी प्रथमथीज तेनुं वास्तविक स्वरुप समजवाने माटे आ प्रयास कर्यो छे. जेमांनी घणोखरी बाबतोनो खुलासो विद्वान् मुनिमहाराजाओ तथा उपयोगवंत श्रावको वगेरेने पूछी लख्यो छे. केटलीक बाबतोमां मतभेद होवाथी मध्यस्थपणुं राखवुं उचित जाणी यथायोग्य लख्युं छे; छतां पण शंका जेवी बाबतोनो विशेष ज्ञानी पासेथी निर्णय करी लेवो. आ ग्रंथमां मतिमंदताथी जे कांइ श्रीवीतरागनी आज्ञा विरुद्ध लखायुं होय ते संबंधी श्रीसंघ समक्ष मिथ्यादुष्कृत दउं छुं तथा दृष्टिदोषथी जे कांइ कानो, मात्रा, अनुस्वार तथा ह्रस्व दीर्घनी भूल रही गइ होय तेने माटे सुज्ञ वांचकजनने ते सुधारी वांचवा सविनय प्रार्थना करुं छुं.

आ पुस्तक अथथी इति सुधी वांचवा जरुर खप करवो तथा जे रसोइनुं काम करता होय तेने उपयोग पूर्वक समजावी ते मुजब वर्तवा शीखामण आपवी; तथा आ पुस्तक वांची समजी यथाशक्ति नियम लेवा अवश्य उद्यम करवो अने जेओ विरतिवंत छे तेओए अवश्य बीजा अन्य मुग्ध संसारजाळमां फसाएला प्राणीओने विरतिरुपी सुखडी चखाडवी. आ पुस्तक तेमज बीजा ज्ञाननां दरेक पुस्तकनी आशातना करवी नहि. "आगमनी आशातना नवी करीए" ए पूजानुं रहस्य वारंवार मनन करी ज्ञान आशातनाथी भय पामी जेम बने तेम ज्ञाननुं अति आदर–विनय पूर्वक बहुमान करवुं; ज्ञान पुस्तक पासे राखी आहार निहार करवो नहि; अशुद्ध हाथे के लघुनीति कर्या पछी हस्त स्वच्छ कर्या वगर ज्ञानने अडवुं नहि; ज्ञान पासे छतां सूवुं नहि; थूंकवाळी आंगळी लगाडवी नहि; पग चडावी बेसवुं नहि; ज्ञान तरफ पीठ के पग राखवो नहि; ज्ञान जमीन उपर नीचे न मूकवुं; अशुद्ध जग्याए के अकाळे भणवुं नहि; पग उपर के चरवळा उपर राखीने भणवुं नहि कारण के नाभि नीचेनो भाग अशुद्ध छे अने चरवळो तो पुंजवानुं साधन छे, तेथी सापडा उपर मूकी मुख आंगळ मुहपत्ति के वस्त्र राखीने वांचवुं. (मुहपत्तिनो घणो प्रचार मंद थतो जाय छे जेथी ज्ञानने श्वास, थूंक वगेरे लागवाथी बहु आशातना थाय छे तेथी अवश्य मुहपत्तिनो उपयोग चूकवो नहि. वळी गौतम महाराजे वीर प्रभुने पूछ्युं जे इंद्र सावद्य भाषा बोले के निरवद्य ? त्यारे भगवंते उत्तर आप्यो के मुख आगळ वस्त्र प्रमुख राखी बोलतां निरवद्य भाषा

बोले अन्यथा ते सावद्य जाणवी. जेथी अष्ट प्रवचन माताना रक्षक मुनिमहाराजाओने पण अमे प्रार्थना करीए छीए के प्रमाद त्यजी मुहपत्ति के जे नामनी थइ गइ छे तेनो सद्उपयोग करवा काळजी राखवामां आवे तो पासे रहेनारा श्रावक श्राविका वर्ग पण तेनो सदुपयोग करतां शीखे.) रस्ते चालतां पण ज्ञान नाभि उपर अने मस्तक नीचे (छाता सरखुं) राखवुं; जेम राजा, शेठ प्रमुख आवतां उभा थइने तेमनु बहुमान करीए छीए तेम ज्ञाननु बहुमान, वंदन, पूजन करवुं. जो ज्ञानावरणीय कर्म शीघ्र क्षय करवां होय तो ज्ञाननी आशातना कोइ पण प्रकारे न थाय तेवो शुद्ध उपयोग राखो जेथी लोकालोकप्रकाशक उत्तम केवळज्ञान प्राप्त थाय. सुज्ञेषु किंबहुना ?

लि० ग्रंथकर्ता.

भूमिका.

प्रिय वांचनार!

कोइ कोइ जातिनी देशी परदेशी दवाओ, हमेशनी उपयोगनी वस्तुओ, घन अने प्रवाही पदार्थो, के जे दोषवाळा छतां ते वस्तुओनी उत्पत्ति अने दोषना ज्ञानना अभावे भवभीरूजनोथी पण ते वस्तुओ जाण्ये अजाण्ये वपराशमां लेवाती; तेमज पाश्चिमात्य छायाना वधु संसर्गथी भक्ष्याभक्ष्यनो विवेक बहुज ओछा हृदयोमां रहेवा पाम्यो अने तेने लइने घणीक वस्तुओ के जे एक जैन तरीके ओळखाती व्यक्तिने कदी पण नहीं खावी पीवी जोइए एवी वस्तुओ पण वपरावी शरु थइ; आवा समयमां दोषवाळी अभक्ष्य अनंतकाय वस्तुओ के जे शुं कारणथी नहीं वापरवी जोइए? वापरवाथी शुं दोष थाय छे? ते अने तेने लगती वधु हकीकतो सूचवनारा एक पुस्तकना खास जरुर हती; तेवा समयमां जुनागढ निवासी मा. प्राणलाल मंगळजीए केवळ उपकार बुद्धिथीज आ ग्रन्थनी योजना करी छे. जे जरूरीयातना वखतमां जिज्ञासु जनोने घणीज उपयोगी थइ पडवाथी प्रथमनी बे आवृत्ति टुंक मुदतमां थइ रही छे; हजु पण पेयापेय अने भक्ष्याभक्ष्यनी बाबतनो विवेक प्राप्त करवाना जिज्ञासुओ तरफथी उपराउपर मागणीओ थवाथी बीजी आवृत्तिमां बनतो सुधारो वधारो करीने आ त्रीजी आवृत्ति

छपावी छे. आ आवृत्तिमां केटकीक फुटनोट श्री भावनगर निवासी श्रीयुत वोहोरा अमरचंद जसराजे लखी आपेल दाखल करी छे.

आ पुस्तक वांची धर्मना खपी पुरुषो पोते अभक्ष्य वस्तुओनो त्याग करशे अने अन्यबंन्धुओने वचावी, उपदेशथी समजावी त्याग करावशे तो योजकनो अने अमारो उद्देश अने प्रयत्न सफळ थयो समजीशुं.

आ ग्रंथनी प्रथमनी बे आवृत्तिओ अमोए शास्त्री टाइपमां छपावी हती परंतु गुजरात काठीयावाडना केटलाक भाइओने शास्त्री अक्षरनुं ज्ञान नहि होवाथी तेओना लाभने खातर आ आवृत्ति गुजरातीमां छपावी छे.

आ ग्रन्थना योजक के जेमणे पोतानो किम्मती वखत रोकी केवळ हितबुद्धिथीज आ बाबतोनी माहेती मेळवी ग्रन्थरुपे योजना करी छे ते बदल तेमनो तथा आ ग्रन्थने तपासी सुधारो वधारो करवानी सूचना आपी छे तेमनो आ प्रसंगे अमो अंतःकरणपूर्वक आभार मानीए छीए अने पुनः पुनः आवाज परमार्थना कार्य परत्वे तन, मन, अने धननो यथाशक्ति भोग आप्या करे, एवुं इच्छी विरामीए छीए. संवत १९७१ चैत्र सुदी १५.

लि. प्रसिद्ध कर्ता.

चोथी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ बुकनी त्रीजी आवृत्तिनी ३००० नकल अमे संवत १९७१ नी सालमां छपावी हती, ते घणा वखत थया खलास थइ हती. जो के तेनी मागणी तो बहु हती पण केटलाक अनिवार्य संयोगो नडवाथी अमे तेने तरतज छपावी शक्या न हता. हवे तेनी चोथी आवृत्ति छपावी बहार पाडीए छीए.

सहाय आपनार महाशयनी इच्छा अनुसार अमे आ बुकने फरी शास्त्री टाइपमां छपावी छे छतां तेने गुजराती टाइपमां पण छपाववानो अमारो इरादो छे.

आ बुकने छपाववामां श्री भारुंदा (मारवाड) (हाल मुंबइ) निवासी शेठ रामाजो पदमाजीए रु. ५००) नी मदद आपी छे ते बाबत तेमनो तथा प्रूफ तपासी आपनार पंडित भगवानदास हरखचंदनो अंतःकरण पूर्वक आभार मानीए छीए.

सं. १९७९ नी
विजया दशमी.

लि. प्रसिद्ध कर्त्ता.

अनुक्रमणिका.

बावीश अभक्ष्य वर्णन १

चलित रस आश्रयी सूचना ३७

बत्रीश अनंतकाय ६४

बावीश अभक्ष्य उपरांत बीजी अभक्ष्य चीजो... ... ७३

बहु आरंभ थनां तृप्ति न थाय अने पश्चात् हिंसा बहु थवाना कारगे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ ८९

दर्शन विरुद्ध तथा लोक विरुद्धना कारगे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ ९२

त्रसजीवनी बहु हिंसा थवाना कारणे वर्जवायोग्य वनस्पतिओ ९३

फागण शुद १५ थी कार्तिक शुद १५ सुधी वर्जवा योग्य वनस्पतिओ ९४

आद्रा नक्षत्रथी त्याग करवा योग्य वनस्पतिओ. ... ९५

चोमासामां त्रस जीवो पडवाना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ ९७

चालु वपरावामां आवती वनस्पतिओ ९८

सचित्त त्यागी, द्वादश व्रतधारी तथा चौद नियम धारनारने सचित्त संबंधी ध्यानमां लेवा योग्य केटलीक बाबतोनो खुलासो. १०२

सुज्ञ व्हेनोने ध्यानमां लेवा योग्य सूचनाओ ११९

संमूर्च्छिम मनुष्यनी प्रमादवडे सेवाती हिंसा १२५

परमार्हत कुमारपाळ भूपाळना बारव्रतनी संक्षिप्त नोंध ... १३०

अभक्ष्य अनंतकाय विचार.

॥ नमः श्रीपरमात्मने ॥

अभक्ष्य--अनंतकायविचार.

मंगलाचरण.

जेणे अति दुष्कर एवो तप करी राग द्वेषनो क्षय करी विशाल शिव समृद्धि प्राप्त करी छे एवा निकटोपकारी शासन नायक श्रमण भगवंत श्री महावीर जिनेश्वरने अमे नमस्कार करीए छीए.

जे अष्ट मदनो जय करवा साथे इंद्रियोनुं दमन करवामां तथा उत्तम धर्म ध्यान, शुकल ध्यान, ध्यावामां तत्पर छे एवा श्रीमान मुनियोमां प्रधान गणधर महाराज तथा पूर्वाचार्यो अमारुं मंगल करो !

चौद पूर्वधारी श्री भद्रबाहुस्वामी, स्थूलीभद्रजी, दशपूर्वी श्री-वज्रस्वामी तथा श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणादि निर्ग्रंथ साधुओनुं अमोने शरण होजो !

श्रीमृगावती अने श्रीचंदनबालाप्रमुख साध्वीजीना उत्तम चारित्र, शियल तथा विनयादिक गुणोनुं अमने अनुमोदन अहर्निश हो !

श्रीआणंदजी, श्रीकामदेवजी, श्रीपुणियाजी अने श्री-जीरणजीप्रमुख श्रावकोनां उत्तम द्वादश व्रतो, ज्ञान, दर्शन, चारित्र

ए रत्नत्रयीनी आराधकता तथा दृढ सम्यक्त्वादि उत्तम आचारोनुं अमे शीघ्र अनुकरण करता थइए !

श्रीसुलसा अने रेवतीप्रमुख शियलवती श्राविकाओना दृढ सम्यक्त्वादि सुचरित्रोनुं स्मरण, अनुकरण अमने सदा प्राप्त थाओ !

श्रीजिनशासननी अधिष्ठायिका श्रीसरस्वती देवी सकल सिद्धि आपो !

श्रीमहावीर भगवंतना शासननी रक्षा करवावाळा मातंग यक्ष देवता तथा सिद्धायिका देवीनी स्तुति विघ्नशांति माटे करुं छुं.

श्रीजैनधर्ममां तत्पर सम्यग्दृष्टिदेवनुं स्मरण करीने अभक्ष्य-अंनतकायविचार नामना ग्रंथनो श्रीसूत्र सिद्धांतमांथी उद्धरीने जिनाज्ञानुसारे प्रारम्भ करीए छीए.

श्रावकने उत्सर्ग मार्गे तो प्रासुक आहार लेवो कह्यो छे. जो शक्ति न होय तो सचित्त त्यागी होय, जो ते पण न करी शके तो बावीश अभक्ष्य अने बत्रीश अनंतकायनो तो जरुर त्याग करे.

पंचुंबरि चउ विगई, हिम-विस-करगे अ सव्वमट्टी अ।
राईभोयणगं चिय, बहुबीअ-अणंत¹-संधाणा ॥ १ ॥
घोलवडा वायंगण, अमुणिअनामाइं पुप्फफलाइं ।

---

१. अणंत-बत्रीश अनंतकायनुं वर्णन बावीशमुं दर्शाव्युं छे, बाकीना क्रमवार लख्यां छे.

तुच्छफलं चलिअरसं, वज्जे वज्ज।णे बावीसं ॥ २ ॥

भावार्थ—पांच प्रकारना उंबर फल ५, चार महा विगइ ९, हिम १०, विष ११, करा १२, सर्व प्रकारनी माटी १३, रात्रीभोजन १४, बहुबीज १५, अनंतकाय १६, बोळ अथाणुं १७, घोलवडा १८, वेंगण १९, नाम न जाणीए एवा अजाण्या फूल फळ २०, तुच्छ फळ अने चलित रस २२, ए बावीश वर्जवा योग्य अभक्ष्योने वर्जवा जोइए. १–२.

१ * वडनी पीपु (टेटा), २. पारसपींपलीनी[1] तथा पींपलानी पीपु, ३ प्लक्ष (पींपळनी जाति छे), ४ उंबर (गूलर) नी पीपु, ५ कचुंबर (कालुंवर) नी पीपु, ए पांचे वृक्षना [2]फळमां घणा सूक्ष्म त्रस जीवो होय छे, जेनी गणत्री थइ शकती नथी माटे ते सघळां अभक्ष्य छे, तेथी तेनो त्याग करवो. दुर्भिक्षमां अन्न न मळे तोपण विवेकी पुरुषो पूर्वोक्त फळो खाय नहि.

६ मध; ७ मदिरा; ८ मांस; ९ माखण; ए चारे वस्तुनो जेवो रंग छे तेवाज रंगना तेमां निरंतर असंख्य जीवो उपजे छे, माटे ते अभक्ष्य छे; वळी ते चार महाविगइ अति विकार करवावाळी छे;

---

* आ टेटामां अति सूक्ष्म बीज तथा जीव घणा छे.

१ पींपरनी पेपडीमां सूक्ष्म बीज अने जीव घणां छे.

२ कोइ पण फळमां जेटलां बीज तेटला जीवो वनस्पतिकायना जाणवा. ते बधानी अल्प स्वाद साटे हिंसा करवी ते युक्त नथी.

तेनुं विशेष वर्णन योगशास्त्र, जैन तत्त्वादर्श विगेरेमां दर्शाव्युं छे, जेथी अत्र संक्षेपमां कह्यु छे.

[3]मध—वाघरी लोको मधनां पुडां लावे छे त्यारे प्रथम तेओ ते जग्याए धूमाडो करी मधमाखोओने अत्यंत त्रास उपजावी तेना घरमांथी काढे छे; तेमां नानां बच्चांओ अनेक होय, जेओ उडवाने अशक्त होवाथी तेना प्रिय प्राणथी मुक्त थाय छे. जेम एक माणसे घणा वर्ष पर्यंत अत्यंत परिश्रमथी संग्रहेलुं धन होय ते एक रात्रिमां चोर आवी चोरी जाय त्यारे तेने तथा तेना कुटुंबने केटलुं दुःख थाय ? तेमज आ अनेक जीवोए घणा वखतना करेला परिश्रमथी स्वभक्षण अर्थे तैयार करेलुं मध (तेओनुं मधपोडुं–आनंदी गृह) वाघरी वगेरे अनार्य लोको तेने अत्यंत किलामणा (पराभव–कष्ट) उपजावी चोरी जाय त्यारे तेओने केटलुं दुःख थतुं हशे ? अने तेवा अनार्य लोकोने आपणे उत्तेजन आपीए ते केवुं त्रासजनक ! वळी ते मधमां निरंतर असंख्य जीवो उपजे छे, तेथी तेनो अवश्य त्याग करवो युक्त छे. कोइ रस लंपटताथी मध खाय ए वाततो दूर रही, पण जो औषध माटे मध खाय तो पण ते नरकनुं कारण छे.

---

३ कौंतानुं, भमरीनुं अने माखीनुं एम त्रण प्रकारनुं मध भाष्यकारे वर्णव्युं छे. तेमांनु दरेक मध के जे जीव जंतुनी लाळ छे, ते जूओ तो विष्टादि दुगंछनीय वस्तुथी लावे छे; तेथी ते एकठुं करेलुं एठुं छे, ते भले मीठुं लागे छतां पण पापभीरुए चाखवा जेवुं पण नथी.

जेम प्रमादना उदयथी जीववाने माटे कोइ कालकूट विषनुं कण मात्र भक्षण करे तोपण जरुर प्राणनो नाश थाय, तेम मद्य खावाथी नरक गति प्राप्त थाय; तेथी सर्वथा तेनो त्याग करवा पुराण वगेरे अन्य शास्त्रमां पण कह्युं छे. आत्मशूराओज परना जीवोने स्व समान गणी आवी अभक्ष्य चीजोनो सर्वथा त्याग करे छे, अने महारोग वशे के प्राणान्त कष्टे पण तेनो स्पर्श पण करता नथी, तेओने सहस्र वार धन्य छे! माटे हे बंधुओ! प्रमाद त्यजी आ चीज परिहरवा शूरवीर थाओ.

मदिरा—तेनो सर्वथा त्याग करनारे इंग्रेजी दवा प्रमुख वर्जवुं जोइए, कारण के तेमां प्राय: टिंकचर—[1] स्पीरिट (दारु) आवे छे; वळी

१.—१ द्राक्षासव, २ कुमार्यासव, ३ लोहासव, ए देशी दवा पण एवीज छे, द्राक्ष अने महुडाने सोडवे छे, तेवी सोडनुं नाम आसव छे. शरबतमां पण अभक्ष्यना कारणो विचारवंतो देखी शके छे. २. अनेक जातनो वाइन (दारु) पीनारा व्यसनी छे ते दरेकना बुरा हाल जग जाहेर छे; कोइ जातनो केफ हितकारी नथी. गांजो, लीलागर पण तजवा जोइए. दारु एटले अनेक वस्तुनो सडो करी तेमां त्रस जीवो उपजे ते सुद्धांनो यंत्रथी रस काढी लेवो ते. केटलाएक भोळा जनो कोलनवोटर वापरे छे, पण ते अचित्त नथी अने तेना उपर दारु तरिकेनी मोटी जगात लेवाय छे.

ज्यारे आयुर्वेदना कर्ताए अनार्योनी खातर अभक्ष्य औषधो—चरबी तेल वगेरे बतावेलुं छे त्यारे युनानी हकीमोए आर्यावर्तने

केटलीक पाउडर (भूको-चूर्ण) वाळी दवामां पण अभक्ष्य वस्तुना मिश्रण थायछे; जेथी [२]इंग्रेजी दवानो त्याग करवोज उत्तम छे.

मांस-जे अनेक जीवोने मारीने तैयार करे छे, ते मुख्य त्रणे भेदे अभक्ष्य कहेलुं छे-जळचरनुं-मच्छी वगेरेनुं, स्थळचरनुं-पाडा बकरा हरण गाय घेटां अने ससलां वगेरनुं, अने खेचरनु-चकलां

मांस, इंडा अने मच्छी वगेरे अभक्ष्य पदार्थनो भोग सहेज फरमाव्यो छे, माटे दरेक दवा लेतां आर्य धर्म जाळवनारा थवु जोइए.

इंग्रेजी दवा जेमां अभक्ष्य पदार्थ होय छे तेनी विगत.

१ कॉडलीवर पीलस-दरियाइ माछलीना कलेजाना तेलनी गोळी.

२ स्कॉटइमलशन बॉवरील-बळद अने पाडाना अमुक भागनुं मांस.

३ विरोल गायना मगजनो मांसरस.

४ बीफाइरन वाइन-घेटाना मांस युक्त ब्रांडी.

५ कारतिक लीकवीड-मांस मिश्रित.

६ सरोवान्नी टोनिक-स्पीरीट (मदिरा) युक्त.

७ एक्सटेट मोल्ट-मध अने मांस मिश्रित.

८ एक्सटेट चिकन-कुकडीना बच्चानो रस.

९ वेसेन इन-डुकरकी चरबी.

१० पेपसीन्ट पाउडर-कुतरा अने डुकरनी बे गोळीनो भूको.

कुकडा अने पारेवां वगेरेनुं, ते त्रस पंचेंद्रिय अनेक प्राणीओने शीकार तरीके के धंधा तरीके मरण पमाडीनेज नीपजावेलुं छे-अर्थात् तेओ निरपराधि छतां तेओनो नाश थाय छे. ते प्राणी सघळाए मावा-पना पीआबथीज पेदा थएल छे, माटे क्षत्रियोने मोहमेदनोने पण तजवा योग्य महादुगंछनिक मांस छे.

पुराणमां तेमज कुरानमां तेने अभक्ष्य फरमावेलुं छतां बळ पुष्टी अने जीभना लोलपी तेवुं अखाद्य खाय छे, पण परना प्राण लीधेथी कोइने पोतानुं मोत अळसातुं नथी. जेम आपणने मरवुं गमतुं नथी, बाळबच्चांनो के मावतरनो विजोग पोसातो नथी; तेम दरेक जीव मरण के विजोग इच्छता नथी, माटे जेवुं वर्त्तन पोते बीजा तरफथी इच्छवुं तेवुं वर्त्तन आपणे अन्य दरेक प्राणी प्रत्ये राखवुं, एवी न्याय भरेली दृष्टी राखशो तोज पोतानुं श्रेय थशे.

पवित्रता अने आर्यपणु जे हींदुस्थानमां छे ते मांसाहार तजीने फक्त वनस्पति तथा दुधना खोराकथी ज जळवाय छे, परंतु कोइ रीते (प्रत्यक्ष के परोक्ष) मांस, लोही के चरबीजन्य कोइपण पापमय चीजो खावा पीवाथी जळवातुं नथी; तेमज तंदुरस्ती पण बगडे छे ते अवश्य समजो. राक्षस जेने कहेवाय छे ते मनुष्य सुधां-ने खाय, त्यारे जेनो मांसभक्षण धर्म छे तेने पाप होवानुं बाकी श्युं ?

एकधर्मवाळाए कुकडा, हरण अने माछलां वगेरेना भक्षणथी अनेक प्राणीयो मारवानुं पाप थाय, माटे ते तजवा सारु एक हाथीने मारवाथी घणी मुदत मांस पहोंचे, ज्यां थोडी हिंसा थाय ए

चलाव्युं. जुओ न्याय शुं छे ? हमेशां नरकगामी (माठीगति ज-नारा)ओने सिंह वाघ अने हाथी मारवानुं सूझे छे. जेओ आ जींदगीमां इंद्रनु वाहन तथा गणपतिनी आकृति रूप हाथी जेवा प्राणीनो नाश करे ते अवश्य पापी छे.

खाटकी पोतानो धंधो छतां बकरां घेटां के पाडानु गळुं काप-वानो छरी पोताने हाथे नहीं पण एकाद पैसो आपीने बीजा नीच माणसने हाथे मूकावे छे.

मांसनी अंदर पळे पळे अनेक जीवो (त्रस) उपजे छे, ते मांसने अग्नि उपर पचावतां अने पचाव्या पछी पण उपज्या करे छे. खात्री सारु जुओ मुएला जनावरनुं कलेवर वधारे वखत पडी रहे त्यारे तेमां बारीकरूपे उपजेला होइने ज पछी मोहोटां थतां दृष्टिगो-चर थाय छे. ते सत्य वक्ताये तद्वर्णे (मांसनांज कलरवाळा) कह्या छे. एज परोपकारी नरवीरे सर्व जंतुओने पोतानी समान गणवा माटे परना प्राण बचाववाना हेतुए प्राणीथी नीपजती चीजो मांस, इंडा के मच्छीना तेलवाळी कोइपण वस्तु भोग्य न करवी एम फरमाव्युं छे.

एज हीसाबे श्रीजिनशासनमां पंदर कर्मादान तजवानुं दरेक धर्मिओने अनादि काळथी हमेशने माटे फरमाव्युं छे. केटलाक दगा-खोर लोको घीमां चरबीनो भेग करे छे; विलायती बिस्कुट प्रमु-खमां तेवुं मिश्रण करे छे, तेवी चीजनुं आजे केटलाक भक्षण करे छे, ते खेदजनक छे. तेथी बिस्कुट वगेरे आभडछेटवाळी चीजोनो

स्पर्श पण न करवो. केटलीक इंग्रेजी दवाओ जेम के [1]'कॉडलीवर-ओइल (माछलीनुं तेल) स्कॉट इमलशन, बॅावरील अने मुंबइ[2] प्रमुख, चरबी विगेरे नो भेग करी बनावे छे तेनो अवश्य त्याग करवो जोइए. तन्दुरस्त थवा माटे भक्ष्याभक्ष्यनो विचार कर्या वगर आवी चीजो वापरो छो, पण हे भव्यो ! तेना किंपाक समान बहु माठी गतिनां फळ भोगववां पडशे ते विचारो ! अनादि काळथी तन (पुद्गल) नी संभाळमांज आ जीवे चतुर्गतिमां भ्रमण कर्युं पण मन दुरस्त वगर आत्मानुं कल्याण थवानुं नथी. तेथी जन्म, जरा, मरण, आधि, व्याधि अने उपाधिना दुःखनुं निवारण करवा आवी अभक्ष्य चीजोनो त्याग करो ! धन्य छे वंकचुल राजकुमारने के जेणे प्राणान्ते पण मांसनुं भक्षण कर्युं नहि अने देव गति साधी. क्यारे आपणे तेवा महात्मा पुरुषोनुं अनुकरण करतां शीखीशुं अने शिवसंपदा पामीशुं ?

---

१ कॉडलीवर आइलनी गरज खोपरेलथी सरे छे. जूओ डो॰ त्रीभोवनदासकृत वैद्यक ग्रंथ.

२ मुंबइ नामनी दवा जे माणस तथा जनावरना कलेजामांथी बनावे छे ते तो प्रगटपणे अभक्ष्य छे; तेना बदले शीलाजीत वापरवाथी ते दवानुं काम सरशे.

३ नबळाइना दरद माटे जो तेलनो खप होय तो बदामनुं ताजुं तेल सर्व दवाथी चढीयातुं काम आपे छे.

माखण—जेम दुधने काळांतरे बगडवापणुं थये अभक्ष्य छे, दहींने मेळव्या पछी बे रात्री गये अभक्ष्य छे, अने उंटडी प्रमुखना दुधमां एक मुहूर्तमां जीवात उपजे छे माटे अभक्ष्य छे; त्यारे सघळा सर्वज्ञोए सरखी रीते दर्शावेलुं माखण अभक्ष्यज छे. छाशमां सहज स्वभाविक माखण आवी जवा संभव छे, तेथी विरतिवंते तो ते गाळीने वापरवी; अथवा अजाणता आवी जाय तेनी जयणा राखवी. माखण छाशमांथी बहार काढे के तरतज [१]अंतर्मुहूर्त्तमां सूक्ष्म तद्वर्णा जीव उत्पन्न थाय छे; तेमां शंका करवी उचित नथी; कारण वस्तु मात्र बे प्रकारे सिद्ध थाय छे. एक हेतुगम्य, बीजुं आगमगम्य; माखण तथा द्विदल प्रमुखमां जे जीव उत्पन्न थाय छे ते हेतुगम्य नथी पण आगमगम्य छे. माटे जिनेश्वर भगवंते जे प्ररूप्युं छे ते सत्य मानवुं ज जोइए, जो कोइ पण पुरुष कोइपण शास्त्र न माने अने चक्षुए दीठेली वस्तुज माने तो नरक स्वर्गादि जे अदृश्य छे, तेमज परमेश्वर (सिद्धना जीवो) सातमा के चउदमा राजलोक उपर छे, अने स्वर्ग तथा नरकमां जीवो पुण्य पाप करवाथी जाय छे ते पण मानी शकाशे नहि; तेनी सातमी के आगळनी पेढी हती के केम ते शंका थशे; पण तेम नथी. कारण के केटलीक वस्तु हेतुगम्य होय, अने केटलीक माटे आगमप्रमाण पण

---

१ अहीं जघन्य अंतर्मुहूर्त समजवुं, तेनो काळ नव समय छे. एक सेकन्डमां असंख्याता समय थाय छे, माटे छाशथी जूदुं पडयुं के तरत अभक्ष्य समजवुं.

मानवुं; कारण सर्व वस्तु आपणा जोवामां आवती नथी. माटे माखण प्रमुखमां जे जीवनी उत्पत्ति थाय छे ते आगमगम्यज समजी अरिहंत भगवानना वचनमां किंचित् शंका करवीज नहि. छाशमांथी माखण काढतां तरतज तावडामां चूला उपर मूकी देवुं युक्त छे.

उपरनी चार महा विगइ (मध–मदिरा–मांस–माखण) नो अवश्य त्याग करवो जोइए. प्रभुनी आज्ञा पाळवी तेज धर्म छे.

१०. बरफ, हीम अने करा ए त्रणे चीजमां सरखा दोषनुं कारण छे. अपूकाय (हरेक सचित्त पाणी) नुं एक बिंदु असंख्य जीवमय छे, ते जीवनुं सरसव जेवडुं स्थूळ शरीर होय के थाय तो ते एक बिंदुना जीवो आ लाख जोजनना जंबूद्वीपमां समाय नहीं, एटला सूक्ष्म शरीरे जीवमय पाणी छे, तथापि पाणी विना निर्वाह न थाय माटे जरुर पुरतुं वापरवुं पडे, परंतु घणा पाणीनुं घट्ट कठणपणुं) थवे ते बरफ अने करारूपे देखावमां थोडुं होय छे, तेथी घणा जीवरूप पाणीनुं संक्रमण नानी आकृतिए बन्युं तेटला बहोळी संख्या (असंख्य) ना जीवोनो विनाश आपणा कामे अने अल्प तृप्ति सारु करवा बदले ते चीजो तजीए तो सामटा जीवोने अभयदान अपाय छे.

दाह थतो मटाडवाने चंदन (सुखड) के बरासनुं अथवा खडसलीयानुं विलेपन कराय छे. साकरनुं पाणी, बदाम अथवा सुखड सहित पीवाथी तृषा छीपे छे, केळां पण ठंडी करनार छे.

मलयागरु, सुरोखार, लींबडो, गळोनुं सत्त्व, करीयातु अने बुचकण वगेरे ठंडी अणाहारि चीजो रात्रे पच्चखाण छतां वपराय छे. हिम (बरफ) कुदरती तथा संचाओ प्रमुख साधनोथी बनावे छे ते बन्ने जातनो अभक्ष्य छे; कारण के तेमां पाणीना असंख्य जीव छे; बहु आरंभिक छतां स्वादिष्ट नथी; वळी श्रीतीर्थंकर महाराजे पण निषेध कर्यो छे. आइसक्रीम, आइसवॉटर (बरफनुं पाणी) आइससोडा, कुलफी प्रमुख बरफनी चीजोनो पण त्याग करवो. आइसक्रीम बनाववामां बरफ तथा काचुं मीठुं बेनो आरंभ थाय छे एटले एकेंद्रिय जीवोनी विराधना थवा साथे तेना संचाओनी अंदर रहेलो दूध प्रमुखनो रस ते संचामांथी बराबर लुहीने साफ करवामां न आववाथी तेमां बेइंद्रिय वगेरे जीवोनी उत्पत्ति थवानो पण संभव रहे छे; पण ते जीवो बहु सूक्ष्म होवाथी दृष्टिए पडी शके नहि, अने नवुं दूध प्रमुख पडतां तरतज ते बिचारा विनाश पामे; आवी विराधनानो विचार जिव्हाइंद्रियमां लुब्ध थवाथी अहिंसामय धर्मना आगेवान आपणामांना केटलाक जैनबंधुओ न करतां अनेक जीवोना प्राण लेवाना कारणिक थइ पडे छे. ज्यारे आगल आपणा पूज्य वडिलो सचित्त त्यागी तथा गंठसी–वेढसी प्रमुख सख्त नियमो पाळवामां मशगुलपणे वर्तता त्यारे आजे अनेक बंधुओ रस्तामां हालतां–चालतां, हॉटलो–विश्रांतिगृह (विश्रांति नहि पण खरेखर विनाशकारीगृह) वगेरेमां भक्ष्याभक्ष्य अने स्पर्शास्पर्शनां मलीन दोषनो विचार न करतां, तेमज परभवनो पण (आ भवमां गुरु वडिल के

ज्ञातिनो भय तो क्यांथीज होय?) भय नहि राखतां स्वच्छंदपणे निध्वँस परिणामे आवी तुच्छ वस्तुओथी स्व मनकामनाओ तृप्त करी स्वआत्माओने मलिन—भ्रष्ट करे छे. अफसोस! आ केवुं खेदजनक! बंधुओ! परना जीवोने थती वेदनानो सहजमात्र विचार आपना कुमला मगज उपर लावी, आवी तुच्छ—असार वस्तुओनो सदंतर त्याग करो! !त्याग करो!! बगडतुं वातावरण सुधारो!

११. विष—अफीण, सोमल, वच्छनाग, हरताल, मीठा, तेलीया, संखीया प्रमुख चीजो अभक्ष्य छे. कारण के ते खावाथी पेटना कृमि आदिक जीवनो नाश थाय, शरीर शिथिल थाय अने परवशता थाय, माटे विषभक्षण कोइ शोखथी के बळपुष्टि अर्थे न करवुं, औषध तरिके छूट रखाय छे. जुओ, व्यसनी माणसना हाल शा शा थाय छे? तथा अवसरे अमल न मले तो चेतना मुंझाय, क्रोध मिजाज वधे, अने ते वस्तु खानारो ज्यां मल—मूत्र करे ते क्षेत्रमां त्रस स्थावर जीवनी हिंसा थाय. आवी वस्तु खाइने आपघात करवाथी परभवे नरकादि नीच गति प्राप्त थाय, माटे विष व्यसन के आपघात करवामां वापरवुंज नहि; तेम तेनो व्यापार पण करवो नहि. राज्यकर्ताओ पण विषव्यापारनी सनंदो तेनी हद राखवा माटे आपे छे. एवुं कारण जाणनारा सर्वज्ञ गुरुओए पंदर कर्मादान तजवामां विषव्यापारने निषेध्यो छे, केमके तेना व्यापारथी अनेक अनर्थ नीपजे छे. माताओ बच्चांओने बाळागोळीनुं अमल आपे छे, जेमां अफीण आवे छे, पण ते व्यसनथी बच्चांओने फायदो नथी, पण उलटुं

नुकशान करे छे. अने कोइ वेळा भूलथी बाळागोळी ठेकाणासर न मूकायाथी अने बाळकना हाथमां आववाथी वधारे प्रमाणमां खाइ जाय छे तो मृत्यु पण पामे छे. जेथी सुज्ञ माताए आवी झेरी के अभक्ष्य वस्तुओनां अमल आपवां नहि, तेने माटे तो देशी वैद्य-कृत गुटिका बस छे.

१२. करा—मेघ (वरसाद) ना करा जे आकाशमांथी पडे, छे. तेमां पण बरफना जेवो महा दोष[1] छे; जिनआज्ञा विरुद्ध छे तेथी वर्जवा.

१३. भूमिकाय (पृथ्विकाय)—सर्व जातनी माटी; खडी, भूतडो (सराकडो), खारो, काचु मीठुं प्रमुख अभक्ष्य छे, कारण के तेमां असंख्य जीव छे. माटी मीठुं एमां दोषनुं पहेलुं कारण जुओ, प्रत्येकवनस्पतिकायमां एक शरीरे (पान, फुल, फळ, बीजमां) एकेकां जीव छे, पण एक लीलां आमळाप्रमाण पृथ्वीकायमां जेटला जीव छे ते दरेक जीव कबुतरना जेवडुं शरीर करे तो तेटला जीवो आ लाख जोजन गोळाकृति जंबूद्वीपमां समाय नहीं. एवी बहोळी संख्याना छतां अल्प शरीरे छे. तेनो विनाश

---

१. जेम काचु फळ के उगतुं धान्य खावाथी मीणो चडे छे, अने गर्भिणी स्त्रीने काचो गर्भ पडी जाय त्यारे सुवावडमां खावानी घीइ वगेरे उत्तम चीजोना बदले ते कसुवावडमां तेल चोळा कळथी अने बाजरीनो लुखो रोटलो वगेरे खावु पडे छे, तेम काचा वरसादनुं स्व-रूप कुदरत विरुद्ध होवाथी अभक्ष्य छे.

करीने अल्पतृप्ति लेवानुं थवा बदले तेवी चीजो तजी तेवा सामटा जीवने अभयदान देवुं योग्य छे, अने तेथी आपणने मरी जवाशे नही. ए चीजोना बदले बीजी चीजो घणी अचेतन मळी शके छे. ते खारो तथा भुतडो नाहावा धोवाने वपराय तेना बदले सोडाखार, आमळां, कंकोडी; साबु, अरीठां एसीड मोजुद छे.

गर्भिणी स्त्री जेने भुतडो खावानुं सूझे ते गर्भने व्याधि, विनाश अने नुकशानकारी छे.

पापड के साळीयां बनाववा माटे खारो वापरवाने बदले साजीखार, सोडाखार घणा उपयोगी छे.

खडी के राती माटीने बदले चाक चूनो गेरु मळे तेम छे. माटी खावाथी पेटमां असंख्य जीवनी उत्पति थाय छे; तथा पांडुरोग, आमवात, पित्त पथरी रोग थाय छे. तथा केटलीक जातनी माटी देडकां विगेरे संमूर्छिम जीवोनी योनिरूप होय छे तेथी पण ते अभक्ष्य छे; माटे तेनो अवश्य त्याग करवो. पण अनाजमां कांकरो खावामां आवी जाय के पाणीमां धुलरज उडीने पडे, तेमज शाक भाजीमां चोंटेली माटी होय तेथी काची माटीनो बाधानो भंग थतो नथी, छतां तेनी जयणा राखवी

काचुं सचित्त मीठुं श्रावके वर्जवुं अने अचित्त वापरवुं. पृथ्वीमांथी खाण खोदतां तथा कोइ पहाडना शीखररूपे अने समुद्रना पाणीथी आगरमां जमावेलुं एवुं सर्व वडागरु, घशायुं, खारो, लाल सिंधव वगेरे अनेक क्षार अने अग्नि शस्त्र न लाग्युं होय, त्यां सुधी

'सचित्त' छे; तेवुं सर्व मीठुं दरेक जैनोए श्रद्धाथी तजवा योग्य छे. गृहस्थीओने जो अचित्त करेलुं वेचाती मळे नहीं तो स्वय जेटलुं अचित्त करावे छे. दाळशाकमां तो सचित्तनुं अचित्त थइ जाय छे, पण अथाणामां, मशालामां, मुख्य वासमां अने औषधमां अचित्त मीठुं वापरी शकाशे.

अणाहारीमां गणेला सुरोखार, साजीखार, टंकणखार अने फटकडी तो अचित्तज छे. अचित्त मीठुं जुदी जुदी रीते थाय छे. एक तो माटीना वासणमां मीठुं भरी उपर मजबुत पेक करी कुंभारनी अगर कंदोइनी भट्ठीमां[1] मूकवाथी बरोबर अचित्त थाय; ते मुजब अचित्त करेलुं मीठुं बे चार वर्ष के तेथी वधारे वखत सुधी सचित्त थतुं नथी. श्रावको स्वघेर एक शेर मीठुं खांडीने दळीने आशरे बेशेर पाणीमां पलाळी ते एक रस थइ जाय त्यारे ते रस गाळीने चूला उपर जेम साकरखांडनुं बुरुं बनावे छे तेम शेकी नांखे छे; आ प्रमाणे बनावेलुं मीठुं अचित्त बरोबर थाय, पण पाणीना संयोगे रस कर्यो छे माटे बे चार मासे सचित्त थवानो संभव छे;

---

१. मीठुं कुंभारने त्यां अचित्त करवा माटे आपवानी प्रवृत्ति गुजरातमां पाटण शहेरमां छे, जे कुमारपाल राजाना वखतथी चाली आवे छे एम कहेवाय छे. तथा दातणनी चीर पण तैयार वेचाती मळे छे. वळी मीठुं पण अचित्त मळे छे, जे अमदावादना केटलाक श्रावको मंगावे छे. तथा खारो तो कंदोइ (हलवाइ) नी पेढीमां अचित्त मळे छे.

भठ्ठीना पाकेला बलमण जेटलो काळ तेनो संभवे नहि, कारण के भठ्ठीमां शेकेलुं मीठुं ज गळी पाणीरूप थइ ढेफुं बंधाय छे. तावडी के [1]लोढी उपर शेके छे पण ते लाल रंग जेवुं थाय तेवुं आकरुं शेकेलुं थये अचित्त थाय, कारण के मीठानी योनि बहु सूक्ष्म छे तेथी तेने अग्निनुं बरोबर शस्त्र लागे त्यारेज अचित्त थाय. मुनिराज श्रीवीर विमलजी महाराज सचित्त अचित्तनी सज्झायमां लखे छे के:—

अचितलवण वर्षा दिन सात, सीयाले दिन पन्नर विख्यात;
मास दिवस उन्हाला मांहि, आघो रह्ये सचित ते थाय॥८॥

एटले अचित्त करेलुं मीठुं वर्षा ऋतुमां सात दिवस, शीयालामां पन्नर दिवस अने उन्हालामां एक मास सुधी अचित्त रहे, ते पछी

---

१ काठीयावाडमां केटलाएक आयंबील, एकासणा प्रमुखमां अचित्त मीठुं वापरवा माटे तावडी उपर के वाटकामां सचित्त मीठुं नांखी चूला उपर थोडी वारमां शेकी उपयोग करे छे. तेओए अवश्य समजवुं के मीठानी योनि एटली बधी सूक्ष्म छे, जे माटे शास्त्रकारे श्री भगवती सूत्रना १९ मा शतकना त्रीजा उद्देशामां फरमावेलुं छे के चक्रवर्तिनी दासी वज्रमयी शीला उपर वज्रना लिसोटाथी मीठुं एकवीश वार वाटे तोपण तेमांना केटलाएक जीवोने कांइ असर थती नथी. जेथी अग्निनुं शस्त्र बरोबर लागवाथीज अचित्त थाय, अन्यथा शंकाशील जाणवुं. अचित्त मीठुं काढती वखत कोरा हाथ करीने काढवुं, नहितर सचित्त पाणीनुं एक टीपुं मात्र पडवाथी ते मीठामां मळी जतां सचित्त थइ जाय छे, तेनुं बहु ध्यान राखवुं.

ते सचित्त थाय. ए काळमाननी विगत जोतां घरमांज तावडी ठीब लोढी–तवामां शेकीने करेला अचित्त मीठानो आटलो काळ संभवे छे. केमके भठीमां पाकेला बलमणनो काळ तो प्रवचनसारोद्धार वगेरेमां घणो मोटो (प्रभूत) कह्यो छे. बे चार वर्ष के ते उपरांत सुधी अचित्त रहे, अर्थात् तेनो काळ घणोज समजवो. श्रावक मूळभांगे सचित्त परिहारी होय, तेथी प्रमाद त्यजी सचित्त सर्वनो त्याग करवो; तेमां पण सचित्त मीठुं तो अवश्य वर्जवुं.

१४. *रात्रिभोजन–आ भव तथा परभवने विषे महादुःखनुं कारण छे. रात्रिए चारे आहार अभक्ष्य छे. रात्रिभोजन

---

* आ दुनियामां आहार, भय, परिग्रह अने मैथुन ए चारे संज्ञा सर्व जीवोने छे. चार गतिमां देव देवीओने तो कोइ व्रत पचखाणनो उदय नथी, तेथी तेओ पाछला भवनी कमाणी भोगवीने पछी प्रायः खाली हाथे परभव जनारा. तथा नरकगतिमां जीवो एकलुं दुःखज भोगवे छे; तेमज तेओने दिवस के रात्रिनो देखाव नथी, त्यहां व्रत नियमनुं पाळवुं के तेनुं रळवापणुं नथी, अने तिर्यंचगतिमां पशुपणुं सर्व विवेकहीन (माता पुत्रनी व्यवस्था रहीत) होवाथी दिवसनुं के रात्रिनुं भान नथी, खावुं पीवुं प्राय पराधीन छे. फक्त मनुष्य गतिमां जेओने साचां शास्त्रनो भरूसो छे, ते पैकीना भव्यो रात्रिभोजनना पारावार दोषने समजे छे, एटले मनुष्यनुं ज कर्तव्य करो, त्याग एटले दान अर्थात् अभयदान जेनुं फळ शिव छे ते तमे मेळवो. अढार पाप स्थानकमां पहेलुं प्राणिवध तजवानुं, पछी बीजा

करनारा परभवे उल्लूक, काग, गीध, भूंड, वींछी, घो, मंझार, मूषक, सर्प, वागुल, चामांचीडीया विगेरेना भव पामे, महा दुःखी थाय

तजे; अथवा तो पहेलुं प्राणातिपात विरमण व्रत पाळवाने अर्थे बीजां ते व्रतनी संभाळ माटे क्षेत्रनी वाडरूपे जरूरनां छे, त्यारे कोइ प्राणीनो घात आपणे निमित्ते थवा न देवो एवुं सदूवर्तन राखवानी खातर " रात्रि भोजन " नो चार प्रकारे त्याग सर्वज्ञ सर्वदर्शिओए परोपकार अर्थे अनेक शास्त्रद्वारा फरमाव्यो छे, अने साधु मुनिराजे रात्रि भोजन सर्वथा तजीने ते हुकमने पांच महाव्रत जोडे छठ्ठां व्रत तरीके पाळवाने वधावी लीधो छे.

बीजा जीवोने पण कान, आंख, नाक, मोढुं वगेरे मनुष्योनी पेठे छे, त्यारे फक्त विवेकथी सदूवर्तन एज धर्म वस्तु मनुष्योने वधारे छे, पण अनादिकाळथी खाउं खाउं करता आवेलो जीव तृष्णा छोडे नहि त्यां सुधी संतोष–सुख पामतो नथी.

सूर्य छतां वातावरण सुधरे, ते वातावरण रात्रे बगडे छे, तेवा बगाड समये खावुं पीवुं जे करे ते राक्षस अने भूत प्रेत सदृश छे, तेओने निशाचर (रात्रे चारो लेनारा घुअड तथा बीलाडी जेवा) कहेवाय छे. खोराक बनावतां झेरी जीवोनी लाळ पडती न देखाय तेवा झेर मीश्रित आहारे मोत नीपजे छे. जेम कोइने मारीने भागी जवुं ते अन्याय छे, तेम खाइने सुइ जवुं पण दुर्न्याय छे. माटे एकवार अने सूर्य छतां जमवानुं वेदपुराणमां कहेलुं तेनो ऊंधो अर्थ ब-

अने धर्म पामवो दुर्लभ थाय. पोते रात्रि भोजन करे तो तेना पुत्रादिक पण तेवी कुचाले वर्ते. वळी कीडी भोजनमां खावामां आवे तो बुद्धि मंद करे छे, जू जलोदर करे छे, माखी वमन करावे, मकडी[1] कुष्ट रोग करे, अरुवेरी प्रमुख कांटा तथा काष्टना टुकडा, वडां वगेरे के तेना सदृश रूपवाळा शाक भाजीमां वींछी आवी जाय तो ताळवुं वींधे, अने वाळ आवे तो गळामां अति पीडा करे इत्यादिक रात्रिभोजनना दोष छे. उत्तम पशु पंखी पण रात्रि भोजन करता नथी माटे रात्रि भोजन [2]वर्जवुं, अने दिवस छतां पण अंधारामां

तावीने बीजी आज्ञा लोपे छे. कीडी, कुंथु, जु, इली, उधेइ, मच्छर वगेरे झीणा मोटा जीवनो घात रात्रे खावा पीवाथी थाय छे, ते काम आर्यने छाजतुं नथी.

ज्यारे माग्युं न मळे त्यारे अने जोगवाइ न होय त्यारे के मांदगीथी अने लंघनथी भुख्यो रहे तो रात्रि भोजनना त्यागनुं फळ नथी, पण छती शक्ति अने छता जोगे त्याग भावे इच्छा रुंधे तो रात्रि भोजन तजवानुं दररोज अरधा उपवास प्रमाणे महाफळ थाय छे.

१ करोळीयो.

२ पुराण आदि हिंदु शास्त्रोमां पण रात्रीभोजननुं महापाप कहेलुं छे अने एज कारणथी सूर्य छतां एक वखत भोजन करवानुं फरमान करेलुं छे.

श्रीनिशीथसूत्रनी चूर्णिमां पण कहेलुं छे के हेड गरोळी-

सांकडा वासणमां जमवुं ते पण तेवुंज दोषित छे. दिवसे बनावेलुं भोजन रात्रिए खावुं, रात्रिए बनावेलुं रात्रिए खावुं, रात्रिए बनावेलुं दिवसे खावुं ए त्रणे भांगा अशुद्ध छे. फक्त दिवसे यतना पूर्वक

नो अवयव रात्रिए जमवामां आवे तो जरुर पेटमां गरोळी जेवां जीवडां उपजे, अने सर्पादि लाळ पडेल होय तो मोत नीपजावे छे. उंदर वगेरेनी लींडी के मूत्रथी महा व्याधि थाय छे; तेमज व्यंतर पण छळे छे.

तेज निशीथ सूत्रना भाष्यमां लेख छे के, जो रात्रे फासु चीज (तैयार लाडु पेडा खजुर द्राक्षादि) खाय तो पण तेनाथी दीवो के चंद्रनु प्रकाश छतां कुंथु तथा पंचवर्णी (ते ते चीजने रंगे) लील फुगी प्रमुखनी विराधना थाय माटे अनाचरणीय छे. मूळ व्रतनो विराधक थाय.

स्कंदपुराणमां रात्रे पाणीने लोही जेवुं तथा अनाजने मांसना कवळ जेवुं कीधेलुं छे.

रुद्रे कपाळमोचनस्तोत्रमां रात्रे न खाय तेने तीर्थ यात्रानु फळ कहेलुं छे. तथा दान, स्नान, श्राद्ध, पूजा, आहुति अने भोजन एटला वानानी रात्रे मनाइज करी छे.

आयुर्वेदमां हृदय अने नाभि कमळनुं मींचाइ जवुं रात्रे होय, तेथी तेमां कोइ (चार प्रकारे) आहार न करवो एम कहेलुं छे.

योगशास्त्रे सांझे तथा सवारे बे बे घडी सूर्य छतां पण रात्रि तरीके खान पान तजवानुं महा पुण्य थवुं कहेल छे.

बनावेलुं भोजन दिवसे खावुं तेज शुद्ध छे. मुख्यताए सूर्यास्त पहेलां तथा सूर्योदय पछीनी बे घडी सुधी पण आहार वर्जवो. तथा लग-भग वेळा एटले सूर्य छतां पण अत्यंत सूर्य अस्तामणनी नजीक आवी जाय, जेम के सूर्य कांइक जणाय अने कांइक नहि एम भ्रम पडती वखते पण भोजन अवश्य वर्जवुं. संपूर्ण सूर्य छतां चौविहार-ना नियमवाळा विरतिवंत भाग्यशाळीए छेवट सूर्य अस्त थया पहेलां पांच दश मिनिटे वापरी लेवुं जोइए;[1] तिविहार, दुविहारना पण नियम लेनारे ते मुजब भोजन करी लेवुं जोइए, अन्यथा सहसा दोष लागी जवा संभव छे. एक मास पर्यंत दररोज चौविहार करनार भव्यने पंदर उपवासनुं फळ शास्त्रकारे कह्युं छे, ने अनुक्रमे ते मोक्ष-वधूने वरे ए निःसंदेह छे. वळी जेओ चौविहार[2] करवाने अशक्त

---

१ रात्रे जमवा साथे जो पाणी भरेली थाळो जोडे मूकशो तो तेमां जेटला जंतु पडेला जुओ-जाणो तेटलानुं मांसाहार कर्युं जाणी वर्जवुं.

२ श्राद्धविधिमां उत्सर्ग मार्गे दिवसेज 'दिवस चरिम' पच्चखाण करवुं, पण अपवादे तो रात्रीए पण करवानुं कह्युं छे. योग-शास्त्रादिकमां 'दिवसचरिमं' शब्दनो अर्थ अहोरात्रीनो शेष-बाकी रहेलो काळ एम अर्थ करेल छे. तेथी रात्रे 'दिवसचरिमं' न थाय एम एकांत नहि, पण चीवट राखी दिवसेज करवुं उचित छे. चो-विहार तिविहार अथवा दुविहारनुं पच्चक्खाण करवानो दरेक जैने नानपणथीज अभ्यास पाडवो जोइए.

होय तेणे यथाशक्ति तिविहार, दुविहार तो अवश्य करवोज जोइए. रात्रिए पाणी रुधिर समान अने भोजन मांस समान छे एम अन्य-मतिना शास्त्रमां पण कह्युं छे. एक इटालीयन कवितानो अर्थ नीचे मुजब थाय छेः—

पांच वागे उठवुं, अने नव वागे जमवुं;
पांच वागे वालु, अने नव वागे सुवुं;
एथी नेवुंने नव, वरस जीवाय छे.

अर्थात् रात्रिभोजन परिहरवामां धार्मिक साथे शारीरिक लाभ पण घणो समायेलो छे, अने उभयलोकमां ते सुखकारी छे; माटेज दश दृष्टांते दुर्लभ एवो आ मनुष्य जन्म तेमां पण रत्नचिंतामणि रूपी जैनधर्म पुण्य उदये प्राप्त थयो तो आत्मानुं कल्याण करवा प्र-माद त्यजी रात्रिभोजनने देशवटो देवो के जेथी चोराशी लाख जीवयोनिमांथी मुक्त थइ अजरामर सुख पामीए. पुत्रादिक उपर ममताने लीधे रात्रिभोजन करावvुं ते पण ठीक नहि. पण जो तेओ रात्रे आहार मागे तो तेना खरा हित अर्थे रात्रि भोजनना दोष स-मजावी तेओने पण सुधारवा; वळी जेओ पोतेज रात्रिना आहार, अथवा तो दूध चा, कॉफी, कावो प्रमुख लेवाना भोगी होय, तेओ ज्यारे उत्तम सामग्री पामे छते स्ववशे मनने दृढ करी सकामनिर्जरा करता नथी, तो जे वखत तेना किंपाक समान फळो जेवां के—नार-कीमां सीसाना धगधगता रसो पीवानां, तिर्यंचमां भुख, तृषानी

वेदना, तथा परवशे चाबुक परोणा वगेरेना मार पडे ते सहन करवानां उदयमां आवशे त्यारे पश्चात्ताप थशे के हा ! इति खेदे में पूर्वे बहु अनाचार सेव्यो ! माटे हे भव्यो ! हजु चेतो, ने रात्रिभोजनथी विरमो के जेथी शिवसमृद्धि वेगे संपादन थाय.

१५. बहुबीज—जे फलोमां बीजे बीजने अंतर होय नहि, अर्थात् बीजे बीज अडेलां होय एवी रीते जे फलादिकमां बीज रहेलां होय, जेमां गर्भ थोडो ने बीज घणां होय, जेना जुदा जुदा खानां (स्थान) बीज रहेवानां नथी ते बहुबीज जाणवां. कोठीबडा, टींबरुं, करमदां (बीज थया अगाउ अनंतकाय), रींगणा, खसखस, राजगरो, पंपोटा, पटोल प्रमुखमां जेटलां बीज छे तेटला तेमां पर्याप्त जीव छे, तेथी त्याग करवो; जेथी खावामां थोडुं आवे छे अने जीव हिंसा घणीज थाय छे; माटे बहुबीजवाळी चीजोनो सर्वथा त्याग करवो श्रेष्ठ छे. बहुबीज फल खावाथी पित्त प्रमुख रोगनां कारण थाय छे, तथा जिनआज्ञा विरुद्ध छे. दाडम तथा टींडोरां अभक्ष्य नथी.

१६. संधाणा शब्दे बोळ अथाणुं. ते अनेक वनस्पतिओनुं करे छे, जेमके. आंबवेली, पाडल, लींबु, केरी, गुंदा, केरड, करमदां, काकडी, डाळां, गुवार, लीलां मरी, चीभडां, मरचां प्रमुख अथाणुं त्रण दिवस उपरांत अभक्ष्य छे. ए सर्व अथाणां तुच्छ अने त्रस जीवनी खाण छे. कंदमूळ (आदु, हळदर, गरमर, गाजर, कुंवार अने सोथ) के जे अनंतकाय छे ते वस्तु, तथा पंचुंबर, बहुबीज अने बीलां

बीली, लीलो वांस के तेना जेवी प्रथमथी अभक्ष्यरूपे गणाती चीजोनुं अथाणुं पण नज कराय. चोथे दिवसे तेमां निश्चय बे इंद्रिय जीव उपजे, अने एठे हाथे स्पर्श करे तो पंचेंद्रिय समूर्छिम जीवो उपजे. लीलां तीखां (मरी) जे मलबारथी मीठानां पाणीमां आथीने अहिं आवे छे ते बोळ अथाणुंज छे, तेथी ते अवश्य वर्जवां. तेने अहीं आवतां घणा दिवस लागे तेथी ते बोळ अथाणुंज होय छे.

अन्य दर्शनीयोना शास्त्रमां पण बोळ अथाणुं नरकद्वार तुल्य गण्युं छे, ते माटे तेनो सर्वथा त्याग करवो जोइए, जे फळमां खटाश छे ते, अथवा तेवी वस्तुमां भेळवेलुं होय ते अथाणुं त्रण दिवस उपरांत अभक्ष्य, पण जो केरी लींबु प्रमुखनी साथे नहिं भेळवेलुं, जेमके गुवार, गुंदां, डाळां, चीभडां, मरचां प्रमुखनुं अथाणुं के जेमां खटाइ नथी ते तो एक रात्रि वीत्ये एटले बीजेज दिवसे अभक्ष्य थाय. केरी के लींबुनी साथे आथ्युं होय तो त्रण दिवस खावामां बाधक नथी. पण जो तेमां शेकेली मेथी नांखी होय तो बीजेज दिवस वाशी थवाथी अभक्ष्य छे. कारण के मेथी धान्य छे, तेथी मेथी के आटो दाळीया नांखेल होय तो तेज दिवस वपराय. वळी जे अथाणामां मेथी नांखी होय ते काचां गोरस साथे खवाय नहि. केरी, गुंदां, खारेक, मरचां प्रमुखनुं सुकवेलुं अथाणुं बनावे छे ते पण तडका बरोबर न देवाया होय अने लीलाश रहेवाथी वाळ्युं वळी शकतुं होय तो तेवुं अथाणुं पण त्रण दिवस उपरांत अभक्ष्य थाय. त्रण तडका देवा तेवुं कांइ नथी पण ज्यां सुधी बंगडी जेवुं सुकाय

त्यां सुधी पांच सात के वधारे दिवस पण तडका देवा जोइए. ते मुजब सुकव्या बाद राइ गोळ चडावे, अने तेलबुड[1] होय तो तेवुं अथाणुं वर्ण–गंध–रस–स्पर्श फरे नहि त्यां सुधी भक्ष्य संभवे छे; पण तेल ओछुं होय तो वेळासर बगडी अभक्ष्य थाय. हवे आ प्रमाणे उपयोग पूर्वक करेलां अथाणां माटे पछी पण बहु उपयोग तथा काळजी राखवी जोइए.

(१) अथाणानी बरणीओ खुब गरम पाणीथी साफ करी लुहीने कोरी कर्या बाद भरवुं जोइए.

(२) ते बरणी उपर सख्त ढांकणुं मूकी कपडाथी मजबुत बांधवुं; तेमां हवानो प्रवेश न थवो जोइए, नहिंतर चोमासामां हवा लागवाथी लीलफुग थवाथी अभक्ष्य थाय.

(३) अथाणुं नोकर चाकर के बाळबच्चां पासे कढाववुं नहिं, पण घरना उपयोगवंत माणसे जाते हाथ स्वच्छ करीने कोरा कर्या बाद चमचावती अगर बीजा कोइ साधनवडे काढवुं, पण बनतां सुधी हाथ बोळी (नांखी) ने काढवुं नहि; वळी पाणीवाळा हाथ कोरा कर्या पछीज काढवुं, नहितर तेमां पाणीनुं फक्त एकज टीपुं पडवाथी जीवोत्पत्ति थाय, माटे आ बाबत खास उपयोग राखवो.

---

१ अथाणामां ते चीज उपर (डुबती रहे तेवुं) तेल के सरसीयुं नांखेल होय ते.

(४) अथाणानी बरणी उपर कीडी, मकोडा प्रमुख जीव न चडे तेवा स्थानके राखवुं, तथा चोमासामां हवा न लागे तेवी जग्याए राखवुं, केटलाक अथाणां मुरब्बा प्रमुख अंधारामां राखे छे अने तेनो रस प्रमुख पडवाथी ने साफ न थवाथी ते जग्याओ चीकाशवाळी ने गंदी थवाथी त्यां मच्छरादि जीवो थाय छे; अने अंधाराने लीधे काढतां करतां ते बिचारा जीवो ते बरणीओमां पडवाथी काळवश थाय छे, पछी पेटमां पण आवे; तो ज्यां सारुं अजवाळुं पडी शकतुं होय त्यां तथा सारी जग्याए राखवुं.

(५) सूकवती वेळाए जेवुं तेवुं सूकव्युं होय तो ते अथाणां त्रण दिवसथी वधारे उपयोगमां न लेवाय; माटे उपर कह्या मुजब सूकववुं जोइए; तथा अथाणां करती वखते पाणीनो किंचित् स्पर्श मात्र पण थवो न जोइए.

(६) वळी आ अथाणाओ वरस के तेथी वधारे मुदत पण राखी मूकाय छे, पण तेम न करतां जेम बने तेम थोडा वखतमां ज वापरी नांखवा जोइए.

उपर लखेल सूचना अनुसार अथाणुं करी वपरातुं होय तोपण दोष लागे के नहि ते पण केवळीगम्य. पण आज आपणे प्रथम तो रसइंद्रियना लालचुओ ते मुजब सूकवीएज नहि; कारण पछी तेमांथी स्वादनी लहेजत मळवी मुश्केल, अने उपरनी सूचनाओ मुजब करवा-वर्तवावाळा भाग्ये कोइ विरला होय. उपरना तुच्छ अथाणाओनो

खरेखर जिह्वाइंद्रियनो जय करनारा रत्नशिरोमणि वीरपुत्रोज त्याग करे छे, अने तेज खरेखर प्रशंसनीय छे; कारण आ जीवे अनंतीवार दरेक चीजो खाइने वमन कर्युं तोपण तृष्णा जती नथी ते आश्चर्य ज छे! अणाहारी थया शिवाय कोइ मोक्षे गया नथी, जता नथी ने जशे पण नहि; तो क्रमे क्रमे आवी तुच्छ अभक्ष्य वस्तुपरथी ममत्व भाव उठाडवो के जेथी सदाने माटे अणाहारी पद प्राप्त थाय.

१७. घोलवडां शब्दे द्विदल जे विदल—कठोळ निःस्नेह *छतां दाळ थइ शके एवा होय, बे सरखी फाड थाय, जेमां चीकणाश न होय, अने घाणीमां पीलवाथी तेल न नीकळे ते तथा तेनां सुकां के लीलां पत्र अने ते शिवाय पण जे तेल विनाना होय अने जेनी बे दाल थती होय, पण ते वृक्षनुं फल न होय; जेमके सांगरी (वृक्षनुं फल छे तेथी द्विदल नहि) प्रमुख वृक्ष फल शिवाय सर्वे द्विदल जाणवा; जेमके चणा, मग, मठ, अडद, तुवेर, वाल, चोळा, कळथी, मटर (वटाणा), लांग, गुवार, मेथी अने मसुर प्रमुख कठोल तथा तेना लीलवा, तेनी दाळ, लोट तथा मेथी भाजी विगेरे द्विदल छे. तेनी साथे काचां गोरस (दूध–दहि के छाश) नो संयोग थतांज तत्काळ बेइंद्रिय जीव उपजे. छाश, दूध, दहि खुब गरम करी अथवा गरम कर्या पछी ठंडा पाडीने विदल साथे मेलवे तो दोष नथी. मेथी, गुवार, कठोल मात्रनां पांदडानी भाजी, वालोळ, तुवेरा, चोळाफळी, मगनी फळी, गुवारनी फळो, वटाणानी फळी,

* तेल नीकळी शके नहि ते.

लीला चणा, पांदडी वगेरेनुं शाक, सुकवणी, संभारो, अथाणुं के दाळ, बुंदी, कळी (सेव), गांठीआ प्रमुख तळेलुं जे कांइ होय तेनी साथे तथा मग, अडद चोळा प्रमुख कठोळना पापड, वडी प्रमुखनी चीजो साथे, तथा मेथी नांखेल अथाणां साथे काचां गोरस (दूध–दहि–छाश) नो संयोग न थवो जोइए. घोलवडां (दहींवडां) ते द्विदल छे पण ते घोलवडां जो उकाळेला गोरसमां कर्यां होय तो तेज दिवस भक्ष्य, काचा गोरसना अभक्ष्य छे. राइ तथा सरसव द्विदल नथी, कारण तेमां तेल छे. शिखंडनी साथे पण द्विदलनो स्पर्श न करवो. स्पर्श दोष टाळवा द्राक्ष, केळा, खारेक वगेरेनुं राइतुं पण गोरस उनुं कर्या पछीज बनाववुं जोइए. घउं बाजराना रोटली रोटला साथे काचुं गोरस खावुं होय तो द्विदलवाळुं वासण हाथ तथा मुख वगेरेनी शुद्धि कर्या पछी वापरवुं. अथवा जो प्रथम काचुं गोरस खाधुं होय तो ते वासण हाथ मुख वगेरेनी बरोबर शुद्धि कर्या पछी विदल वापरवुं. अर्थात् कोइ पण राते किंचित् पण विदल ने काचां गोरसनो अन्योन्य संयोग न थवो जोइए. कढी, राइतुं, दहिंवडी, ढाकलीयो, शाक, दाळ जेमां गोरस नांखवुं होय ते) विगेरै करतां पहेलां छाश के दहि हवा उडाववा जेवां गरम केटलाक करै छे पण तेम करवा करतां छाश दहिमां मीठुं (निमक) अथवा बाजरानो लोट नांखी सारी रीते गरम थतां सुधी हलाव्या करवाथी छाश फाटी जशे नहि, माटे सारी रीते उकाळवुं जोइए; परंतु लगार गरम थयुं (सामान्य वराळ नीकळे)

ते उकाळेलुं गोरस कहेवाय नहि. शास्त्रोमां उकाळेलुं गोरस एम लखे छे. श्री जिनदत्तसूरि महाराज विरचित संदेहदोलावलीमां आ प्रमाणे गाथा छे; " उक्कालियंमि तक्के विदलक्खेवे वि नत्थि तद्दोसो" इत्यादि पूर्वोक्त गाथानो अर्थ वाचनाचार्य प्रबोधचंद्र विरचित विधिरत्नकरंडिका नामा नानी टीकामां आवी रीते कर्यो छे—

" उत्कालिते ऽग्निनाऽत्युष्णीकृते तक्रे गोरसे उपलक्षणाद्दध्यादौ च द्विदलं–मुद्गादिस्तस्य क्षेपो द्विदलक्षेपस्तस्मिन्नपि सति, किं पुनर्द्विदल भक्षणानंतरं प्रलेहादिपाने इत्यपेरर्थः, नास्ति तद्दोषो द्विदलदोषो जीवविराधनारूपः।"

इत्यादि—ए पाठमां पण साफ लखेल छे के " अग्निवडे अति उष्ण गोरस–छाश उपलक्षणथी दहीं आदि शब्दे दुधमां द्विदल पडवाथी विदलनो जे दोष छे ते लागतो नथी." माटे उपरना पाठ मुजब तो अति गरम थाय तो पछी विदलनो दोष न लागे. आजकाल घणा लोको पोतानी अकलमां जेम आवे तेम वर्ते छे, पण ते अयुक्त छे. तेथी पूर्वोक्त विधि अनुसार उकाळया पछीज चणानो लोट, मेथी प्रमुख द्विदल मेळवाय तो दोष न लागे. खाटां ढोकळांनो जे आथो करे छे ते पण उपर मुजब छाश गरम करवी जोइए. स्वजनकुटुंब, अन्य दर्शनीय नात जमणवार विगेरे ठेकाणे जमवा

जतां विदल माटे तीव्र उपयोग राखवो जोइए. नहितर सहसा दोष लागी जाय. वळी कढी राइतुं प्रमुख बनावेल होय ते गोरस गरम कर्या पछी विदल नांख्युं हशे के केम ते शी शंकाने प्रथमथीज पूछी दूर करी भक्ष्याभक्ष्यनो विचार करीने उपयोग करवो. कदाच गोरस गरम न कर्युं होय, तेथी विरतिवंते तो स्वघेर पण अवश्य उपयोग कर्या पछी खावुं उचित छे. वळी हाल गोरस घणेखरे ठेकाणे बरोबर उकाळवानी प्रवृत्ति जोवामां आवता नथी; तेथी विरतिवंते तो चोकस खात्री वगर बहेतर छे के तेवी वस्तु वापरवी नहि, के तेवा ठेकाणे जमवा जवुं पण नहि. आशा छे के विरतिवंतो तथा अन्य श्रावक श्राविकाओ हवेथी गोरस पूर्वोक्त रीते गरम करवा कराववानी खास संभाळ राखी ते मुजब वर्तवा उद्यम करशे. द्विदल साथे काचुं गोरस मळवाथी बेइंद्रिय जीव तरतज उत्पन्न थाय छे ते आगमगम्य छे. तेनुं विवेचन आगळ "माखण" ना संबंधमां थइ गयुं छे माटे शंका करवी नही; अने आ अभक्ष्य तजवा अवश्य खप करवो, पण "बीजाने त्यां जमवा जतां विदलनी जयणा अने स्वघेर उपयोग राखुं" ए नियमो कायर पुरुषो माटे छे. अभक्ष्य वस्तुओ कोइ पण ठेकाणे जमवा जतां खावानो कदि आगार होयज नहि. "आ तो लड्डु बी खानां ने मुक्ति बी जानां" तेनी जेवुं थयुं. पण बंधुओ अने बहेनो! एम मुक्ति कदि हाथ आववानी नथी. ए तो ज्यारे आत्म वीर्य फोरवशुं त्यारेज मुक्ति मळवानी; पण भाइबापानो संबंध पुद्गल साथे राखशुं त्यांसुधी तो चतुर्गतिना चौटामांथी नीकळवुं तद्दन अशक्य छे, ते पुद्गलनो तो सडन पडन

विध्वंस थवानो स्वभावज छे तेथी पुद्गल परथी ममत्व भाव उठाडी हे वीरपुत्रो! हवे तो मोहरूपी निसो उतारो, प्रमाद दुर करी जाग्रत थाओ, अने आ मनुष्य जन्मनुं सार्थक करो! आज करशुं काल करशुं एम विचारणा करतां करतां यमराजना सपाटामां ओचिन्ता जेम "आइ अचानक काल तोपची, गहेगो ज्युं नाहर बकरीरी" नी माफक फसाइ जशुं, माटे पाछळथी पस्तावुं न पडे ते माटे सतत प्रयास करवा उजमाल थाओ! आ हजु हमणांज प्रभुजी कही गया छे "क्षण लाखेणो जाय" ते केम भूली जाओ छो! ते वाक्य अहर्निश याद करी आ क्षणिक अने परिणामे दुःखरूपी सुख उपरथी राग उठावी द्विदलनो सर्वथा त्याग करो तोज जिनेश्वर महाराजनी आणा यथार्थ पाळी कहेवाय. तेवा जगत्वंद्य जिनेश्वर महाराजना वचननो अखंडितपणे आदर क्यारे आपणे करशुं अने अविचल सुख पामशुं?

१८. वेंगण—सर्व जातिना रींगणा अभक्ष्य छे, कारण के एक तो तेमां बहु बीज छे, तथा तेनी टोपीमां सूक्ष्म त्रस जीवो होय छे. वळी ते खावाथी कामसंज्ञा (दुःशीळता) अने निद्राने वधारे छे. वळी ते अति विकारी तथा निर्ध्वंस परिणाम उपजाववावाळा छे. पित्तादिक रोग पण थाय छे; तेथी तेनी सर्व जाति अभक्ष्य छे. [1]रींगणानी सुकवणी करीने पण खावानो निषेध छे; तेथी तेने तो

१ पुराणादि अन्य शास्त्रो पण रींगणानो निषेध करे छे. 'यस्तु वृंताककालिंगमूलकानां च भक्षकः। अंतकाले स मूढात्मा न स्मरिष्यति मां प्रिये॥

शीघ्रताथी जळांजलीज देवी. केटलाक रोगना कारणे आ अने आवी अभक्ष्य वस्तुनो आगार राखे छे; पण बंधुओ ! जे कर्मरूपी रोगनुं उन्मूलन करवा माटे त्रिकालज्ञानीओए आ अभक्ष्य वस्तुनो त्याग करवो कह्यो छे त्यारे आपणे तेनो अनादर करी कर्मरूपी रोगवृद्धि थवा माटे रींगणा प्रमुख वापरी भवभ्रमण विशेषे वहोरी लइए छीए. अफसोस छे के आपणा रोगनुं तेथी निवारण थवाने बदले खरेखर तेने पुष्टि मळे छे. भव्यो ! ज्ञानचक्षुथी जरा विलोकन करो ! हवे आटलेथी विरमो ! जेथी आपणे कर्मरूपी रोगनुं विदारण करी अमरपदवी वेगे लइए.

१९. अजाण्युं फळ–जेनुं नाम कोइ न जाणतुं होय, तथा कोइए न खाधां होय तेवां फळ के फुल अभक्ष्य छे; कारण के तेना गुणदोषनी खबर नथी. कदाच विषफळ होय तो आत्मघात थाय, ते माटे तेनो त्याग करवो. वंकचुल राजकुमारने हितस्वी महान् उपगारी गुरुमहाराजे अजाण्या फळनो नियम कराव्यो हतो, जे तेणे अति क्षुधा लागवा छतां पण दृढपणे पाळवाथी तेना प्राण बच्या, अने तेनी साथेना बीजा चोरो अजाण्यां फळ खावाथी काळने वश थया. भो ! भव्यो ! आवा परमकृपाळु केवळ निःस्वार्थी

वळी कह्युं छे के रींगणाना शाकनो धुमाडो लागतां आकाशे चालतुं विमान अटके छे. जो पुराणीओ उक्त शास्त्रने मान आपता होय तो तेणे तेमां स्पष्ट रीते निषेधेली वस्तु पोतेज वर्जी दइ श्रोता उपर दाखलो सज्जड बेसाडवो जोइये.

तीर्थंकर महाराज तथा गुरुमहाराजनो शीघ्र अनंता दुःखमांथी मुक्त करवानो उपदेश पूर्व पुन्य उदये जे पाम्या छीए ते फरी मळवो दुर्लभ छे. पुन्यरूपी मूडीनुं व्याज खवाइ गयुं अने हवे तो मूडी पण खावा मंडया, अने जो ते सघळुं खाइ जशुं तो परभवे सुख-संपदा क्यांथी पामशुं ? माटेज शांत अने गंभीरतादिक अनंत गुणना धारक प्रभुजीनी आ उमदी शीखामण मानो अने तद्वत् आचरणा करवा वीर्योल्लास फोरवो ! जेथी स्वयमेव मोक्षमाळा कंठने विषे आरोपित थाय.

२०. तुच्छफळ—जे असार पदार्थ होय, तृप्तिकारक होय नहि, घणा आरंभे पण तृप्ति थाय नहि, खावुं थोडुं ने फेंकी देवुं घणुं, जेमके चणीबोर,[1] पीलु, पीचु,[2] गुंदी,[3] मोर[4] प्रमुख ते तुच्छ-फल छे. तथा अत्यंत कुमळी मग, चोळा, गुवार, वाल, समी प्रमु-खनी शींग तथा बीजी जे फळनी जातिंओ के फळीनी जातिओ अति कोमळ होय ते सर्वे तुच्छ औषधि जाणवी. अने चणाना फुल, केरीना महोर के जेमां गोटली बंधाणी न होय, बोरना ठळीयामांथी गर्भ काढीने खावो ते वगेरेमां प्रसंग दूषण पण लागी जाय, केमके वनस्पतियो अति कोमळ अवस्थामां अनंतकाय पण होय छे, तेथी अनंतकायनो व्रत भंग थइ जाय. एवी वस्तुओ बहु खाइए तो पण तृप्ति न थाय,

---

१ काशीना आमलबोरमां पण त्रसजीवो थाय छे. २ पेच. ३. कट गुंदा, जांबु पण तुच्छ फल गणाय छे. ४ आंबानो मोर.

अने खावामां थोडी आवे, तथा खाधा पछी तेनी गोटली (ठळीया) बहार नांखीये एटले तेमां मुखनी लाळ अडकवाथी असंख्य (लाळीया) संमूर्च्छिम जीव उत्पन्न थाय, तथा जे पुरुष बहु तुच्छ फळ खाय तेने तत्काळ रोग पण थइ जाय छे, तेथी तुच्छ फळ सर्वथा वर्जवां. हे बंधुओ ! ज्यारे आ तुच्छ अभक्ष्य वस्तु उपरथी आपणो तुच्छ ममत्व भाव उठशे त्यारेज शाश्वता अनंत सुखनी ल्हेरीओमां मग्न थवानो समय शीघ्र प्राप्त थशे.

२१. चलित रस–कोह्युं सडयुं अन्न, वाशी रोटलो, रोटली, भात, दाळ, शाक, खीचडी, शीरो, लापशी, भजीयां, थेपलां, पुडला, वडां नरम पुरी, ढोकळां विगेरे अनेक रसोइ के जे एक रात्रि व्यतीत थये वाशी थाय–एटले सूर्य अस्त पछीज ते ते चीजनो स्वाद गंध रंग स्पर्श बदलाइ जतां "चलितरस" थवाथी अभक्ष्य छे. मिठाई वर्षाकाळमां सारी उत्तम प्रकारनी बनावी होय तो उत्कृष्ट पंदर दिवस, उन्हाळामां वीश दिवस, शियाळामां एक मास सुधी भक्ष्य छे, अने बनाववामां कचाश रहेवाथी जो तेनो वर्ण, गंध, रस, स्पर्श फरे तो काळ परिमाण पहेलां पण एटले आजनी बनावेली मिठाइ आजेज अभक्ष्य छे. शास्त्रमां जेटलो काळ कह्यो छे ते वित्या पछी ते चीजनो चलित रस थाय छे त्यारे असंख्य बे इंद्रिय जीव तेमां उपजे छे, तेथी श्रावके रात्रे तल्मात्र पण अन्न के एठवाड राखवो नहि. जे विवेकी पोते भाणामां पीरसेलु कांइ एंठुं न छांडे, तथा थाळी वाटको धो-

इने पीए छे तेओने विमित्ते संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय मनुष्य असंख्य उपजता अटके छे; तेथी आंबिल तपना जेवो लाभ मळे छे, माटे जमणवार करीने ठाम के एठवाड रातवाशी नज राखवो. दिवसे एठुं पण बे घडी पहेलां परठवी देवुं, अने जो जनावरना उपयोगमां आवी जाय तो ते वधारे सारुं. लापशी, शीरो प्रमुख सूर्य अस्त पहेलां जो सारी रीते घीमां दाणे दाणो छुटो थाय तेवुं शेकी नांख्युं होय अथवा रोटली राटला खाखरा बंगडी जेवा आकरा शेकी नांख्या होय तो ते वाशी न थाय. रात्रे रांधेलुं पण खावुं युक्त नथी. सवारे सूर्यना किरण फूट्या पछी के ज्यांथी जीवनी यत्ना पाळी शकाय त्यांथी चुलानो आरंभ राखी ने सांजे सूर्य अस्त थये ओलवी नांखवो जोइए, तेज श्रावकनो दयाळु आचार छे.

..लोटनी आश्रयी सूचनाओ.

१. आटो—चाळ्या वगरनो लोट दळ्या (पीस्या) पछी केटलाक दिवस मिश्र (कांईक सचित्त ने कांईक अचित्त) रहे छे, पछी अचित्त थाय छे. श्रावण, भाद्रवामां आटो दळ्या पछी वगर चाळेलो पांच दिवस मिश्र रहे; आसो, कार्तिकमां चार दिवस; मागशर, पोसमां त्रण दिवस; माह, फागणमां पांच पहोर; चैत्र वैशाखमां चार पहोर; अने जेठ, अषाडमां त्रण पहोर मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय. अने जे दिवसे दळ्यो होय तेज दिवसे चाळ्यो होय तो बधी ऋतुमां तेज दिवसे अचित्त छे, अने बे घडी पछी कारण पडये मुनि महाराज पण वहोरी शके. सिद्धांतमां आटानो काळ जोवामां आवतो नथी, पण अचित्त थयेला लोटमां पण खोरास थयेथी अथवा वर्ण, गंध, रस पलटाय एटले अभक्ष्य छे; तथा जीवनी उत्पत्ति जोवामां आवे तो ते लोट चाळीने न खवाय—अर्थात् ते [1]अभक्ष्य थयोज मानवो. चोमासानी ऋतुमां आटो दररोज बे वखत, तथा शियाळा उन्हाळामां एक वखत चाळवो, कारण न चाळवाथी तेमां जाळां बाझी जाय छे अने ते तुरत बगडी अभक्ष्य थाय; तथा दरेक वखत वापरतां पहेलां अवश्य चाळवो; जेथी जीवनी यत्ना सचवाय. बाजरानो लोट घउं चणाना लोट करतां बहु

---

१ जुओ धार्मिक घडखुदी, खो.

व्हेलो खोरो थइ जाय, तेथी उपयोग राखवो. बने त्यां सुधी कारण वगर सामटो दळवो दळाववो ज नहि; आटो तैयार बजारमांथी लेवो नहि, कारण के वेपारीने त्यां घणा दिवसनो जुनो माल होय, सडेलो तथा हलको दाणो बरोबर जोया तपास्या वगरनो पण दळवा आपे, तेओने तो व्यापार करवो छे एटले प्रायः वेठज करे; जेथी स्वघेर सारो माल मंगावी, जोइ तपासी जयणा पूर्वक दळवो के दळाववो, अने सारा आंक[1] वती चाळीने वापरवो. घउ प्रमुख-मां केटलीक वखत बहु झीणां सार होय छे ते तेमां धनेडां प्रमुख जीवनी उत्पत्ति थाय छे, ते जीवो बहु झीणां होवाथी एकाएक नीकळी शकता नथी, पण ज्यारे मोटा थाय छे त्यारे ते दाणामांथी नीकळी शके छे, तेथी तेवा दाणाओ वीणीने उपयोग पूर्वक सारी [2]जग्याए मूकी देवा; पण केटलाक तेने सहेज छिद्रो समजी जेमने तेम दळवा पण आपी दीये छे ते खेदजनक छे. तुच्छ स्वार्थनी खातर तेवी वर्तणुंक अथवा प्रमाद महा अनर्थकारी थाय छे. आतो कोइ कोइ दाणा तेवा होय छे, पण केटलीक वखत सामटो दाणो भरे छे ते ऋतु फेर-फार आदि कारणथी तद्दन सडी जाय छे. तो तेवा दाणा गमे तेटला प्रमाणमां होय तोपण किंचित् न वापरवा. मुख्यताए तो जेम जोइए तेम मण बे मण के पांच मण परीक्षा करी सारो माल लेवो युक्त छे; पण कदाच तेम न बने तो तेने उपयोग पूर्वक राखमां

---

१ जीवनी सारी रक्षा थइ शके तेवां साधन. २. ज्यां पांजरा-पोळ न होय त्यां पण जीवातनी रक्षा माटे ओरडा अवश्य जोइए.

भारवा, प्रारो देवो, तथा अवार नवार जोवा तपासवानो उपयोग करवो जोइए; तेमां पण चोमासामां खास करी दरेक वस्तुओमां जीवोत्पत्ति थवानो संभव होवाथी अति संभाळ राखवी; आ वगेरे कार्योमां स्त्रीओए विवेक तथा चतुराई पूर्वक पोतानी फरज समजी उपयोग करवो घटे छे. वळी जो बनी शके तो दळवा पण न आपे. कारण के तेने तो मजुरी करवी होय तेथी घंटी प्रमुख पुंजे के नहि, घंटी उपर चंदरवो पण होय के नहि (प्रायः करी तेओ धर्मना अजाण होवाथी तेवो शुद्ध उपयोग क्यांथी राखे!) तथा तिथीने दिवसे पण दळे अने भेळ संभेळ—दगो पण करे; पण आ पंचम काळमां मोटा शहेरोमां गरीब स्थितीनो माणस दळावीने वापरे त्यारे श्रीमंत पुरुषोनी तो शी वात! पण धर्म तो श्रीमंत के गरीब बन्नेने माटे एक सरखो छे. शास्त्रमां घंटी उपर चंदरवो न होवाथी केवा केवा दोषो कह्या छे ते वगेरेनुं अत्रे विवेचन न करतां टुंकमां एटलुंज कहेवुं बस छे के आपणे जीवदयाना हेतु माटे जयणापूर्वक जेम आजथी फक्त पचीश के पचास वर्ष पहेलां श्रीमंतोना घरवाळाओ जातेज दळवुं, पाणी भरवुं वगेरे कार्यो करता हता तेम करशुं तो तेमां लघुता नथी, पण आ बाबत सुज्ञ बहेनोनेज लागणी होय तो घणे दरज्जे सारो उपयोग राखी अनेक जीवोने जीवितदान आप्यानुं फळ मेळवे, तथा अनुक्रमे सुख संपदा पामे; तेथी जयणा-पूर्वक जाते करवुं तेज उत्तम छे.

२. जलेबी—जलेबीनो आथो करवानी जे रीत छे तेज जीवो-त्पत्तिनी हेतु छे. कोइ ठेकाणे दिवसना आथो वगेरे बनावी तेज

दिवस जलेबी बनावी उपयोग करे छे, अने तेमां दोष लागतो नथी एम कहे छे; पण आ बाबत विशेष निर्णय करतां जणायुं छे जे किंचित् पण जुना घोळनुं जामण दीधा शिवाय नवो घोळ कदि उपसतो नथी, अने उपस्या विना जलेबी फुले नहि, माटे जे आथो होय ते उपसे छे अने घोळ उपसतो नथी. माटे जलेबी कोइ पण रीते अनाचरणीय जणाय छे, केमके तेमां असंख्य बेइंद्रिय जीव उपजे छे, तेथी तेनो सर्वथा त्याग करवो. जलेबी दिवसनी बनती नथी एम सांभळ्युं छे, छतां तत्व केवलीगम्य; पण बजारमां जे थाय छे ते तो रात्रेज आथो करे छे तेथी ते अभक्ष्य ज छे.

३. हलवो—लीलो, सुको, बदामी विगेरे जातनो हलवो अभक्ष्य छे; कारण के घउंना लोटने बे त्रण दिवस सडावीने तेमांथी सत्व काढीने पछी बनावे छे; तेथी तेमां असंख्य जीव उत्पन्न थाय, माटे तेनो सर्वथा त्याग करवो युक्त छे. दूधीनो हलवो फक्त ते दिवसनो करेलो भक्ष्य छे, बीजे दिवस अभक्ष्य थाय छे. जलेबी, हलवो के जे घणां आरंभथी निष्पन्न थाय छे. तेनो अवश्य त्याग करवो जोइए. मुंबइमां हलवो बहु प्रसिद्ध होवाथी जेओ त्यांथी स्ववतन जाय छे त्यारे हलवो खास करी लइ जाय छे. पण बंधुओ! अनेक बेइंद्रियादिक जीवोनी हिंसावाळा पदार्थ खावा के खवराववाथी आ आपणाज आत्माने तेनां कडुक फळ चाखवां पडशे, ते वखते माता, पिता, बंधुओ, व्हेनो, स्वजन कुटुंबी के मित्र अथवा तो स्त्री कोइ पण ते महा दुःखमांथी मुक्त कराववा नहि आवे के थवी

वेदनामांथी थोडी पोते अंगीकार नहि करे, अर्थात् सर्वे कर्मनो भोक्ता आपणोज आत्मा थशे. माटे तेवा अभक्ष्य पदार्थ श्रावक वापरवा नहि, तेम नातमां के कुटुंबी अथवा अन्यदर्शनीने त्यां जमवा जतां पण ते अभक्ष्य वस्तुओने विषसमान समजी स्पर्श पण न करवो. खांड वगेरेना रमकडांनी जनावररूपे करेली चीजो अभक्ष्य छे. जेम यशोधरे पूर्वे मातानी दाक्षिण्यताथी अडदनो कुकडो कल्पी मारीने मांसरूपे कल्पी तेनुं भक्षण कर्युं तेथी उपराउपर तिर्यंचना भवोमां केवा छेदन भेदनादि थयां, माटे ते अवश्य वर्जवुं. धर्मी मातपिताए आ बाबत अवश्य लक्ष्यमां राखी पोतानां बाळकोने तेनी समज आपवी.

४. अम्रती—अम्रती के जे कलकत्ता तरफ बनावे छे, तेनो देखाव लगभग जलेबीना जेवोज जणाय छे; पण अम्रती बनाववामां आथो करवो पडतो नथी. तेथी ते वस्तुओ दिवसना उपयोगपूर्वक बनावी होय तो ते दिवस वापरवामां बाधक जणातो नथी, बीजे दिवसे ते अभक्ष्य थाय छे. माटे तेनो निर्णय करीनेज लेवी.

५. मावो—दूधनो मावो जे दिवसे कर्यो होय, तेज दिवसे भक्ष्य छे; रात्रीए अभक्ष्य थाय छे, पण जो ते मावाने घीमां तळीने सोंतळी राख्यो होय तो रात्री रही शके; तेथी पेंडा, बरफी, जांबु, घारीपुरी, मोहनथाळ विगेरे मिठाइ के जेमां मावो आवे छे ते मावानी मिठाइ तुरत बनाववी जोइए, अने चार पांच दिवसमां तेनी मिठाइ मसुख वापरी नांखवी जोइए. ते उपरांत राखवाथी खाटो

थइ जवा तथा लील फुल पण थई जवा संभव छे. अने ते मुजब केटलाक वेपारीओना मावा उपर लील फुल थयेली जोवामां आवे छे; तेवा मावानी मिठाइ अभक्ष्य छे. वळी मावो काचो रह्यो होय एटले तेनी अंदर दूधनों प्रवाह भाग रह्यो होय, तेवा मावानी मिठाइ तेज दिवसे बनाववी जोइए. अने मीठो मावो जे ढीलो वेचाय छे ते वाशी थये न लेवो. केटलाक दगाखोर मावानी साथे बटेटां रताळु प्रमुख कंद बाफी तेनुं मिश्रण करे छे, माटे ते उपयोग राखवो. हे भव्यो! आवी मिठाइओमां प्रथम, मध्ये अने पश्चात् केटली हिंसा थाय छे, तथा केवा दगा करे छे तेनो सहज ख्याल करवो. जलेबी, हलवो प्रमुख मिठाइ वगर शुं आपणने बीजी भक्ष्य मिठाइ नथी मळती के आवी अभक्ष्य मिठाइनो उपयोग करवो? धन्य छे तेवा वीररत्नोने के जेओ बहु आरंभथी निष्पन्न थती एवी मिठाइनो रस स्वादथी विमुख थइ सर्वथा त्याग करे छे. ते वात यथार्थ ज छे के एक रस इन्द्रियना तुच्छ स्वाद माटे असंख्य जीवोनी हानी थाय छतां आपणे भक्ष्याभक्ष्यनी दरकार राख्या विना आंख आडा कान करी अनादिकाळनी टेव मुजब मुख हलाव्या ज करीए छीए ते केवुं अफसोस जनक छे. अरे! क्यारे आपणा मुखो बंध रहेशे अने अणाहारी अनंत सुखमां लय लीन थईशुं? जो एक रसइन्द्रिय वश न थई तो बाकीनी चार इन्द्रिओ कदि वश थवानी नथी, तेथी प्रबल एवी रस इन्द्रियने वश न थतां तेनो जय करवा उजमाळ थवुं. सुज्ञ बंधुओ! जुओ के वीर प्रभुए साडाबार वर्ष मध्ये फक्त

३४९ दिवस आहार कर्यो, बाकी सर्वथा तप कर्यो. तेवा आत्म शूराओज आत्मानुं कल्याण करी सिद्धिमहेल पाम्या, अने अत्यंत रसइन्द्रियने वश थइ पुद्गलिक सुखमां आनंद मानता एवा आपणे हजु चतुर्गतिमां भ्रमण करीए छीए ते प्रत्यक्ष जोइए छीए, अनुभवीए छीए छतां आ अनादिनी कुवासना हे चेतन! केम मटाडतो नथी! हवे तो चेत! चेत जिनशासन फरी मळवुं दुर्लभ छे तो आ देहवडे कांईक सार्थक कर! कर!

६. मुरब्बो—केरीनो मुरब्बो शीत, उष्ण तथा वर्षाऋतुमां ज्यां सुधी वर्ण, गंध, रस, स्पर्श पलटाय नहि त्यां सुधी भक्ष्य, अने पछी अभक्ष्य एम सेनप्रश्नादिकमां छे; पण जेम अथाणाने माटे जुक्तिथी राखवानी तथा केम काढवुं वगेरे सूचनाओ लखी छे तेम मुरब्बा माटे उपयोग राखवो. चोमासामां लील फुग थइ न जाय तेवी जग्याए संभाळथी राखवो. मुरब्बानी [1]चासणी जो

---

१. चासणी त्रण तारी करवाथी घट रहेवाथी पछी आप मूके एटले ढीला गोळ जेवो मुरब्बो थशे ते नहि बगडे, परंतु जे आंमळांनो तथा सफरजननो मुरब्बो अथवा तेनो रसो दवा साथे ले छे तेमणे ते जुनो होय तो नहीं लेवो.

शरबत—दाडम (अनार) नो, गुलाबनो अने बीजो जे थाय ते प्रवाही होवाथी भले पेकबंध छतां बोळ अथाणा जेवो गणवो जोइए. केमके तेनी चासणी काची होवाथी तेमां पाणी घणुं छे.

सीरको—अनेक लीलोत्रीनो बनेलो आवे छे, ते बोळ अथाणु छे.

नरम होय तो वेळासर बगडी जाय. नरम चासणीना मुरब्बामां पंदर वीस दिवस पछी लील फुग थइ जाय छे, माटे आवी चीजो बनाववा–राखवामां बहु उपयोग राखवो. बीजोरां, सफरजन, नारंगीना मुरब्बानो लेख नथी माटे उपयोग धरीने वर्ण गंधादिकनी तपास करी लेवो घटीत छे. मुरब्बो अथाणां प्रमुख उघाडुं रहेवाथी बगडी जवा संभव छे, अने मिठाइ, वसाणुं (सेव गांठीया प्रमुख) तद्दन बंध राखवाथी बगडी जाय छे, अने चोमासामां तो हवा लागवाथी पण लीलफुग थइ जवाथी अवश्य थाय छे. माटे जे वस्तु जेम उपयोग पूर्वक सारी रही शके तेम करवुं. बहेतर छे के जेम बने तेम रस स्वादनी न्यूनता करी आवी वस्तुओनो त्याग थाय ते श्रेष्ठ छे. अने जो कोइ पण रीते जीभकडीवे चाले नहि तो अति उपयोगथी वर्तवानी आवश्यकता छे; नहितर अनेक जीवोना विनाशना कारणिक थइ दुर्गतिमां जइ करेल कर्म भोगववां पडे. माटे कांतो रस इन्द्रियनो जयज करवो, नहितर प्रमाद वर्जी जयणापूर्वक वर्तवुं जेथी अल्प दोष थाय.

७. सेव, वडी, पापड, खेरो, फरफर, अडदनी सेव, साळेवडां के खीचीयां पापड प्रमुख शियाळा उन्हाळामां सूर्य उदय थाय त्यारे तेनो लोट बांधी बनाववुं,[1] अने सूर्यअस्त पहेलां बरोबर सुकाइ जवुं

---

१. सेव (परदेशी मेंदानी अभक्ष्य), पापड, अडदनी कळीनो लोट सूर्योदय पछीज बांधवो; वडी, फरफर, खीचीयां (साळेवडां) जे चोखानो लोट रांधीने करे छे ते पण सूर्योदयेज करवुं. खेरो पण

नहितर वासी थाय. चोमासामां आवी चीजो बनाववी, राखवी के खावी युक्त नथी. कारण के तेमां त्रस जीव, लील ग्नी उत्पत्ति थवा पामे छे. कदाच चोमासामां पापड (जे असाड सुद १ थी १५ सुधीमां बनावेला होय ते) खावा माटे राख्या होय तो तेने तडको अवार नवार देवो, अने वारंवार पुंजवानी तथा हेरववा फेरववानी बहु संभाळ राखवी; पण आजे प्रमादने वश थइ प्रायः तेवो उपयोग कदि राखता नथी के राखवाना नहि. माटेज चोमासामां नज खावा उत्तम छे. केटलाक शियाळा, उन्हाळामां बनावेल सेव पापड प्रमुख चोमासु अने बीजा (आवता) शियाळा पर्यंत राखी खाय छे ते केवळ अयुक्त छे. खरी रीते तो असाड सुद १५ पहेलांज तेवी चीजो वापरी नाखवी, अने कार्तिक सुद १५ पछीज बनाववी योग्य छे. सेव पापड प्रमुख जे बजारमां तैयार मळे छे ते वापरवुं युक्त नथी; उपयोग पूर्वक घेरज बनी शके तेज वापरवुं जोइए. पापड वडी चोमासामां अभक्ष्य छे एम श्राद्धविधिमां कहेल छे.

८. दूधपाक—बासुदी, खीर, शीखंड, दूध, दूधनी मलाइ बीजे दिवस वासी थाय तेथी अभक्ष्य छे, तथा रात्रे बनावेलुं पण अभक्ष्य छे. रसस्वादनी लोलुपताने लीधे आवी चीजो बीजे

जे चणानो लोट मसालो पाणीमां आथीने पाडे छे ते पण सूर्योदये आथीने बनाववो जोइए, अन्यथा ते अभक्ष्य छे. विरतिवाळाए खास आवी चीजोनो उपयोग करतां अगाउ ते क्यां केवी रीते, बनावेल छे ते भक्ष्याभक्ष्यनो विचार कर्या पछीज वापरवुं युक्त छे.

दिवस राखीने आरोगवी ते भ्रम भरेलुं छे. दहींनी मलाइनो काळ दहि मुजब जाणवो.

९. केरी—आर्द्रा नक्षत्र बेसे त्यारथी पाकेल केरीनो रस चलित थाय तेथी केरी अभक्ष्य छे; गंधाइ गयेली, सडेली, उतरी गयेली कायम अभक्ष्य छे. केरी चुसीने खावी ते करतां रस काढीने ज खावो युक्त छे, कारण चुसवाथी तेनो गोटलो ज्यां नांखीए त्यां आपणी लाळ अडी होय तेथी असंख्य संमूर्छिम लाळीया जीव उत्पन्न थाय, वळी केरीमां त्रस जीव (इयळो) कदाच नीकळे छे, तेथी रस काढ्यो होय तो देखावाथी रसनी जीवातो पेटमां नहि जतां तेनी रक्षा थाय. केरीनो रस उन्हाळानी सख्त गरमीने लीधे सवारनो काढेलो सांज सुधी रही शकवा थोडो संभव, तेथी ज्यारे उपयोग करवो होय त्यारे रस काढवो अने चार छ के आठ घडी राखवो होय तो ठंडा पाणीना वासणमां रसनुं वासण राखवुं, अने ज्यां गरमी न लागे तेवी जग्याए राखवो. आर्द्रा नक्षत्रथी केरीनो अवश्य त्याग करवो घटे छे, केमके त्यार बाद आ क्षेत्रमां तो केरी प्रत्यक्ष कोही जती जणाय छे.

१०. पापड—शेकेलो पापड बीजे दिवस सीतावी फरी जवाथी वासी थाय. तेल के घीमां तळेलो बीजे दिवस वापरी शकाय.

११. चटणी—कोथमीर, फोदीनानी जे चटणी करे छे, तेमां दाळीया (शेकेला चणा) के गांठीया प्रमुख नांखीने बनावेली तेज

दिवस भक्ष्य, बीजे दिवस वाशी थाय. खटाइ (लींबु, कोठ प्रमुख) वाळी कोथमिर फोदीनानी पाणी विनानी कोइ पण अनाज नांख्युं न होय तेवी चटणी त्रण दिवस सुधी लेवाय. घुंटतां पाणी नांख्युं होय तो बीजे दिवस वाशी जरुर थाय. खटाइ विनानो चटणी तडको दइ सुकवी राखी होय तो बीजे दिवस लेवामां बाधक जणातो नथी, अन्यथा बाधक जाणवो. खरुं जोतां ताजे ताजी रोजेरोजनी बनावीने खावी उत्तम छे; कदाच एठवाड पडी जाय के एठा हाथनो स्पर्श थइ जाय तेथी पण अभक्ष्य थाय.

१२. संभारो—लोट के मेथी नांखीने बनावेल संभारो बीजे दिवस वाशी थाय.

१३. पकवान—मिठाइ-गोळपापडी के पाकना लाडु जे सर्वथा जळ रहित थाय छे ते वर्ण गंध रस स्पर्श फर्ये अभक्ष्य थाय, एटले तेना माटे पकवानना जेटलोज काळ होय तेम कही शकाय नहि, विशेष काळ पण पहोंचे तेम शास्त्रमां पण कहेल छे. जो गोळनी तथा घीनी विगइनो त्याग कर्यो होय अने नीवियातानी जेने छूट होय तेने ते दिवसनी करेली गोळपापडी लेवाय नहि, बीजे दिवस लेवाय. केमके तेना तेज दिवसे तेमां विगइपणुं मटे नहि. तोपण उत्कृष्टथी सुखडीना काळ मुजब लेवामां ठीक छे, कारण के केटलीकवखत रसइन्द्रियमां लुब्ध थइ जवाथी तेना वर्णगंधादिक पलटाया होय ने खबर न पडे तो ते वापरवाथी दोष लागे; माटे गोळपापडीनो काळ जे पकवान काळ कहेल छे ते मुजब लेवो ते वधारे सारुं छे.

मिठाई सारी उत्तम प्रकारनी बनावेली वर्षाकाळमां उत्कृष्ट पंदर दिवस, उन्हाळामां वीश दिवस, तथा शियाळामां एक मास सुधी भक्ष्य छे, पछी अभक्ष्य छे. कंदोइनी दुकाननी मिठाइ प्रायः तेवी उत्तम न होय तेथी तेनो काळ ओछो जाणवो. अने जो वर्ण, गंध, रस, स्पर्श फरे तो काळमान पहेलां पण अभक्ष्य थाय. कंदोइनी दुकाननी मिठाई वापरवामां अनेक दोष छे, तेथी घेर बनावी–करावीने खावी उत्तम छे. कारण के कंदोई जे पाणी वापरे ते गळेल होय के नहि, बीजुं ते पाणी पीने एठो प्यालो ते वासणमां बोळे एटले असंख्य संमूर्छिम जीव थाय; वळी जुनो माल (सुखडी) वधेल होय तेनो भूको प्रमुख नवी मिठाइ साथे पण मेळवे, लोट वगेरे जुनो माल वापरे, चाळ्या वगर पण वापरे, रात्रे आरंभ करीने बनावे, परदेशी मेंदो प्रमुख अभक्ष्य चीज वापरे, घी हलकुं खोरूं पण वापरे, लाकडां चूलो प्रमुख पुंजे के नहि, चूला उपर चंदरवो क्यांथी होय एम यत्ना वगर करता होवाथी एकेंद्रियथी मांडी चौरिंद्रिय अने असंज्ञी–संमूर्छिम पंचेंद्रिय सुधीना अनेक जीवोनी हानि थवा पामे, विगेरे कारणोथी कंदोईनी दुकाननी मिठाइ के सेव, गांठीया, बुंदी वसाणुं प्रमुख प्रायः अभक्ष्य होय. चोमासामां तो कदोइनी मिठाइनो अवश्य त्याग करवोज जोइए.

मिठाइ काळमान.—कार्तिक शुद १३ के १४ सुधीमां जे मिठाइ बनावी होय तेनो काळ १५ दिवसनो जाणवो, कारण के ते मिठाई चोमासाना काळमां बनावी छे. फागण शुद

१३ के १४ सुधीमां जे मिठाइ बनावी होय तेनो काळ (२०) वीश दिवसनो गणवो, जो के ते मिठाइ शियाळाना काळमां बनावी छे पण ग्रीष्म ऋतुमां वापरवी छे, तेथी तेनो उन्हाळा प्रमाणे काळ गणवो; अने अशाड शुद १३ के १४ सुधीमां जे मिठाइ बनावी होय तेनो काळ १५ पंदर दिवसनो गणवो, कारण ते मिठाइ वर्षाऋतुमां वापरवी छे. तेवी रीते ओछो काळ समजवो, पण विशेष नहि. तेम वर्तवाथी दोष लागे नहि, व्रत बहु शुद्ध रहे. केटलीक मीठाइ तो बीजेज दिवस के बे चार दिवसमां पण वर्ण गंध रसादि फरी जवाथी अभक्ष्य थाय छे, तेथी दरेक चीज सारी रीते जोइ तपासी सुधी खातरी करीने वापरवी उचित छे. परदेशी मेंदानी के परदेशी पडसुदीना लोटनी मीठाइ अभक्ष्य छे. जिनेश्वर भगवंते उपयोग अने आणाएज धर्म कह्यो छे, माटे आवी अनेक बाबतोमां अति उपयोग राखवो जरूरनो छे के जे आपणो धर्म (Du y) छे. बंधुओ! प्रथम तो धर्म मार्गमां प्रवेश करतां घणा जीवोने ते कडवो औषध समान लागे, कोइ महा पुन्यशाळी हलुकर्मी प्राणीओने धर्म प्रत्ये अत्यंत उत्सुकता होय छे. धर्म जो खुशीथी करवो न गमतो होय तो पण पराणे कर्मरूपी रोगनुं हरण करवा धर्मरूपी औषध ग्रहण करवुं. जेम कोइ रोगी माणस होय तेने कडवी विषसमान दवा पीवी जराये गमती नथी; त्यारे तेथी विमुख थइ जो ते दूधपाक पुरी आदिक मिष्ट पदार्थो वापरे तो अल्प वखतमां ते काळवश थइ जाय, अने जो झेर जेवी कडवी दवा पराणे पण पीये तो तेना रोगनुं अवश्य निवारण पण थाय; तेमज जो आपणने

धर्म उपर रुची थती न होय तोपण करवी, अने जो विषयवासना प्रमुखमां लपटाशुं तो अनंत भव भ्रमण करवुं पडशे, तेथीज कर्मरूपी रोगनुं निवारण करवा आ धर्मरूपी जुदां जुदां अनुपानो (औषध) प्रयोगो जणाव्या छे, तेथी कंटाळीने विमुख न थतां संपूर्ण आत्म-वीर्य फोरववुं जेथी सहेजे शिव संपदा पामीशुं.

१४. वसाणुं–सेव, गांठीया, बुंदी,[1] दाळ[2] प्रमुख वसाणुं पकवान होवाथी तेनो [3]काळ मिठाइ जेटलो जाणवो, अने वर्ण गंध रस स्पर्श फरे तो काळमान पहेलां पण अभक्ष्य जाणवुं. भजीयां, कचोरी, लोचापुरी, मालपुवा, प्रमुख नरम वस्तुओ बीजे दिवस वाशी थाय छे.

१५. चुरमाना लाडु–तळ्या वगरना बीजे दिवस वाशी थाय; पण सारी रीते तळेला उत्तम बनाव्या होय तो बीजे त्रीजे दिवस खावामां बाधक नथी. +खसखस चुरमाना लाडु तेमज केटलीक मिठाइमां छांटे छे ते वापरवी युक्त नथी. विरतिवंते तो खास उपयोग राखवो.

१६. रसाइ–उन्हाळामां सवारे रांधेल दाळ भात प्रमुख

---

१ बुंदी नरम तळेल होय तो वाशी थाय.

२ रात्रे पलाळेली दाळ वाशी थाय माटे वापरवी नहि.

३ घी तथा तेल खोरुं थाय तो अभक्ष्य कहेल छे, तो तेवा घी तेलनी मीठाइ पण अभक्ष्य जाणवी.

रसोइ सख्त तापने लीधे सांजे वे स्वाद (चलित रस) थइ जवा संभव छे, तेथी अभक्ष्य थाय. रोटली रोटला विगेरे पण उपयोगथी राखवा जोइए. एकदम गरम गरम तेना वासणमां भरी न देवा पण थोडीवार पछी भरवा. वळी कलइ विनाना वासणमां दहिं छाश प्रमुख खाटा पदार्थ राखवाथी (थोडाज वखतमां) तेमज बीजी रसोइ दाळ शाक प्रमुख राखवाथी कटाइ जाय छे, तेथी ते वस्तुना वर्णादिक फरवाथी ते खावा लायक नथी, जेथी पीतल के त्रांबाना कलइ रहित वासणमां ते वस्तुओ जरावार पण न राखवी. केटलीक वखत थोडी कलइ रही हाय तेवा वासणमां रांधवुं के रांधेली वस्तु के दहिं छाश राखवी तेथी पण कटाइ जाय छे, माटे अवार नवार कलइ करावववानो खास उपयोग राखवो; तेमां प्रमाद के लोभवृत्ति राखवा जतां तेनुं परिणाम व्याधि विगेरे अति खराब थाय छे.

१७. ओदन-(भात)-रांधेलो भात *छासमां राखेल होय तेनो काळ आठ पहोर सुधीनो छे. तेटलो काळ भात सांजे रांध्यो होय अने छाश छांटेल होय तेनो समजवो, पण सवारनो भात जो छाश छांटीने राख्यो होय तो तेज दिवसे वपराय; सूर्य अस्त पछी

+ खसखस अभक्ष्य छे, माटे कंदोइनी दुकानथी मीठाइ लेनारे तेनो निर्णय कर्या विना विश्वास राखवो नहि.

* छाशमां बुड जोइए, छाश नवुं पाणी भेळवेल नहि. त्रण दिवसनुं ओदन न लेवानुं "अतिचार" सूत्रमां कहेल छे, ते फक्त जाडी छाशथी रांधेल अनाज समजवुं.

ते काम न आवे. छाश छांटीने जे सांजनो रांधेलो भात राखवा तेमां पण बहु उपयोग राखवानो छे. ते भातना (सूर्य अस्त पहेलां) दाणे दाणा छुटा करी नांखवाज जोइए, अने जो तेम न थाय तो ते वाशी थाय, माटे एक एक दाणो छुटो करी नांखवो, तथा तेनी उपर चार आंगल तरती छाश जरुर राखवी जोईए; वळी ते छाशनो कपाळमां चांडलो करे तो थाय तेवी अर्थात् पाणी बहु थोडुं ने छाश–दहि घणुं होय तेवी जोइए. तथा ते भात ज्यांथी तैयार थयो त्यांथी काळ आठ प्रहरनो गणवो पण छाश छांटे त्यांथी नहि; अने सूर्य अस्त पहेलांज तेनी सघळी क्रिया पूर्वोक्त करी लेवी जोइए. चोमासामां तो आ प्रमाणे भात राखवोज युक्त नथी, बहेतर तो एज छे के आवी वस्तुपरथी ममता उठाडवी. केमके प्रमादवशात् आपणे पूर्वोक्त उपयोग प्रायः राखी शकता नथी, अने तेथी वाशी (फक्त रूपांतर थयु) नो दोष लागे छे माटे जोइतुंज रांधवुं, अने कदाच तेम छतां वधे तो अनुकंपादान करवुं, ठीक छे. केटलेक ठेकाणे नातमां सांजे भात, मग प्रमुख रांधेली रसोइ वधी पडी होय तेनो कृपण प्रकृतिने लीधे सदुपयोग तो न करी शके, परंतु बीजे दिवस ते वाशी रसोइ नवी उमेरी दइ खवरावे छे, तेथी चळित रसना त्यागीए खास तथा बीजाओए पण आवे ठेकाणे जमवा जतां अवश्य विचार करवो. श्रावके आ प्रमाणे वाशी खवराववुं तेज शरमावा जेवुं छे; पोताना अल्प नुकशानने खातर असंख्य जीवोनो विनाश थाय ते ते कबुल करे छे! अफसोस! बंधुओ तेना किंपाक

समान फळ चाखवां पडशे त्यारे अति त्रास थशे. माटे समजो, अने अनादिनी कुमतिने काढो, जेथी सुमतिना संगथी स्वआत्मानुं श्रेय करी अविचल सुखवास पामीए.

१८. दहीं—प्रभाते मेळवेलुं (दूधमां खटाइ नांखेली) दहीं सोल पहोर पछी अभक्ष्य थाय, अने संध्या समये मेळवेलु दहीं बार प्रहर पछी अभक्ष्य थाय छे एम सेनप्रश्नमां छे. एटले दृष्टांत तरीके रवीवारना सवारे सात आठ के दश वागे मेळवण नांख्युं होय तेनो काळ रवीवारना सूर्य उदयथी ज गणवो. (एम नहि जे दश वागे मेळव्युं एटले त्यार पछी १६ प्रहर). एटले रवीवारना अहोरात्रिना आठ प्रहर मळी सोळ प्रहर. ते दहिं मंगळवारना सूर्योदय पहेलां वलोवी नांखवुं जोइए; त्यारथी सोळ प्रहर तेनी छाशनो काळ समजवो. तेवीज रीते रवीवारनी संध्या समये के त्यार पछी मेळवण नांख्युं होय तेनो काळ रवीवारना सूर्यास्तथी गणवो. एटले रवीवारनी रात्रिना चार प्रहर तथा सोमवारनी अहोरात्रिना आठ प्रहर मळी बार प्रहरनो काळ जाणवो. अर्थात् दहीं मेळव्या पछी बे रात्रीनुं काळमान जाणवुं. दूध चार प्रहर सुधी वर्णादिक न पलटाय तो त्यां सुधी भक्ष्य छे, ते दरमियान मेळववुं जोइए; अने बपोर पछी के संध्या पछी गमे त्यारे दोहेलुं दूध होय तेमां रात्रिना बार वागतां (मध्यरात्रि) पहेलां मेळवण नांखी देवुं जोइए.

दहिं बजारमांथी लेवा करतां घेर बनाववुं श्रेष्ठ छे, कारण तेओनां वासण प्रायः शुद्ध न होय, उघाडां–ढांक्या वगर पण रहे, वाशी दूधनुं के मिश्रण करेला दूधनुं के संचाना दूधनुं बनावे, काळ-

मान ओछुं वधारे कहे, वळी पहूवा रांधीने पण दूधनी साथे मिश्र करी मेळवी दहीं बनावे छे. केटलीक वखत मृत्यु पामेला जीवो पण दहिमांथी नीकळेला जोवामां आवे छे वगेरे अनेक दोषोना कारणथी घेर बनावी वापरवुं युक्त जणाय छे.

कांजी के जे काची अथवा गरम करेली छाशनी आछ–परास कहेवाय छे ते कांजीनो काळ सोळ प्रहरनो कह्यो छे.

दहिं, छाश ने कांजीनो सोळ प्रहर जे उत्कृष्टो काळ कह्यो ते सोळ प्रहर एटले के बे रात्रि उल्लंघन न थवी जोइए, ते पहेलां पण जो वर्णादिक फरे तो ते अभक्ष्यज छे. चलितरसमां जे जे काळमान कह्युं छे ते ते वस्तु उत्कृष्टा काळ सुधी आचरणीय, त्यारपछी कदाच निश्चयथी चलित न थइ होय तोपण ते व्यवहारथी अनाचरणीय छे–एटले काळमाननो अर्थ एवो थयो के जे मर्यादा जे काळनी आचार्य महाराजे बतावी छे ते पछी तो ते वस्तु नज वपराय, अने काळमान पहेलां जो वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, पलटाय के ते अभक्ष्य जाणी त्यारथी ज वर्जवी ते खास ध्यानमां राखवुं.

१९. दूध चार प्रहर सुधी भक्ष्य छे, पण सांजनुं दोहेलुं दूध होय तेनो उपयोग मध्यरात्रि अगाउ थइ जवो जोइए. केटलीक वखत ग्रीष्म ऋतुमां दूध सख्त तापने लीधे के वधारे वखत रहेवाथी अथवा उपयोग पूर्वक शुद्ध वासणमां न राखवाना केटलाक कारणने पामीने बगडी जाय छे, अने कोइवार दहिंनी माफक जामी जाय छे, तेने दहिं थयुं समजी वापरवुं नहिं, कारण ते दूधना वर्णादिक पल-

टाया तेथी ते दूधज अभक्ष्य छे. कोइवार दूध फाटी जाय छे, ते पण तेना वर्णादिक फरवाथी अभक्ष्य मानवुं. केटलाक वेचनाराओ वाशी दूधनो भेग करे छे, कलकत्ता तरफ रात्रे दूध खूब गरम करी तेमांथी मलाइ काढी तेमां सींगापुरथी आवता आरारूट (एक जातनो आटो) नो भेग करी सवारमां ताजुं दूध कही वेचे छे. पोताना तुच्छ स्वार्थने माटे बंधुओ ! आ लोको शुं शुं नथी करता, अर्थात् तेओ प्रायः दरेक वस्तुमां कूडकपट करे छे. तेनो बारीकीथी तपास करवो, तथा बनतो उपयोग राखवो. बगडेला वाशी दूधनुं दहिं, दूधपाक, बासुदी, मलाइ, मावो वगेरे पदार्थो पण अभक्ष्य थाय. ते लोको जे दूध दहिं प्रमुख प्रवाहि पदार्थना वेचवावाळा छे तेओ ते वस्तुना वासण उघाडां अजयणाथी केटलीक वखत राखे छे, तेथी थोडा वखत उपर काठियावाडमां जुनागढ शहेरमां एक दूधना वेचनाराए तेनुं दूध एक दिवस ज्यां ज्यां आप्युं त्यां त्यां जेओए ते दूध वापर्यूं तेओने कलाकोना कलाको सुधी झाडा, उलटी तथा अत्यंत बेचेनी भोगववी पडी. जे तपास करतां मालुम पडयुं के ते दूधमां कोइ जीवनी लाळ प्रमुख झेरी पदार्थ पडेलो होवाथी तेओने बिमारी भोगववी पडी. कोइवार सर्प प्रमुखनी लाळ (विष) पडवाथी ते वपरावाथी मृत्यु पामवा संभव छे; तेटलाज माटे शास्त्रकारे दश जग्याए चंदरवा राखवा कह्युं छे. वळी एक मीनीट पण पाणी, भोजन प्रमुखना वासण उघाडां न राखवा वगेरे प्रकारनी यत्ना जे आ ग्रंथमां कही छे ते शारीरिक तथा धार्मिक बन्ने लाभने माटे छे, जेथी अवश्य उपयोग राखवो. बंधुओ ! आ उत्तम जैनधर्ममां प्रकाशेली यत्ना अथवा दया

खरेखर तेना पाळनाराने शीघ्र मुक्तिना वासने पमाडनारी छे. खरे-खर जैनधर्मनी बलिहारी छे! दोहेलुं दूध जेम बने तेम तुरत वेळासर गरम करी राखवुं जोइए, नहितर ठंडु दूध थोडा वखतमां बगडी जवा संभव छे. मुनि महाराज पण ठंडु दूध वहोरता नथी ते तेवुंज कारण होवुं जोइए; तथा दूध गाळीने गरम करवुं जोइए.

दुधने गळ्या विना न खावानुं अन्य धर्ममां पण कहेलुं छे, अने जैनशास्त्रमां गलणां ७ कह्यां छे.—

१ मीठापाणीनुं, २ खारापाणीनुं, ३ गरमपाणीनुं, ४ दुधनुं, ५ घीनुं, ६ तेलनुं अने ७ आटो चाळवानुं.

दुध वेचनारा दुधमां थोडुं पाणी भेळवे ते अणगळेलुं पाणी जंतुवाळुं के बाऊ पडेलुं होय.

गायनुं, भेंशनुं बकरीनुं अने गाडरीनुं ए ४ दुधने दुधविगयमां शास्त्रे गण्युं छे, तेथी बाकी बीजा जनावरोनुं दुध खावामां दोष छे. जलदी अभक्ष्य थइ जाय छे, तेवुं दुध रोग उपजावे छे.

२०. घी खोरुं कालातीत थये वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, फर्ये अभक्ष्य थाय. घीमां केटलाक दगाखोर लोको चरबीनो तथा बटेटा रताळु प्रमुख कंदनो भेग करे छे तेनो अवश्य उपयोग राखवो; परीक्षा वगर कोइपण माल लेवो नहि. वळी जे लोको घी बनावे छे ते घणाखरा सात आठ दिवस के बे चार दिवसनुं माखण एकठुं करी बनावे छे (तावण मूके छे) ते अभक्ष्य गणाय. तेने माटे जेने घेर

गाय भेंस होय तेज खरो उपयोग राखी शके. छाश (अल्पनी) साथेज के छाशथी जुदुं पाडतां माखण तुरत चूला उपर मूकी देवुं जोइए; पण ज्यारे श्रावको स्वघेर अंतर्मुहूर्त्त उपरांत के कलाकोना कलाको वाशी माखण राखी मुके त्यारे बीजाओने तो शुं दरकार होय? अंतर्मुहूर्त्त एटले जघन्य नव समयथी मांडी उत्कृष्ट बे घडीमां कांइक न्यून काळ तेने अंतर्मुहूर्त्त कहेल छे–एटले एक आंखनो पलकारो मारीए तेटला वखतमां असंख्य समय थइ जाय छे. तेथीज माखणनी बाबत बहु उपयोग राखवो उचित छे, आपणा प्रमादमां अहाहा! असंख्य जीवोनो विनाश थइ जाय छे. हे बंधुओ! श्री जिनशासनमां आपणे आवो अत्युत्तम अवसर प्राप्त थयो के जेथी सुक्ष्म बाबतोनुं जाणपणुं थाय छे. अहो! केवली भगवंत वगर बीजुं कोण कही शके? अर्थात् त्रणकाळना भाव जेनाथी एक समयमां जणाय ते केवळज्ञानथी प्रभुज प्रकाशी शके. बंधुओ! चालो हवे आपणे आ उत्तम अवसरने प्रमाद त्यजी हर्षवडे वधावी लइए, अने "जीवदया प्रतिपाळक" ए नाम सार्थक करी मंगळमाळा वरीए.

२१. बळी—प्रसुतिवाळी गाय तथा भेंसना तरतना दूधनी बळी बनावे छे. गायने प्रसुति थइ होय त्यारथी तेनुं दूध १० दिवस, भेंशनुं १५ पंदर दिवस, बकरीनुं ८ आठ दिवस सुधी लेवुं कल्पे नहि, त्यारे तेनी बळी क्यांथी कराय ने वपराय? अर्थात् नज खवाय.

२२. खाटां ढोकळां—जे चोखानी कणकी, अडदनी [1]दाळ तथा चणानी दाळने[2] भरडीने छाशमां आथो करी बनावे छे, ते रात्रे

१-२ कठोळ काची छाशमां आपे तो द्विदल दोष थाय.

आथो कर्यो होय तो अभक्ष्य छे. माटे सूर्योदय पछी आथीने करवां अने सूर्यास्त पहेलां वापरवां जोइए. बंधुओ ! आवी वस्तुओ मख-खना बीजा दिवसे शीरामण थाय ते खरेखर श्रावक कुळने शुं शर-मावा जेवुं नथी[1] ? टाढा रोटली रोटला, थेपलां, नरमपुरी, भजीयां,

---

१ वळी केठलाक दाळ कढी वगेरे रांध्युं धान्य आपी दातण जेवी नमाली चीज खरीदे छे ते विशेष शरमावा जेवुं छे. देखादेखीथी बीजी नातना के बीजा कूळ धर्मवाळानी स्त्रीओ पोताना वस्त्र मफत धोवरामणनो बदलो धोबीने हमेशां रांधेल अनाज दाळ कढी आपे छे एवुं जोइने श्राविकाओ तेवुं करे तेने जोइने घरधणी वारी राखे नहीं तो गुरु महाराजे समजाववुं जोइए के—

धोबीने तथा वाघरीने धंधो छे के तेओ वाशी राखे छे, वाशी खाय छे, अने वाशी कोहेलुं धान्य लुगडांओने आर देवामां वापरे छे, पण तेओ कांइ फेंकी देता नथी, त्यारे श्रावकोए वाशी राखवुं के खावुं नहीं, पण वाशी रखाववुं तथा खवराववुं एम थया करे छे—एटले वाशीनी जीवहिंसा करवी के करावी तेनुं सरखे सरखुं पाप उभुं रहे छे.

श्राविकाओ पोते धोवा के न्हावा मारु नदी तळावे जाय छे, तेमां पर्वतिथिने पाळवानुं पुन्य ले छे, अने धोवरामणना पैसा बचा-ववा पोते रांधेलुं आ रीते वेचीने पाप ले छे त्यारे वाशीमां त्रस जीवो बे इंद्रिय उपजे छे तेनी श्रद्धा क्यां रही ?

धोबी तथा वाघरीने देवा मारु घरमां खातां खातां जे दाळ

ढोकळां अने छाश छांटया वगरनो भात प्रमुख वाशी चीजो रा- त्रीने खावाथी एक तो अनेक जीवोनो विनाश थाय, प्रभुनी आज्ञा लोपी कहेवाय, वळी शरीरमां अनेक रोगनी उत्पत्ति थाय, माटे दरेक चीज ताजे ताजीज खावी युक्त छे. नानां बच्चांओने शीरामण व- गर न चाले ते स्वभाविक छे; तो जेम गुजरात तरफ घउंना तद्दन पातळा खाखरा शेकी राखी वापरे छे ते बाबत खास करीने काठी- यावाडी, मारवाडी, भाइओए तथा ते शिवाय जेओ वाशी वापरता होय तेओए अनुकरण करवुं घटे छे; पण अफसोस तथा खेदजनक ए छे के प्रायः घणीखरी अज्ञानरूप मिथ्यात्वजाळमां फसायेली जैन स्त्रीओ पोताना बच्चांनुं रक्षण करनारी शीतळा माताने मानी, शील सातमने दिवसेज खास आगले दिवसे रांधेलुं होय ते वाशीज वापरे छे, अने ते दिवसे चूलाने (शीतळा) शांत करे छे. पण बं- धुओ खरेखर आपणामांज स्वशक्ति पुरुषार्थपणा (Moral Courage) नीज खामी छे नहितर शुं तेओ तेम वाशी खाइ के खवडावी शके? आपणे ज ते अज्ञान स्त्रीना मनरंजन अर्थे के दाक्षिण्यताए अथवा

कढी वगेरे एठुं करेलुं छतां वधेलुं राखी मुके, तेओने त्रसजीव समु- र्च्छिम पंचेंद्रिय मनुष्यो असंख्यनी हत्या लागे छे, अने ते उपरांत वाशीना त्रसजीवनो विनाश जुदो.

श्रावक भाइओए पोताने घरे लुगडां धोवरामण खर्च करवानी अथवा स्त्री पोते धोवे तेम नहीं होय तो काचुं अनाज देवानी फरज समजाववी जोइए.

तो आपणा पण मिथ्यात्वना उदये तेने उत्तेजन आपी स्वआचारथी भ्रष्ट थइ शीळ सातमने दिवसे मोटो अनर्थ के सत्यनो नाश करीए छीए. खरेखर आथी वधु धिक्कार पात्र अति निंदवा योग्य मिथ्यात्व कर्तव्य बीजुं शुं ? बंधुओ ! पण तेथी अनंता संसारनी वृद्धि थवाथी आपणो मनुष्य जन्म व्यर्थ गुमावी दइए छीए ते विचारो ! समजो ! ने शीळ सातमनो मिथ्यात्व आचार छंडी वाशी चलित रस कदि न वापरवुं एवी दृढ प्रतिज्ञा करो, जेथी सहेजे स्वभाविक सुख विलसीए.

२३. घोलवडां–(दहींवडां)–जो ते उकाळेला गोरसमां कर्यां होय तोज तेज दिवसे भक्ष्य छे. काचा गोरसमां सर्वथा अभक्ष्य छे.

२४. खाखरा—जे उपरज जणाव्युं छे के गुजरात तरफ घउंना शेकेला खाखरा करे छे ते पांच सात के तेथी वधारे दिवस सुधी राखी मुकाय छे, अने वपराय छे; पण जुना खाखरा उपर नवा पडता जाय अने उपर उपरथी नवा वपराय ने जुना पडया रहे तेम करवुं युक्त नथी नथी. वळी तेनी कोठी के जे वासणमां भरता होय ते साफ राखवुं, नहितर तेमां धनेडां प्रमुख त्रस जीवनो पेसारो थाय, चोमासामां तो लीलफुग पण थइ जाय, जेथी आ बाबत खास उपयोग राखवा ध्यान देवुं उचित छे.

२५. पापडना लुआ, वडां, पोळी—अडद मग प्रमुखना पापडना लुआ तथा अडदनी वाटी दाळना वडां अने पोळी एटले

नरम पुरी के रोटली (पुरणपोळी—वेढमी) सवारे कर्यां होय तेनो काळ चार प्रहरनो कह्यो छे.

२६. जुगलीराब—जुवारना लोटने छाशमां रांधी घश्च (विदल विनानी) करै छे ते जुगली राबनो काळ (१२) बार प्रहर छे, ते उपरांत अभक्ष्य छे. धान्य थोडुं अने छाश घणी होय ते जुगली राब; अने जेमां छाश थोडी अने धान्य विशेष होय ते घेंस कहेवाय छे. तेनो काळ ८ प्रहरनो छे.

२७. रायतुं—केळां, द्राक्ष, खारेक प्रमुखनां रायतां *करै छे तेनो काळ १६ सोळ प्रहरनो कह्यो छे. जो ते रायतुं विदल साथे वापरवुं (जमवुं) होय तो दहि खुब गरम करीने बनाव्युं होय तो वपराय. कळी (सेव), गांठीया, बुंदी प्रमुख नांखीने रायतुं करवुं होय तो अवश्य दहि प्रथम गरम करीने ज विदल मेळववुं जोइए; अने ते रायतां सांज सुधीज भक्ष्य छे.

२८. शेक्युं धान्य—ते दाळीया (चणा), धाणी, मरमरा, पहुवा प्रमुख शेकेलां धान्य छे तेनो काळ कडाविग[1] ईनी प्रमाणे छे—एटले चोमासामां उत्कृष्ट १५ दिवस, शियाळामां एक मास, तथा उन्हाळामां २० दिवस मुजब गणवो.

---

* जेमां अन्ननुं मिश्रण न होय तेवां.

१ तळाइने उपर आवे तेवां पकवान—भजीयां, पुरी, तळेल चुरमाना लाडु वगेरे.

२९. ढुंढणीआ—के जे काठीयावाडमां करे छे ते जुवार बाजरीने पाणी नांखतां जाय अने खांडे, पछी सुकवी तेनां फोतरां उखेडीने राखे छे; तेनो काळ शेकया धान्य मुजब एटले वर्षाऋतुमां १५ दिवस, शियाळामां एक मास तथा उन्हाळामां २० दिवसनो छे.

---

२२. बत्रीश अनंतकाय.

सर्व अनंतकाय अभक्ष्य छे, कारण के एक सोयना अग्र भाग उपर रहे तेटली कंदमूलनी कळीमां अनंता जीव रहे छे. ते माटे सर्व अनंतकाय अभक्ष्य छे ते श्रावके अवश्य वर्जवां जोइए. कारण के एक जीह्वा इंद्रियनी लोलुपता माटे अनंता जीवनी हानि करवी ते महा अनर्थनुं कारण छे, तेथी बत्रीश अनंतकायनो सर्वथा त्याग करवोज जोइए, के जेथी अनंता जीवने अभयदान मळे. केटलाक जीह्वा इंद्रियने वश थइ "मारे वर्षमां पांच शेर के दश शेर खपे" एवो नियम करे छे, पण हे सुज्ञो! शुं ते अभक्ष्य चीजो वगर आपणो निर्वाह थवो अशक्य छे? दुनियामां क्यां बीजी वनस्पतिनो काळ पड्यो छे? वळी पांच शेर के दश शेर एवी छुट आत्री आवी अभक्ष्य वस्तुनी राखवी ते आगारमां कदि कहेवाय नहि. पुद्गलिक

सुख माटे अभक्ष्य वस्तु खावानी छुट राखवी ते कया प्रकारनो आ-गार ? जुओ के मरणांत कष्ट प्राप्त थतां पण वंकचूल कुमारे अभक्ष्य वस्तुनो मनथी पण अंगीकार कर्यो नहि, तेवा सत्त्ववंत उत्तम प्रतिज्ञा पाळवावाळानी क्रोडोवार बलिहारी छे! अहोहो ! जेओ कर्मने वश थइ आंखो मींची जाणता छतां परभवनो लेशमात्र भय राख्या वगर आदु, मूला, गाजर आदि खाय छे तेवा विचारा (पामर) प्राणि-ओनी शी गति थशे ? श्रावक नाम मात्रथी श्रावक कहेवावुं ते अफसोस जेवुं छे. मनुष्यपणा साथे जैनधर्म पामी आ भव सफळ करो, के जेथी संसार भ्रमण मटे, अने अनुक्रमे शिव सुखना भोक्ता थाओ ! हे भ-व्यो ! आपने नम्रता पूर्वक विनंति करुंछु के बावीश अभक्ष्यनो श्री तीर्थंकर महाराजे निषेध कर्यो छे तेनो शीघ्रताथी त्याग करो, अने श्रावक नाम सार्थक करो, जैन बनो !

" बत्रीश अनंतकायनां नाम. "

१ भूमि मध्ये कंद थाय एवी सर्वे कंदजाति. २ लीली हळदर, ३ शृंगबेर–लीलुं आदु, ४ +सुरणकंद, ५ [1]वज्रकंद, ६ लीलो कचुरो, ७ सतावळीवेली औषधि, ८ [2]विरालीलताविशेष सोफाली, ९ कुं-आर (शेलरां पण वर्जवां[3]), १० थोहरीकंद (थोर) ते सीज तथा लंकासीजनी जाति. हाथीयो, कांटाळो डांडली वगेरे. ११ गिलो–गुलवेल (गलो), १२ लसण, १३ वांसकारेला एटले वांस संबंधीनी कारेली, १४ गाजर, १५ [4]लुणी एटले साजी वृक्ष, १६ लोढीपद्मनी कंद, १७ गरमर (गिरिकर्णी) कच्छ देशमां प्रसिद्ध छे. काठीयावाडमां तेनु अथाणु करे छे.

१८. किसलय पत्र—कोमल पांदडां जे नवा उगतां सर्वे गुच्छानां पांदडां, तथा सर्व वनस्पतिना जे उगती वखतना अंकूर होय ते सघळा अनंतकाय छे; एटले सर्व (प्रत्येक तथा साधारण)

+ मोरडनी भाजी. १ लसण. २ विरालिकंद–भोंयकोळुं. ३ शेलरां जे कुंवारपाठानां मध्य भागनो जे शट नीकळे छे तेना थाय छे. ते कुंवारपाठुं अनंतकाय होवाथी अभक्ष्य छे. माटे शेलरां पण अ-भक्ष्य जाणवा, कारण शेलरां तेनी मध्य दांडी छे ते सर्वथा वर्जवा युक्त छे. काठियावाडमां वपराय छे तो उपयोग राखवो. ४ लुणीनी भाजी कहे छे.

वनस्पतिना उगतां पांदडां अने अंकुर प्रथम अनंतकाय होय, पछी प्रत्येक वनस्पतिना थड पत्र अंकूरा अंतर्मुहूर्त्त पछी प्रत्येक रूपे थइ जाय, बीजा जीवो च्यवी जाय; अने साधारण वनस्पतिना थड पत्रादि सर्व काळ अनंतकायपणेज रहे. आ अनंतकाय पांदडानो सर्वथा त्याग करनारे (अथवा कर्यो होय तेओए) भाजी पांदडां वापरतां उपयोगथी वर्तवुं, नहितर सहसा दोष लागी जाय. कारण - मेथी वगेरेनी भाजीना मूळीआ आगळ बे पांदडां जाडां होय छे तेने अनंतकाय कहेवामां आवे छे; तथा भाजीना पांदडाना मूळमां झीणां अंकूरा फुटे छे; वळी थेग प्रमुखनी भाजीनां पांदडा पण होय छे, जेथी तेनो उपयोग रहे नहि तो दोष लागे. माटे कांतो प्रथमथी तेनी जयणा राखवी, अने ते किसलय पत्र न खवाय तेनो उपयोग राखवो-खप करवो.

१९. खीरसुआकंद—कसेरु (खरसइयो); २० थेगकंद.-थेगी तथा थेग नामनी भाजी थेगीपोंक. २१. हरिमोथ (लीलीमोथ); २२ लुण वृक्षनी छाल; २३ खिलोडाकंद, २४ अमृतवेली.

२५. मूळा—देशी तथा परदेशी (राता ने धोळा-सफेद) मूळाना पांचे अंग अभक्ष्य छे; (१) मूळानां कंद (कांदा), (२) पांदडाना मध्यभागमां जे कंदली थाय छे जेने डांडली कहे छे ते पांदडा सहित, (३) फुल (४) फळ जेने मोगरा कहे छे ते, तथा (५) तेमांथी नीकळेलां झीणां बीज, ए पांचे अभक्ष्य छे. वळी त्रस जीवोत्पत्ति पण तेमने विषे होय तेथी सर्वथा मूळानां पंचांग वर्जवां.

२६. भूमिफोडा—वर्षाऋतुमां छत्रने आकारे उगे छे.

२७. वथुलानी भाजी (प्रथम उगती)

२८. वरुहार—एटले विदल धान्य जेने अंकुर आव्या होय ते. रात्रे जे कठोळ पाणीमां पलाळे छे तेमां अंकुरा फुटेला होय छे ते अनंतकाय होवाथी अभक्ष्य छे, माटे सवारना पांच छ वागे पलाळवा, ते पण थोडो वखत राखवा. (नहितर बेचार कलाक लगभगमां पण अंकूरा फुटी जाय.) मतलब के अंकुरा फुटवा न जोइए. खरी रीते तो दरेक कठोळ बाफीने कराय तो तेमां अंकूरा फुटवाना भय नथी. स्वजन कुटुंब के नातमां जमवा जतां खास उपयोग राखवो, कदाच त्यां रात्रेज कठोळ पलाळी शाक बनाव्यां होय तेथी दरेक चीज खातां पहेलां प्रथमथीज भक्ष्याभक्ष्यनो विचार करवो उचित छे.

२९. पल्लंकानी भाजी.

३०. सुअरवल्ली. जे जंगलमां मोटी वेलडीना जेवी थाय छे ते.

३१. कोमळ आंबली—ज्यां सुधी मांहे बीज संक्रमे नहि त्यां सुधी अनंतकाय छे. कोमळ फळमां ज्यां सूधी अंदर बी न थयां होय त्यां सुधी अनंतकाय छे, माटे अति कोमळ एवां सघळां फळ खावां वर्जवां.

३१-३२. आलुकंद—ते रताळु-बटेटां अने पिंडाळु[1]

---

१ कोबी पण पश्चिम देशनी डुंगळी के मूळानी जात संभवे छे.

(डुंगळी) सकरकंद; तथा घोषातकी अने करीर-केरडा ए बे वनस्पतिना अंकूरोने अनंतकाय कहे छे. तिंदुक वृक्षना अति कोमल फल, जेमां गोटळी बंधाणी न होय एवा आंबा प्रमुख तथा वरुण जातना वृक्ष विशेष तथा वडनुं झाड अने निंबादी जातना वृक्षना अंकूर ते सर्व अनंतकाय जाणवा.

ए प्रमाणे अनंतकाय जातिनां प्रख्यात नाम बत्रीश छे, अने विशेष नाम तो अनेक छे. ते कोइ वनस्पतिना पांच अंग, कोइनां मूळ, कोइनां पान, फुल, छाल, काष्ठ अनंतकाय छे, एम कोइनुं एक अंग कोइनां बे, त्रण, चार अने कोइनां पांच अंग अनंतकाय होय छे. जे वनस्पतिना पत्र (पान), फल प्रमुखनी नस तथा संधि मालुम न पडे, गांठ गुप्त होय, जे भांगवाथी बरोबर भांगे, भांगेथी जेनो एकदम भुको थइ जाय के बुरबुर थइ जाय, छेद्या पछी फरी उगे, पत्र मोटां दलदार चीकणां होय, जेमां घणां फल पांदडां बहु कोमल होय ते सर्वे लक्षण अनंतकायनां छे. उपर कहेलां जेटलां साधारणना लक्षण छे ते बधांज एकमां होय एम संभव नथी, कोइकमां केटलांक होय अगर न पण होय. पोइनी भाजीनां पान तथा पिंद (एन्डीपेन्डी) अनंतकाय सांभळ्यां छे.

अनंतकाय आश्रयी सूचनाओ.

१. दूधना मावामां तथा घीमां बटेटां रताळु के सकरकंदना केटलाक दगाखोर भेग करे छे तेनो उपयोग राखवो.

२. लीलुं आदु तथा लीली हलदरनी वेचाती मळे ते सुक-वणी (सुंठ तथा हळदर) जे खावाना उपयोगमां आवे छे ते भक्ष्य छे, ते शिवाय कोइ पण अनंतकायनी सुकवणीनुं शाक अथाणुं प्रमुख वर्जवुं. गाजरनी सुकवणी, अथाणां के कुंआर, लीला हळदर, आदु गरमर प्रमुख अनंतकायनां अथाणां सर्वथा अभक्ष्य छे. निर्ध्वंस (निर्दय एवुं मन) परिणाम तथा निःशूक वृत्तिनो चडस, लोलुप-ताथी परंपरा वधे अने जोनारा अधर्म पामे वगेरे हेतु होवाथी कंद एवी कोइ पण चीजना भजीयां पण प्रासुक छतां शास्त्रमां वर्जवानुं स्पष्ट फरमाव्युं छे. श्रावके लीली हळदर, आदु घेर सुकववुं पण युक्त नथी.

३. बटेटां, डुंगळी प्रमुखनां भजीयां करे छे, तथा दुकानदारो ढोकळामां अभक्ष्य चीजो नाखे छे, वाशी राखी वेचवा सारु फरी उना करी दे छे, अने बजारु चटणीमां पण लसणनो स्पर्श के आदु वगेरे सोंघी अने अभक्ष्य चीजो नाखेली, वळी वाशी रहेली ते बे-वडा दोषवाळी होय, त्रस संसक्त थाय वगेरे कारणोथी पापभीरुए तेवी चीजो खाता पहेलां उपयोग करवो. बटेटां विगेरेना भजीयां जे तावडामां तळ्यां होय तेज तेलमां पछी बीजी भक्ष्य जातिनां भजीयां तळे तो ते पण वापरवा नहि. दाळमां केटलाक सूरण आदु नांखे छे; उंधीयुं बनावे छे, तेमां पण डुंगळी बटेटां प्रमुख अभक्ष्य वस्तुओ वापरे छे तेनो अने चटणी, दाळ, कढी विगेरेमां कोइ ज-ग्याए कोमळ आंबली नांखवामां आवे छे तेना, तथा मेळसंमेळ स्प-

र्शास्पर्शनो अवश्य उपयोग राखवो; अथवा तो भेळसंभेळनो अजाणतां, दाक्षिण्यताए आगार राखवो. आगारनो अर्थ एवो नहि के जाणता अमुक दोष सेववो.

४. मेथी, तांजळीया प्रमुखनी भाजीमां थेग तथा लुणीनी भाजी (अनंतकाय छे) ना डांखळाओ आवेल होय ते काढी नांखवा, छतां अजाणतां आवी जाय तेनी जयणा राखवी. वळी मेथी प्रमुखनो भाजीनां हेठलां बे पानने अनंतकाय कहे छे, ते प्रथमथीज काढी नांखवा.

पुस्तकांतरमां बावीस अभक्ष्य नीचे मुजब पण छे.—

पंचुंबरि चउ विगई अणायफल–कुसुम हिम विस करे अ।
मट्टि अ राईभोयण, घोलवडा रिंगणा चेव ॥१॥
पंपुट्टय सिंघाडय, वायंगण कायवाणिय तहेव।
बावीस दव्वाइं अभक्खणीआइं सड्ढाणं ॥२॥

अर्थः—१ गुलर, २ प्लक्ष, ३ काकोदुंबरी, ४ वड, अने ५ पीपल, ए पांच जातिना फळ; ६ मांस, ७ मदिरा, ८ माखण अने ९ मधु ए चार विकृति (महाविगइ)–विकार करनारी विगइ; १० अजाण्युं फळ; ११ अजाण्यां फुल; १२ हिम (बरफ); १३ विष; १४ करा; १५ सचित्त माटी; १६ रात्रि भोजन; १७ घोलवडां–काचा दूध दहिं छाश साथे मिश्र करेल विदल (कठोळ); १८

रींगणा; १९ पंपोटा-खसखसना दोडा (खसखसनो सर्वथा त्याग करवो); २० सिंगोडा (जो के ते अनंतकाय नथी तथापि काम वृद्धिजनक होवाथी वर्जनीय छे); २१ वायंगण; अने २२ कायंबाणि.

एटले प्रथम कहेल बावीस अभक्ष्य साथे आ गाथामांनां ११, १९, २०, २१, २२ नामवाळां अभक्ष्य विशेष छे ते पण वर्जवां.

अभक्ष्य अनंतकाय वगेरे अचित्त करेलुं होय तोपण नज खावुं, कारण एक तो निःशूकता तथा बीजुं रस लंपटता तथा प्रसंग दूषण थाय ते माटे वर्जवुं. सुंठ तथा हलदर नाम तथा स्वाद फेर होवाथी अभक्ष्य नथी. आ अभक्ष्योमां अफीण भांग प्रमुख जेनुं प्रथमथीज व्यसन लागेलुं होय तेनी तोल मापथी जयणा करे. तथा रात्रि भोजनमां चउविहार, तिविहार, दुविहार एक मासमां आटलां करुं एवो नियम करे; तथा रोगादिक कारणे कोइ औषधिमां कोइ अभक्ष्य खावुं पडे तेनी नाम तथा वखत अने वजननी जयणा राखवी पडे. जूओ बत्रीश अनंतकायनो सर्वथा निषेध छे तोपण रोगादिक कारणे औषधमां लेवुं पडे तेनी जयणा राखे, तेथी अजाणपणे कोइ वस्तु मिश्र थइ खावामां आवे तो व्रत भंग थाय नहि. आगळ सर्वथा एटले रोगादिक कारणे पण न लेवु तेम लख्युं छे ते उत्कृष्टी हदवाळा माटे छे, माटे जेनाथी जेम पळाय तेम यथाशक्ति करवु उचित छे.

" श्रावके अन्य दर्शनीने घेर के नातमां जमवा जतां घणो उपयोग राखवो जोइए, कारण के त्यां बावीस अभक्ष्य अने बत्रीश अनंतकायोमां केटलाकनो दोष अवश्य

लागवा संभव छे, तेथी बने त्यां सुधी थोडोज परिचय राखवो. तेमां पण द्वादश व्रतधारी तथा विरतिवाळाए तो तेवे स्थळे जमवा जवुंज नहि."

बावीश अभक्ष्यनुं जे वर्णन कर्युं ते बरोबर समजी मनन करवुं, तथा ते भगवंते निषेधेल छे तेथी प्रभुनी अखंड आणा पाळवी. बंधुओ ! आपणे नित्य पूजा करीए छीए ते पेहेलां मस्तके आपणे पोते जे तिलक करीए छीए ते एमज चिंतववारूप छे, जे हे भगवंत ! आपनी आज्ञा हुं शिरे चडावुं छुं, तेवी रीते नित्य भगवंतनी आणा-रूपीज तिलक करीए छीए, जेथी भगवंतनी आणा कदि लोपवी नहि अने सादरपणे पाळवी तेज धर्म छे. आ अभक्ष्यो सर्वथा प्रकारे वर्जवाथी असंख्य अने अनंत जीवोने अभयदान आप्यानुं फळ छे. शास्त्रमां कह्युं छे के एक जीवने अभयदान आपो के सुवर्णना मेरुना जेटलुं दान आपो तो तेमां एक जीवने अभयदान आप्यानुं फल वधशे, त्यारे अनंत जीवोने जे पुण्यात्मा अभयदान आपे ते शुं फल न पामे ! अर्थात् सर्वस्व ते पामे. पण सुज्ञ शाणा बंधुओ ! ते अजरामर सुख पामवानो शीघ्र उपाय भगवंतना वचननो आदर करवो तेज छे. ते विषे अजितशांतिनी छेल्ली गाथामां कह्युं छे के " जइ इच्छह परमपयं"–"जो तमे उत्कृष्टपद–मोक्षनी इच्छा करो छो अथवा त्रण भुवनने विषे विस्तार पामेली एवी कीर्त्तिनी इच्छा करोछो तो त्रण लोकना उद्धार करनारां एवां जिन वचनोने विषे आदर सत्कार करो!" हवे जे मूढ अज्ञानी पुरुषो कहे छे जे खावुं पीवुं अने मोज

माणवी ते खरुं सुख छे तो ते भोगवी लीयो ! वळी मोक्ष मळवानुं हशे तो मळशे. तो तेवा जड प्राणीना हित अर्थे पद्मविजयजी महाराजे तपपदनी पूजामां कह्युं छे—

तप करीए समता राखी घटमां ॥ तप ॥
खावत पीवत मोक्ष जे माने,
ए सिरदार छे बहु जटमां ॥ तप ॥

एटले खावुं पीवुं तेज मोक्ष छे एम माननार पुरुष घणा मूर्खमां सरदार छे, तेथी हे भव्यो जिनशासननुं रहस्य समजी "देहे दुखं महा फलं" ए अनुसार वर्तवाथी क्षेमकुशळ मोक्षनगरे सत्वर पहोंची जइशुं.

" बावीश अभक्ष्य उपरांत बीजी केटलीक चीजो अभक्ष्य छे, ते तथा केटलीक अमुक काळ भक्ष्य बाकीना काळमां अभक्ष्य छे तेनी विगत.

१. फागण चोमासा (फागण शुद १५) थी कार्तिक चोमासा (कार्तिक शुद १५) सुधी बन्ने जातनो खजुर, बन्ने जातना तेल, खसखस[1], खारेक, काजु वगेरे मेवो, तथा भाजी (पांदडा मात्र) अभक्ष्य छे. फागण चोमासु बेठां पहेलां तलनुं तेल आठ मास माटे आगळथी भरी राखवुं, कारण के त्यारथी घाणीनी आसपास घणा जीवनी हानी थाय, वळी तलमां त्रस जीवनी उत्पत्ति थाय, तेथी आठ मासनुं तेल भरी राखवुं जोइए. तलसांकळी, तलनो लाडवो, रेवडी प्रमुखनो त्याग करवो. फागण पछी खप होय तो तलने अगाउथी ओसावी राखे छे.

---

१ खसखस ते बहुबीजमां तथा 'पंपुट्टय' ए अभक्ष्यमां कहेल छे ते अपेक्षाए तो सर्वथा वर्जनीय छे. कोइ फागणथी कार्तिक चोमासा सुधी आठ मास अभक्ष्य कहे छे. मुनि महाराज जे वस्तुमां खसखस नांखेल होय ते वहोरता नथी; जेथी श्रावके ते वापरवी युक्त नथी. चुरमाना लाडु, घुघरा प्रमुख मिठाइमां खसखस छांटे छे तो तेनो उपयोग राखवो.

होळीना रोजथी काळ (ऋतु) बदलातां अनेक चीजोमां त्रसजीव उपजे छे.

खजुर साथे हारडो आपवानो जे अन्य ज्ञातिनो रीवाज श्राव-कोमां पण पेसी गयो छे, तेथी एक तो खजुर अभक्ष्य (हुताशणीना दीवसेज आपे माटे) ते खावो पडे अने बीजुं होळीनुं पर्व करवुं ते मिथ्यात्व छतां आदरवुं; एम बेवडा दोषथी छुटवानो रीवाज बंध करवो जोइए, पण अणछुटके वर कन्याने देवुं पडे तो फक्त साकरज आपवानुं ज्ञाति बंधारण दरेक गामना आगेवानोए करवुं योग्य छे.

खारेक पण खजुर जेवी हुताशणीथी अभक्ष्य छे, छतां लग्न प्रसंगे वहेंचाय छे माटे तेना बदले पतासां के साकर वहेंचवानो रीवाज करवो ठीक छे.

काजुना मींज, अंगुर, सुकां अंजीर अने चारोळीना मींज वगे-रैमां जीवो पडेला प्रत्यक्ष जोवाय छे. एवी चीजो फक्त शीयाळा लायक होइने आठ महिना (कार्तकी १५) सुधी मेवो अभक्ष्य कहेल छे.

भाजी के पान जे शाक तथा भजीयां के ढोकळां माटे छतां आठ महिना के अधिक मास होय तो नव महीना तेमां त्रसजीव उपजेला होय छे तेथी अभक्ष्य छे.

भाजी अने पान सर्वे आठ महीना त्याग करनाराओए नाग-रवेलीना पान पण वापरी शकाशे नहीं, तथा कढीमां मीठो लींबडो नंखाय छे ते पण नहीं खवाय एम ध्यानमां राखवुं.

२. अशाड चोमासा (अशाड शुद १५) थी कार्तिक चोमासा सूधी सूको मेवो–बदाम, पीस्तां, चारोळी, काळी राती धोळी खीसमीस–द्राक्षनी जात, अखरोट, कुंकणी केळां, जरदाळु, अंजीर, मगफळी, सूकुं टोपरुं, सूकी रायण, काची खांड, सूकां बखाइ बोर विगेरे अभक्ष्य छे. कारण के तेमां तद्वर्णा जीव[1], कुंथुआदिक त्रस जीव, लीलफुग तथा इयलोनी उत्पत्ति थाय छे. तेज दिवसनी ताजी फोलेली बदाम, पीस्तां तथा पाणीचा नाळीयेरनुं टोपरुं तेज दिवसे वापरी शकाय. बदामना मींज तथा पीस्ताना मींज तैयार आवे छे ते न वपराय. नाळीयेरमांथी भांगाने सूकुं टोपरुं काढ्युं होय तो ते पण तेज दिवसे खाइ शकाय, पण जो लीलुं के सूकुं टोपरुं खमणीने घीमां तळी नांख्युं होय तो बीजे दीवसे वापरवामां बाधक जणातो नथी; कारण के प्रायः आपणे वध्युं होय ते नांखी तो देता नथी, तेथी रूपांतर फेरववाथी दोष लागवा संभव जणातो नथी. केटलाक सूको मेवो फागण चोमासाथी अभक्ष्य गणे छे. अपेक्षाए ते पण सत्य जणाय छे, कारण के चैत्र वैशाखमां काळी द्राक्षमां प्रत्यक्ष तपासतां इयळो जोइ छे, तो द्राक्ष जरदाळु, अंजीर जेवा गळ्या स्वादिष्ट पदार्थमां जीवोत्पत्ति वहेली पण थवाथी ते त्यारथीज अभक्ष्य गणी वर्जवुं श्रेष्ठ छे. रसस्वादनो जय तथा मूर्छात्याग जेम बने तेम करवाथी लाभज छे. द्राक्ष, अंजीर, बदाम, पीस्तां, चारोली प्रमुख केटलाक वेपारी गया वर्षनो माल वधी पडवाथी वेचे छे, तो ते चीजो खरी-

---

१ तद्वर्णा जीव थाय छे एम सांभळ्युं छे, तत्त्व ज्ञानी जाणे.

दतां परीक्षा करीने लेवी; बने त्यां सूधी जातेज माल लेवो, नहिंतर जाणीता हुशियार माणस पासेज मंगाववो, नहिंतर नोकर चाकरना हाथे तो प्रायः वेठज थाय; माटे तेनो उपयोग राखवो जोइए.

३. चोमासामां (अशाड शुद १५ थी कार्तिक शुद १५) सूकवणीनो सर्वथा त्याग करवो, केमके ते (सूकवणी शाक)मां त्रस जीवनी उत्पत्ति तथा लीलफुग थाय छे. उन्हाळागां पण सूकवणी संभाळपूर्वक न राखवाथी जीवोत्पत्ति थाय छे; वळी जेओ सूकवणी तैयार वेचे छे तेओने तो वेपार करवो एटले हलकी सडेली लीलोतरी पण खरीदीने जोया तपास्या वगर छेदन भेदन (समारवुं) करे तेथी जीवहिंसा वधारे थाय. चोमासामां तो सूकवणी[1] तद्दन वर्जवी. पांच परवी के दश परवी (पर्व)–तीथी लीलोतरीनो त्याग कर्यो होय तो जे दिवसे तिथी होय तेना आगले दिवसे भींडा, चीभडां प्रमुख लावी, (के होय) तेना संभारो, अथाणां के चटणी प्रमुख करेल तिथीना दिवसे वपरायज नहि; आम जो थाय अने थतुं होय तो ते खरेखर हास्यजनक छे. तृष्णारूपी वेलडी तो वींटाणी छे, त्यारे आवी कुयुक्तिओ योजी पोतानो मिथ्या प्रयास सफळ मानी स्वपरनुं हित करवाने बदले अहितज करे छे, अने तेथी धर्मनी हांसी के हिलना सिवाय बीजुं कांइ थतुं नथी. हे सुज्ञो ! एवी आपणी कुयुक्ति होय तेने देशवटो देवो, जेथी स्वपरनुं हित थाय.

---

१. बनतां सूधी तो सूकवणी सर्वथा वर्जवी एज श्रेष्ठ वात छे.

४. पोंक—पापडी, घउं तथा बाजरानी उंबी, जुवारनो पोंक, चणाना ओळा, मकाइ (आखा शेकेला) तथा पापडी तथा चोळानुं मुठीयुं (माटलामां आखी ने आखी बाफेली) नो अवश्य त्याग करवोज जोइए, केमके आ पदार्थो घणा त्रस जीवोना विनाशथी बने छे.

५. कोइ पण वनस्पतिनो भडथो करवो नहि, तेम करेल खावुं नहि.

६. नागरवेलनां पान—कुंथुआदिक त्रस जीवे करी सहित एवां नागरवेलीनां पाननो त्याग करवो; कारण के ते पाणीमां बहु वखत रहेवाथी अपकाय (पाणी) ना जीवनी बहु विराधना थाय अने जेम पाणीमां सेवाळ थइ जाय छे तेम पान उपर पण थती संभवे छे, ते अनंतकाय छे, तेथी अनंत जीवनी हानि थाय छे. बीजा मुखवास अनेक प्रकारना छे, तेथी आ चीजनो त्याग करवो युक्त छे, वळी ते गुणकारी पण संभवता नथी, केमके कामविकारनी वृद्धि करनार छे; ब्रह्मचारी पुरुषने तो सर्वथा वर्जनीय छे. जेओ पाननां निरंतर खावावाळाज छे, अने वर्जी न शके तोपण तेओए उपयोग पूर्वक शोधीने वापरवां युक्त छे.[1]

---

१. पान खानारां तेनी नसो काढे छे, मुख्य कारण तीहां तंबोळीया नाग पण कदाचित होय छे एम कहे छे. नागरवल्लीना पानने वेलडी उपरथी तोडया पछी गमे तेटला दिवस थया होय छतां

७. परदेशी मेंदो—जे कलकत्ता, अमदावाद, मुंबइ वगेरे ठेकाणे आटानी मीलो-संचामां बनावे छे, अने पछी आपणा माटे जथाबंध माल पूरो पाडे छे, ते आवतां पण लांबो मुदत थाय, तेम आपणा वेपारीने त्यां पण केटलाक दिवस के अठवाडीयां ते माल अकबंध रहे, ज्यारे ते लोटमां एकली जीवात इंडाळ तथा इयळो होय, अने केटलाक तो ते जीवोनां पुद्गल रह्यां होय, तेवा परदेशी मेंदानुं आपणे भक्षण करीए! अफसोस! आ वात मांसाहारिओ जाणे तो तेओ पण आपणी हांसी करे के " धन्य छे श्रावक भाइओ! हिंदुओ! तमारी अहिंसा ते केवी." अरे भव्यो! आ आपणे शेनुं भक्षण करीए छीए? बावीश अभक्ष्यना त्याग करवा साथे उभय लोकनी बीक राखी परदेशी मेंदानो सर्वथा त्याग करवो युक्त छे. कंदोइनी दुकाननी तेवी मीठाइ लेवी नहि के कराववी नहि, तथा तेनो व्यापार पण करवो नहि. आवी अभक्ष्य चीजो नातमां, के कोइने त्यां ज्यां वापरी होय तेवे ठेकाणे जमवा पण जवुं नहि. जेम परदेशी मेंदो अभक्ष्य छे तेमज पडसुदीनो लोट तथा रवो पण खावो युक्त नथी. चलित रसनी आपेली सूचना मनन पूर्वक वांचवी के केटला दिवसनो तथा केवो लोट भक्ष्य छे. ज्यारे आपणे प्रमादी थइ आवी वस्तुने उत्तेजन आपवा मंड्या त्यारेज तेने माटे मोटी मोटी मीलो-फॅकटरीओ उघडी छे; के जेथी अनेक जीवोनी हानि

सचित्त रही शके छे, केमके त्यां सुधी दरेक पाननी साथे जीवसंबंध कायम रहे छे, तेथीज ते लांबो वखत लीलां रही शके छे.

थाय छे. परदेशी मेंदानी मिठाइ—जेमके परसुदीनी पुरी, घारी, गळ्यां मोळां साटा, सुतरफेणी, गणगणगांठीआ, नानखटाइ, हींदु बीस्कुट, शेव प्रमुख अनेक मिठाइ, मेंदानी बनावे छे तेनो अवश्य त्याग करवो.

८. गळया काजु—गळया काजु जे कंदोइ बनावे छे ते प्रायः तपास्या वगर एमने एम आखा बनावे छे; जेमां त्रस जीव होवा संभव छे तेथी ते न वापरवा. कदाच खावानी इच्छा थइ होय तो काजुना बे पड जुदां करी साफ करी जीवनी यतना कर्या पछी घेर बनावी उपयोगमां लेवा. वळी सादा खावा ते पण बे पड जुदा करी जोइ तपासीनेज वापरवा, ते पण जे ऋतुमां अभक्ष्य होय त्यारे तो काजु नज वपराय ते उपयोग राखवो.

९. विलायती डबामां पेक करेल दूध (नेसल्स मील्क, मील्कमेइड मील्क वगेरे दश बार जातनां नामोथी वेचातां, ते मुसाफरीमां चा बनाववो होय तो दूधने बदले ते डबामांथी दूध वापरे छे), सीसामां पेक करेल केरी, मुरब्बा, गुलकंद प्रमुख तथा विलायती बिस्कुट विगेरे अभक्ष्य छे तेथी अवश्य त्याग करवो. उपयोग न करतां होइए तोपण आवी परदेशी के देशी अभक्ष्य चीजोनो नियम करवा के जेथी आश्रव न आवे. कारण के ज्यां सुधी कोइपण वस्तु उपरथी मूर्छा उतरी न होय त्यां सुधी यथार्थ फळ न मळे, तेथीज शास्त्रकारे कह्युं छे के मरुदेशमां जेम पान न मळे छतां पण नियम न करवाथी तेनुं त्यागफळ न पामे, तेथी खास नियम

करवो. नेसल्समील्क वगेरे जे विलायतथी आवे छे ते प्रत्यक्ष अभक्ष्य छे, तेथी तेनुं विशेष विवेचन करवा जरुर नथी. बंधुओ! आपणा शरीरमां रोग, सोग, दारिद्र वगेरेनो जे घणोज वास थइ गयो छे तेनां कारण आवी तुच्छ भ्रष्ट वस्तुओ वापरवानुज फळ छे; केमके 'आहार तेवो ओडकार' ए द्रष्टांतथीज समजी लेवुं. अहो! आपणां "उंटनां अढारे वांका" जेवानी शी गति थशे? हवे आ अभक्ष्य वस्तुओथी विरमवुं योग्य छे.

१०. सोडा, लेमोनेट, जीन्जर, रोझबरी, पीकमीअप, बील्कास, एलटोनीक, कोल्डड्रीन्क, कोल्डक्रीम, जीन्जरएललाइम, लीथीओ, अमरीक, चेरीसीडर, चेम्पेइनसीडर, क्वीनाइन टॉनीक, क्रीमसोडा प्रमुख केटलीक जातो शीशामां पॅक करेल होय छे ते अनाचरणीय छे, कारण ते शीशाओ मुसलमान, पारसी प्रमुख लोकोए मुखे मांड्या होय ते शीशाओ आपणे मुखे मांडवा तेथी साफ धर्मभ्रष्टता देखाय छे. वळी ते जीवाकुल होय, अणगळ पाणी वापरेल होय, तथा घणा दिवसना वाशी होय, हलकी वर्णवाळाए बनावेल होय विगेरे अनेक दोषोथी आवी चीजो अभक्ष्य छे तेथी अवश्य त्याग करवो. तेमां पण "Higher education" उंची केळवणी मेळवी जे सुधरेला जैन युवको छे तेओए तो हवे हैडे कांइ सान राखी हदमां रहेवाय तो सारुं, नहिंतर तेना कडवां फल चाखवा पडशे त्यारे जागृति आवशे.

११. बीडी, होको, चलम, चुंगी, सीगारेट, चीरुट, तमाकु

अने गांजा, चडस, माजम, अफीण, कसुंबो, भांग, प्रमुख व्यसनो अनाचरणीय छे. जीवहिंसा, अनर्थनुं कारण तथा पैसानो गेरउपयोग शिवाय तेमां कांइ लाभ छेज नहि. कदाच ते चीज न मले तो चेतना मुंझाय तथा क्षयादिक महारोग थाय, अने कोइ वखत प्राणमुक्त थवानो संभव छे. वळी तेमां अग्नि वायु तथा बीजा त्रस स्थावर जीवोनी हिंसा थाय छे, तेथी आवी व्यसनवाळी चीजो सर्वथा वर्जवी.

१२. विलायती दवाओ अभक्ष्य छे. उत्कृष्ट तो एज छे के रोगादिक कारणे पण अंगीकार करवी नहि; अने आ आत्मा बळीयो थाय तो शुं न करी शके? अर्थात् आज आत्मा वैतरणी नदी (नारकी) नो पमाडनार छे, आज आत्मा स्वर्गादिक सुखनो पमाडनारो छे अने छेवटे आज आत्मा सिद्धि–सौध (मोक्ष महेल) प्रत्ये लइ जनारो छे. केटलाक उछांछळा स्वच्छंदी शोखीनो विलायती दवाना डोझो खुशीथी पीये छे ते प्रत्यक्ष अनाचरणीय तथा दुर्गतिनुं सबळ कारण छे. तेवा पुरुषोने कोइ हितचिंतक उपदेश करवा जाय छे तो तेनुं परिणाम केटलीक वखत उलटुं खेदजनक आवे छे. केनी माफक? जे शास्त्रकारे कह्युं छे के—

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम्॥

एटले “मूर्खोने उपदेश करवा जतां शान्त थवाने बदले क्रा-

थायमान थाय छे, जेम सर्पने दूधनुं पान कराववाथी फक्त विषनी वृद्धि करनारू थाय छे" जेथी तेवा मूर्खोने प्रतिबोध करवाथी पण शुं ?

१३. गोळ—गोळ (गुड) मां जीवनी उत्पत्ति थाय छे. कारण केटलाक लाभ मेळववा खातर गोळमां चणानो लोट, खारो तथा माटी एम त्रण प्रकारे अथवा बीजी वस्तुओनुं मिश्रण करी वेचे छे. गोळमां तद्वर्ण (लाल रंगनी) इयळो थाय छे, तेथी तेवो गोळ अभक्ष्य छे, तो तेनो उपयोग राखवो. परदेशी गोळमां प्रायः भेग करता हशे एम अनुमान थाय छे. चणानो लोट तथा खारो मेळववानुं कारण देखावमां सरस लागे, अने माटीनो भेग करवाथी सो मण गोळमां चारेक मण माटी मेळवी तोलमां लाभ थाय एम दगो करे छे तेम सांभळ्युं छे, तेथी तेवो हलको माल मुद्दल लेवो नहि. पण देशी श्रीकार माल परीक्षा करी लेवो. 'सोंघुं ते मोंघा माटे अने बाह्यथी सुशोभित ते अंतरथी दोषित' आ शीखामण खास उपयोगी छे, माटे जे माल खरीदवो ते सस्तुं जोइ के तेनी शोभामां अंजाइ जइ खरीदवुं ते करतां ते वस्तुना गुण दोषनी परीक्षा करी सारूं होय ते लेवुं.

१४. परदेशी खांड—ते शुद्ध करवामां जे अशुद्ध पदार्थो प्रमुख वपराय छे, जेनुं स्पष्टीकरण अनेक जग्याए छपाएलुं छे, जेथी विशेष न लखतां मात्र एटलुंज कहेवुं बस छे के तेवी खांड के साकर वापरवाथी शारीरिक तन्दुरस्तीनुं बगडवुं तथा धर्मभ्रष्टता ए बे

मोटा दुर्गुण थाय छे, तेथी त्याग करवो. हवे केटलाक तेनो त्याग करीने काशी प्रमुखनी देशी चीनी वापरे छे, पण आ कळियुगमां दगलबाजी बहु थइ छे, तेथी केटलीक वखत देशीने नामे परदेशी माल रकमबंध आकरा भावथी खपे छे, अने ज्यां देशी बनावे छे त्यां पण परदेशी चीनीनुं मिश्रण थाय छे, माटे तेनो उपयोग करवो. अथवा तो तेवी रीते अजाणमां जे दगो प्रमुख थाय तेनी प्रथमथी जयणा राखवी, अने ज्यारथी चोकस के शंकापूर्वक जाणवामां आवे त्यारथी ते चीज वापरवीज नहि; नहितर नियम लइने तेमां दोषित थवाय नहि ते माटे खास उपयोग राखवो. ते मुजब विदेशी निमक, विदेशी केशर वर्जवुं; ज्यां सुधी बने त्यां सुधी देशनी चीज शा माटे न वापरवी ?.

१५. आखुं कठोळ—कोइ पण जातनुं आखुं कठोळ न खावुं जोइए. दरेक कठोळनी दाळ करीने खावी श्रेष्ट छे, कारण के आखा कठोळमां त्रस जीवोनी उत्पत्ति थाय छे, ते साफ करवा छतां ते जीवो नीकळे नहि, अने आपणी दृष्टि पण पडे नहि, तथा जीव हिंसा थाय माटे कठोळनी तुरत दाळ करी नांखवी ने खावी. कठोळ झाझो वखत रहेवाथी तेमां जीवनी उत्पत्ति थाय. छेवटे आखुं कठोळ सर्वथा त्याग न थइ शके तो चोमासामां आखुं कठोळ अ-वश्य वर्जवुं. वटाणामां मिठाशने लीधे विशेष जीव उत्पत्ति थाय छे, तेथी तेतो खास करी वर्जवा योग्य छे.

१६. हिंदु-दिल्ही बिस्कुट—जे दिल्ही, पुना, वडोदरा

वगेरे ठेकाणे बनाववामां आवे छे, जे आपणामांना केटलाएक बंधुओ वापर छे, पण ते बनाववामां प्रथम तो प्रायः परदेशी मेंदो वापरे छे, अने वळी ते पण हलवानी माफक बे त्रण दिवस पाणीमां कोहडावे छे, त्यारबाद तेना बिस्कुट थाय छे; तेथी असंख्य संमूर्छिम अनेक बेइंद्रियादिक जीवनी हानि थाय छे. वळी ते बीस्कुट तैयार करवामां चरबी पण चोपडवामां आवे छे, तेथी ते सर्वथा वर्जनीय छे. नानखटाइमां पण परदेशी मेंदो वापरे छे, तेथी ते पण त्याग करवा योग्य छे.

१७. टुथ पाउडर (दंतमंजन), टुथ ब्रश (दांत साफ करवानुं ब्रश—कूचो) विलायती जे दंतमंजनो तैयार आवे छे ते वापरवा युक्त नथी, कोण जाणे ते केवा भक्ष्य के अभक्ष्य पदार्थनुं थतुं हशे ? माटे ते न वापरतां बदामना छोडीयानी मसी अथवा तो ते मसीनी साथे कपुर, बरास, चाक (सचित्तना त्यागीए चाक गरम पाणीमां उकाळी सुकावीने अचित्त करेल होय तो वापरी शकाय), हरडा, बेडां, आमळां, मस्कती, दाडमनी छाल, सोनागेरु, काथो, मोचरस, हीरादखण, हीमज, दाडमनां सूकां फूल, कांटाळुं मायु, चणकबाब प्रमुख अनेक दांतने गुणकारी वस्तुथी बनावेलुं देशी मंजन वापरवुं युक्त छे. वळी दांत के हाडकाना अगर कोइ बीजी जातना हाथावाळा कोइ पण जनावरना केश के रबरना टुथ ब्रशो हिंदुओए अने खास जैनोए मुखमां नांखी भ्रष्ट थवुं ते केवुं लज्जास्पद छे ! वळी ते ब्रशो केटलीक वार दांतमां पोल करी

बहु खराबी करै छे. जो के ते एवुं गुणकारी नथी, पण कदाच होय तोपण आपणे क्यां साधन रहित थया छीए—अर्थात् अनेक रीते दांतनी शुद्धि, मजबुतीपणुं तथा गुणकारी करवाना उपायो छे, माटे विलायती टूथ पाउडर अने टूथ ब्रशनो उपयोग होय तो बंध करवो, अने न होय तो ते न वापरवानो निश्चय करवो. आवी वस्तुओनो पण नियम करवाथी लाभनुं कारण छे.

१८. होटेलो—विश्रान्ति आनंदी भोजनगृह, अने तेमां थती दरेक चीज शुद्ध ब्राह्मणीआ! प्रथम तो आ विश्रान्तिगृहनी मुलाकात (Visit) लेनारा ब्राह्मण वाणियाथी मांडी लुवाणा कडीआ एम उत्तरोत्तर उंच नीच हिंदु सर्व प्रायः होय छे, अने तेना मालेको केवी ज्ञाते होय छे ते तो तपास कर्ये मालूम पडे. त्यां चा, दूध, पूरी, दूधपाक, बासुदी, शीखंड ब्राह्मणीआ गमे ते वखते मळी शके छे; वळी भजीयां, कचोरी, आइसक्रीम, कुलफी, आइस वोटर, कंदमूल प्रमुखना शाक, भातभातनी चटणीओ पण ब्राह्मणीआ थाय; तथा नानखटाइ, बीस्कुट सोडा विगेरे जेनी इच्छा होय ते ब्राह्मणीआ ताजुं मळी शके; कहो केवी सुगमता ! पण हे जैनबंधुओ ! अने आर्यो ! आ होटेलो प्रमुखनुं अनुकरण थवानुं कारण अनार्यो छे, अने तेना सहवासथी आपणे पण अनार्य जेवाज थइ जइए छीए. त्यां बनती सर्वे वस्तुनो जो विवेक पूर्वक तपास करवामां आवे तोज खबर पडे, पण तकलीफ कोण लीए; हिंदु भोजनगृहमां थयुं एटले तो ते शुद्ध पवित्रज होय. कारण जे विवेकनो

विचार–भक्ष्याभक्ष्यनो विचार करे तो खवाय पीवाय केम ? एवा आपणे विवेकविकल अर्धदग्धो जीह्वाइन्द्रियनी रस लंपटतामां शुं शुं अकार्य नथी सेवता ? अर्थात् स्पर्शास्पर्श के भक्ष्याभक्ष्यनो विचार नहि करतां भोजन करी आनंद मानीए छीए. छेवट मुसलमान तो शुं पण युरोपीयन होटेलोथांथी माखण–पांउ (बिस्कुट) वगेरे पदार्थो मंगावी खानाराओ पण होय छे. अफसोस ! आ भ्रष्टतानुं विवेचन करत्तां कंपारी छुटे, तेवा कार्यना सेवनाराओ आ कळियुगमां व्यापी रह्या छे. अमने तो आवा प्राणी प्रत्ये दयानी लागणी स्फुरे छे के तेओने केवा केवा विपाक भोगववा पडशे अने केवा त्रास तेओ पामशे ? हजु पण हे बंधुओ ! समजो अने आ भ्रष्टताथी विरमो ! हे जैन युवको ! आ श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुना शासनमां मनुष्य जन्म पाम्यानो फेरो सफळ करो ! दश दृष्टांते दुर्लभ एवो आ मनुष्य जन्म फरी मळवो दुर्लभ छे. " काग उडावण काज विप्र जिम, डार मणि पछतायारे " एवो अवसर न आवे माटे पूर्वोक्त त्रण अक्षरनी स्वामी (विवेक) छे, ते रुपी मित्रने जगाडो अने आत्महितार्थे भ्रष्टाचारने देशवटो आपो ।

१९. पाणी—आ कळिकाळमां केटलाक मोटा शहेरोमां स्टेशनो उपर पाणीना नळ संचा-टांकीओ थइ गयेल छे, तेथी मुसाफरी वखत के हवा खावा जतां अगर रस्तामां तृषा लागी होय त्यारे अणगळ पाणी पीवाय छे ते अनाचरणीय छे. अणगळ पाणी दारु समान कह्युं छे, जेथी पीवामां के वापरवामां पण अवश्य पाणी

मजबुत गळणावडे बरोबर गळीनेज वापरवुं; तथा पाणीना वासणमां एठा प्याला के जेने मुखनी लाळ अडी होय ते बोळवाथी असंख्य संमूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे, माटे पाणी काढवा माटे जुदो डोयो (वासण) राखवो जोइए. वळी जे प्याले पाणी पीधुं होय तेने पण मुखनी लाळ अडी होय माटे लुगडावडे तुरत कोरो करी नांखवो, ने ज्यारे पीवुं होय त्यारे दरेक वखते ते प्यालो जोवो के "तेमां जाव जंत कचरो नथी," ते तपासीनेज पीवुं. उघाडु रहेलुं पाणी पीवाथी बहु दोष छे. अल्प प्रमादथी असंख्य जीवनो घात थाय ते केवुं अनर्थकारक छे? माटे दरेक भाइओ अने व्हेनोए पाणी माटे खास लक्ष्य राखवुं एवी प्रार्थना छे. श्रावके पहोरे पहोरे पाणी गळीने पीवुं जोइए, तेमां जेटलो प्रमाद तेटलो दोष छे. "यत्र यत्र प्रमादः तत्र तत्र हिंसा." प्रमाद छोडया वगर धर्म पामवो क्यां सहेल छे; जयणाए उपयोग पूर्वक वर्तवुं तेज धर्म छे, कपाळमां चांडलो मात्र करवाथी धर्म नथी थतो, के नथी जाणवा मात्रथी थतो; पण उभय लोकनो भय राखी जे सज्जनो अष्ट प्रवचन माताने हृदयमां राखी वर्ते छे, तेओनुंज कल्याण तथा पृथ्वीपर आववुं सारभूत छे, अने बाकी तो पृथ्वीने खरेखर भारभूतज समजवा. धन्य छे! श्रीकुमारपाल राजाने के जेणे अढार देशमां अमारि

(अहिंसा) पडह वजडाव्यो, जेना वखतमां गाय, भेंस, बळद, प्रमुख ढोरने पण पाणी गळीनेज पावामां आवतुं; अने ते धर्मीष्ठने 'परमार्हत' एवुं बिरुद कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमाचार्यजी महाराजे आप्युं हतुं. ते कुमारपाळ राजा आवती चोवीशीना प्रथम तीर्थंकर श्रीपद्मनाभप्रभुना गणधर थवाना छे; तेनो हाल पण यशवाद वर्ते छे, तथा आगामीभवे पण वर्तशे. सदा तेवा पुरुषो जयवंता वर्तो ! अरे आपणे क्यारे प्रमादरूपी पछेडी दूर करी पापरूपी मलिन शय्या-मांथी उठी तेवा परमार्हत थवा अने शिववधू वरवा उजमाल थाशुं? जेथी भवरूपी प्रचंड ताप उपशमे !

बहु आरंभ थतां तृप्ति न थाय अने पश्चात् हिंसा बहु थवाना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ--

वनस्पतिनुं नाम.	वर्जवानां कारणो.
शेरडी—	घणी खावाथी तृप्ति न थाय; वळी ते खाइने तेना छोतां ज्यां नांखीये त्यां आपणा मुखनी लाळ अडवाथी असंख्य संमूर्च्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय, तथा मिठासने लीधे कीडीओ प्रमुख त्रस जीव चडे, मनुष्य के जनावरनो पग पडवाथी के ते छोतांओ जनावर चावी जवाथी त्रस जीवोनी हिंसा थाय वगेरे हिंसाना कारणोथी वर्जवी.
सीताफळ, रायण, खलेलां, पाका गुंदा, जांबु (रावणां), करमदां, बोर दरेक जातिनां.	शेरडीनी माफक आ वस्तुओ खाइ तेना ठळीआ ज्यां नांखीए त्यां असंख्य संमूर्च्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय, तथा त्रस जीवोनी हिंसा थाय वगेरे कारणोथी वर्जवा योग्य छे. तेमां पण बोरजातिमां तो त्रस जीवनी उत्पत्ति होवाथी ते अभक्ष्य छे, अने ते शिवाय जे न वर्जि शकाय तेने माटे यत्नाथी प्रवर्ततां अल्पदोष थाय-एटले खाइने

तेना ढळीआ वगेरे राखमां परठववा, अगर जे रीते पछी अनेक जीवोनो नाश न थाय तेम यत्ना अवश्य जाळववी. जे बोर वगेरे केटलीक चीजो अभक्ष्य छे ते अभक्ष्य जाणीने तेनी प्रौढ अवस्था थइ होय तोपण त्यजवी; केमके ते जाते अभक्ष्य छे; माटे आवी चीजो उपरथी तृष्णा उतारी वर्जवा लायक छे. वळी बोर, सीताफळ, शेरडी, रायण शक्य परिहार छे—अर्थात् ते एवी चीजो नथी जे तेना वगर न चाले. माटेज ते ते चीजो पश्चात् हिंसाना कारणने लइने त्याग करवा स्वशक्ति अवश्य फोरववी, अने क्रमे क्रमे ज्यारे दरेक चीज उपरथी ममत्व उठशे अने सर्वथा चारे आहारनो त्याग थशे त्यारेज अणाहारी शाश्वतां अनंत सुखनी लहरीओमां लयलीन थइशुं.

लीलां अंजीर— बीज विशेष होवाथी वर्जवा लायक छे.

शेतुर,
फालसां, } — बहु खावाथी तृप्ति न थवाना कारणे वर्जवा योग्य छे.

सींगोडा— काम वृद्धिजनक होवाना कारणे वर्जवां, तथा ते तळावमां पाणीमां वेल उपर थाय छे, तेनी आसपास बहुज त्रस जीवोनी उत्पत्ति थाय छे, तेथी सींगोडां तोडती वखते घणा त्रस जीवनी विराधना थाय छे माटे वर्जनीय छे.

वालोळ— श्रावकना अतिचारमां पण लखे छे के " वासी वालोळ, पोंक, पापडी खाधां " तो जे वालोळ आजनी उतारेली होय ते रात वासी रहेवाथी तेमां त्रस जीवनी उत्पत्ति थाय छे तेथी बीजे दिवस अभक्ष्य थाय छे. ते दिवसनी उतारेलीमां पण इयळो प्रमुख त्रस जीव होय छे, तेथी कदाच ते दिवसनी खावी होय तो पण उपयोग पूर्वक तपासी करीने वापरवी युक्त छे. प्रथम तो ते दिवसनीज उतारेली ताजी वालोळ मळवी मुश्केल माटे बने तो सर्वथा वर्जवी श्रेष्ठ छे.

दर्शन विरुद्ध तथा लोक विरुद्धना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ.

वनस्पतिनुं नाम.	वर्जवानां कारणो.
पंडोरा—	लांबां सर्पाकारे होवाथी अने अशुद्ध परिणामना हेतु होवाथी वर्जवां.
फणस—	दर्शन विरुद्ध होवाथी (मांसपेशी-रूप देखाय छे) अनाचरणीय छे.
भुरुं कोळुं—	अन्यदर्शनी वगेरे तेने देवी प्रमुखनी पूजामां घेटादिकनी कल्पना करी भोग आपे छे तेथी ते वर्जवुं. (औषध कारणे प्रमाण राखे.)
कोळुं—	मोटुंफळ होवाथी केटलाक नथी वापरता.
कडवुं तुंबडुं—(दुधी)	कदाच झेरी नीकळे तो आत्मघात थाय तेथी ते अनाचरणीय छे.
कंटोला पाकां कारेलां " टींडोरां " टमेटां " कंकोडा "	तेना मूळ रंग लीला होय छे अने पाकेथी रातां थाय छे ते, तथा कंटोलाने कारेलामां जीवात बहु पडे छे, अने टींडोरामां बीज घणां छे, माटे आ चीजो अशुद्ध परिणाम थवाना कारणथी अने

त्रस जीवोनी हिंसा थवाना कारणथी वर्जवी. आने माटे श्राद्धविधिमां खुलासो छे.

मधुक— ते महुडां वृक्षनां फळ जेने महुडां कहे छे, अने तेनो दारु प्रमुख थाय छे, ते केफकारी तथा अशुभ परिणामना हेतु होवाथी वर्जनीय छे. वळी त्रस जीवाकुळ छे.

त्रस जीवनी बहु हिंसा थवाना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ.

बीली,
बीलां,
लीलो वांस.

इयलो तथा क्षुद्र जीवो आ वनस्पतिओमां उत्पन्न थवानां हेतुथी सर्वथा वर्जनीय छे, त्यारे तेना बोळ अथाणाओ करीने वापरवां ते केवुं अघोर—त्रासजनक कर्तव्य ? सुवावड प्रमुख गमे तेवां रोगना कारणो होय तोपण आ चीजो तो सर्वथा दृष्टिथी पण दूर राखवा योग्य छे. स्त्रीवर्ग के जेने जीभनो स्वाद विशेष होय छे तेओए आने माटे बहु भय पामी वर्जवुं जोइए.

फागण शुद १५ थी कर्तिक शुद १५ सुधी भाजी-पांद-डामात्र प्रमुख जीवोनी हिंसा होवानां कारणे वर्जवां कह्यां छे तेनां केटलाएक नाम.

मेथीनी भाजी.	कडलीनी भाजी.	एलचीनां पान.
तांजळीयानी भाजी.	नागरवेलनां पान.	लीली चा.
कोथमीरनी ,,	अडुना ,,	फुलावर.
फोदीनो	फांगना ,,	गुलाबनां फुल.
	अळवीना ,,	
डांभानी भाजी	भोंपांथरीनी भाजी	तलसीना पान
टांकानी भाजी	मीठा लींबडाना पान	अजमानां ,,
भींडानी भाजी	पोइना पान	राडारूडीना फुल

आ लीलोतरीओ आठ मास तो सर्वथा वर्जवा योग्य छे.

सरगवानी शींग— तेमां फागण सुद १५ पछी तेनां बीजमां त्रस जीव थाय छे, तेथी आठ मास पर्यंत वर्जवी.

कोबीज (कर्मकलो)— तेना पांदडामां तद्वर्णा त्रस जीव होय छे, ते मालुम पडता नथी तेथी ते आठ मास तो वर्जनीय छे, अने बाकी शियाळामां पण यत्ना पूर्वक खंखेरीने

वापरवी युक्त छे; तेनी दुर्गंध अने पड जोतां तो डुंगळीनुं स्मरण थाय छे, तेथी तेथी ते तजवा योग्य छे.

आ मुजब बीजां पण भाजीपान शियाळामां उपयोग पूर्वक खंखेरी करीने वापरवा योग्य छे. तेमां पण भाजी सर्वे जातिनी चारणी वडे चाळीनेज वापरवी, कारण तेमां इयळ कुंथवादिक त्रस जीव नीकळे छे तो तेनी जयणा पळे; अने जो त्रण वार चाळतां जीव नीकळे तो ते परठववा योग्य छे.

आर्द्रा नक्षत्रथी त्याग करवा योग्य वनस्पति—

रायण, केरी— आर्द्रानक्षत्रथी पाकी केरीनो जरूर त्याग करवो. आ वस्तु अति प्रिय होवाथी केटलाएक आर्द्रा नक्षत्र पछी वापरे छे तेने वधारे शुं कहेवुं ? भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करीने पण स्वकामनाओ तृप्त करवी ! जाणे के ते वस्तु जोइ नथी माटे खाओ, पीवो ने वापरी लीयो; फरी आवी लहेजत नहि आवे, एवुं मानी आपणा युवान बंधुओ तो शुं पण जेओने जरारूपि पीशाचणीए वश

करेल छे एवा वृद्धो पण आ वस्तुना स्वादमां अंजाइ जइ भोगवे छे. अफ-सोस ! अति खेदजनक छे जे असंख्य जीवोनो नाश करतां लगारे विचार आवतो नथी अने पोतानुं मन रंजन करवा अर्थे महा अनर्थनुं कारण सेवी दुर्गतिनुं भाजन थवारूप अकार्य सेवे छे; पण हवे ममता दासीनो छेडो मूकवो जोइए. नहितर तेज लहेजतना विपाको भोगवतां हाय ! हाय ! कोइ छोडावो ! कोइ बचावो ! एवा त्रासजनक पोकारो पाडतां पण कोइ पण मुकाववाने समर्थ नहि थाय, तेथी हवे विनय पूर्वक प्रा· र्थना करीने कहेवानुं छे जे स्वपरना हितार्थे ते चीज आर्द्रा नक्षत्रथी वर्जवी ने तेमां कोइ पण प्रकारनो आगार रा-खवो नहि.

चोमासामां (असाड शुद १५ थी कार्तिक शुद १५ सुधी) त्रस जीवो पडवाना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ.

भींडा—
कंटोला—
कारेलां—
तुरीयां—

बीजी ऋतुमां पण जीव थाय छे, पण चोमासामां विशेषे करीने इयळो प्रमुख जीवनी उत्पत्ति थाय छे. अने कारेलां प्रमुख तो बाह्यथी (उपरथी) जरा पण सडेलुं देखातुं न होय तेने पण समारतां अंदर इयळो केटलीक वखत जोवामां आवे छे; उपयोग राखीए तोपण आ जीवोनी हिंसा थइ जाय तेथी चोमासामां खास वर्जवी.

कारेलां तुरीयां प्रमुखनो उपरनो भाग खडबचडा खाडा जेवो होवाथी तेमां कुंथुआ प्रमुख त्रस जीवो भराइ रहे छे, तेथी तेवी वनस्पतिओ प्रथम पुंजणीथी पुंजीनेज यत्ना पूर्वक समारवी जोइए, अने दरेक वनस्पतिनुं शाक शुद्ध करीने वापरवुं युक्त छे.

चालु वपरावामां आवती वनस्पतिओ.

	शाकमां वपराती.		काचां पाकां फळ तरीके वपराती
१	काकडी मूळ पान विना		तरबुच
२	कारेलां	,,	लींबु मीठुं
३	कंटोलां	,,	पोपैयुं
४	गलकां	,,	सफरजन
५	गुवारनी फळी	,,	पीचीज
६	काचां गुंदा[1]		चीकु
७	लीला चणा		केरीनी जात
८	चीभडां (आरीयां) मूळ पान विना.		जमरुख (पेर)
९	चोळा		अनेनास
१०	टमेटां		कोठ फळ
११	टींडोरां (धोळा)		केळां
१२	डाळां		दाडम
१३	डोडी		आमळां
१४	तळीयुं–भजीयुं (सकरटेटी)		नारंगी (संतरां)

---

१. काचां गुंदां भांगीने तेना ठळीया तरतज राखमां परठवी देवा, नहितर मांखीओ तेने खावानो पदार्थ समजी तेना उपर बेसे छे, तेथी तेनी पांखो चीकाशने लीधे चोंटी जवाथी उडी शकती नथी ने मरी जाय छे, तेथी खास उपयोग राखवो.

१५ तुरीआं — नाळीयेर (काचां-पाकां)
१६ तुएरा — पपनस
१७ दातण (बावळ, बोरडो, झील, आवळ) — द्राक्ष (लीली)
१८ दूधीयुं — बीजोरां
१९ परवर
२० पांदडी-पापडी-पापडा
२१ फळशी
२२ भींडां
२३ मरचां
२४ मरवा
२५ मोघरी
२३ लींबुं खाटुं
२७ वटाणां
२८ आलकुल

आ उपर लखेली जे वनस्पतिओ छे, तेमांथी पण यथाशक्ति त्याग करवो, अने जे बारे मास प्रायः मळी शकती के उपयोगमां लेवाती वनस्पति होय, जेमके केळां, ते शिवाय दरेक लीलोतरीओ जे राखवी होय ते पण अमुक काळ खावी, बाकी त्याग; जेमके कार्तिक मासमां अमुक अमुकज खावी, तेम बारे मास आश्रयी राखवी लेवाथी बाकीना काळमां विरतिपणानुं फळ मळे छे. कारण केरी शियाळा पछी मळी शके तेथी फागण के चैत्रथी आर्द्रा नक्षत्र

सुधी खपे, बाकी त्याग; तेम अति संक्षेप पूर्वक नियम लेवाथी बहु लाभनुं कारण छे; तथा नियम लीधा त्यांथी दर वर्षे अमुक अमुक वनस्पतिनो सर्वथा त्याग करवानो पण नियम करवो. जेमके १९६४ मां अमुक अमुक लीलोतरीनो नियम लीधो; त्यारेज एवो नियम लेवो के १९६५ थी मारे नोलकोल, मोघरी, पपनस, चीकु पीचीजनो सर्वथा त्याग; १९६६ थी डाळां, लीलां तीखा, मरवा प्रमुखनो सर्वथा त्याग, तेम आगळना वर्षोनो पण यथाशक्ति नियम करवो. जेथी तेना ते वखते अमुक वखत पछी त्याग कर्याना भाव थवाथी तेने ते वखतथी अभयदान दीधानुं फळ मळी चुके. आ प्रमाणे नियम करवाथी अनेक वनस्पतिओना जीवने अभयदान आप्यानुं फळ मळे. अने ज्यां सुधी नियम नथी कर्यो त्यां सुधी कांइ फळ मळतुं नथी. वळी श्रावके छ अट्ठाइओमां[1] वनस्पतिनो

---

१ चैत्री तथा आसोनी बे अट्ठाइओ शाश्वती छे, ते चैत्र सुद ७ थी १५ सुधी अने आसो सुद ७ थी १५ सुधीनी जाणवी.

त्रण चोमासानी त्रण अट्ठाइ; ते एक कार्तिक सुद ७ थी १५, बीजी फागण सुद ७ थी १५; अने त्रीजी अशाड सुद ७ थी १५ एम त्रण अट्ठाइ जाणवा.

पर्युषण पर्वनी अट्ठाइ श्रावण वद १२ थी भाद्रवा सुद ४ सुधी, एम छ अट्ठाइ कही छे. ते दिवसोमां सचित्तनो त्याग, वनस्पतिनो त्याग, ब्रह्मचर्य, अमारि, तप, जिनपूजा, गुरुवंदन, व्याख्यानश्रवण, सामायिक, पौषध, अतिथिसंविभागादिक नियमो अवश्य विशेषे करीने करवां जोइए.

जरुर त्याग करवो; तथा जघन्यथी पांच पर्वी तिथिओ ते शुकल पंचमी, बे अष्टमी अने बे चतुर्दशीमां अने उत्कृष्ट बार पर्वी तीथीओ ते बे बीज, बे पांचम, बे अष्टमी, बे चतुर्दशी, अमावास्या अने पुर्णिमा; तथा मध्यम थकी सात आठ के दश पर्व तिथिओमां अवश्य लीलोतरीनो त्याग करवोज जोइए; ते तिथिओने विषे एक पाकां केळां उपयोगमां केटलाएक ले छे, कारण ते अचित्त छे; तो ते शिवाय अवश्य बाकीनी सघळी वनस्पतिना त्यागनो नियम ग्रहण करवो जोइए.

वळी सामान्य रीते कह्युं छे के अजाण्युं फळ, नहि शोधेलुं शाक पत्र, सोपारी प्रमुख आखां फळ, गांधीना हाटनां चुर्णो, चटणी, मलीन घी अने परीक्षा वगरना माणसे लावेलां बीजां पदार्थो खावाथी मांसभक्षण तुल्य दोष प्राप्त थाय छे. तेमां पण सोपारी चोमासामां आजनी भांगेली आजेज खवाय, बीजे दिवसे लीलफुग थवाना कारणथी ते न खवाय; तेमज एलची ज्यारे वापरवी होय त्यारे फोलीने सम्यक् प्रकारे तपासीनेज वापरवी युक्त छे. चोमासामां पीपरीमूळना गंठोडा, सूंठ प्रमुख, लीलफुग कुंथु-आदिकनी उत्पत्ति थवाना कारणे न खावा. चुनानी फाकमां राखवाथी सडता नथी. दवा प्रमुखमां वापरवुं होय तो ते सम्यक् प्रकारे शोधीने वापरवुं युक्त छे.

सचित्त त्यागी, द्वादश व्रतधारी तथा चौद नियम धारनारने सचित्त संबंधी ध्यानमां लेवा योग्य केटलीक बाबतनो खुलासो.

सचित्तनो सर्वथा त्याग कर्यो होय तेणे कइ कइ चीजो सर्वथा के जे सचित्त छे ते वर्जवी, तथा कइ कइ केवी रीते अचित्त करी होय ते केटला काळमान सुधी वापरी शकाय ते बतावे छे.

१. धान्यो जेवां के घउं, बाजरो प्रमुख सचित्त कहेवाय छे, जे अमुक वखत पछी अचित्त थाय छे, तेनुं वर्णन श्राद्धविधि प्रमुख ग्रंथोथी जाणी लेवुं. मेथी पण धान्य छे ते उपयोग राखवो. एटले धान्योनो लोट थया पछी क्यारे ते अचित्त थाय छे वगेरे आगळ लखाइ गयुं छे. तेथी ज्यां सुधी सचित्त छे त्यां सुधी वपराय नहि. चणा प्रमुखनी दाळ अचित्त छे, तेथी तेनो आटो अचित्तज छे.

२. पोंख, ओळा वगेरे वर्जनीय छे तेथी तेमज मिश्र (सचित्त अने अचित्त) होवाथी वपराय नहि.

३. अभक्ष्य वस्तुओ सचित्त छे ते पण वर्जवीज जोइए.

४. शेकेल चणा, धाणी प्रमुख रेतीमां भुंजेल होय तो बरोबर अचित्त थाय, अन्यथा ते वपराय नहि.

५. धाणा, जीरुं, सुवा, अजमो प्रमुख खांडेलुं होय के अग्नि शस्त्र लागवाथी अचित्त थाय ते वपराय, पण एमने एम वापरी न शकाय. तथा छाश करंबादिकमां नाखेल सचित्त जीरु प्रासुक थतुं नथी.

(हीरप्रश्ने)

६. वरीयाळी पण सचित्तमांज कहेवाय छे, केमके जे चीजो वाव्या थकी उगे छे ते सचित्त कहेवाय छे, तेथी सुकी वरीयाळी पण शेकेली होय तोज वापरवी.

७. मीठुं (लवण-निमक) सचित्त छे, भूमिकायमां लख्या मुजब ते अचित्त थाय, तो ते मुजब अचित्त करेलुं मीठुं वापरी शकाय.

८. सैंधव जे रातो आवे छे ते सचित्त छे. फक्त सफेद सैंधव अचित्त छे.

९. चाक, खडी प्रमुख सचित्त छे. चाक जो के खावामां नथी आवतो, पण दांतनुं मंजन बनाववामां वपराय छे तो प्रथम कह्या मुजब अचित्त करीने बनावेल होय तो वापरी शकाय. केम्फर चॉक वगेरे पण जे आवे छे ते केम बनावता हशे ते कही शकाय नहि, जेथी सचित्तना त्यागीए आवी संशयवाळी वस्तु वापरवी नहि.

१०. चलित रसवाळी वस्तुओ जे "चलितरस" नी सूचनाओ लखी छे ते विगेरै महा सचित्त छे, एटले ते अभक्ष्यज छे, कारण तेमां तो बेइंद्रिय जीवनी उत्पत्ति थाय छे, तेथी ते चीजो नज खवाय. तेवीज रीते बोळ अथाणांनुं समजवुं. अहिं लखवानो आशय एटलोज छे के ते वस्तुओ पण सचित्त अथवा महा सचित्त एटले अभक्ष्य छे, जेथी भक्ष्य सचित्तनो त्याग होय तेने अभक्ष्य सचित्तनो प्रथम त्याग थयो अने होवो जोइए.

११. पाणी त्रण उकाळावाळुंज अचित्त छे, जेथी बरोबर न थयुं होय तेनो उपयोग राखवो. वळी ते ज्यारे त्रांस वगेरेमां ठारवामां आवे छे त्यारे तेनी उपर बारीक कपडानुं ढांकण जोइए, नहितर तेमां माखी प्रमुख पडवाथी मरी जाय छे, तेथी बहु दोष लागे माटे प्रसंगोपात आ सूचना लखी छे, जे खास ख्यालमां राखवी. चोमासामां उकाळेला पाणीनो काळ त्रण पहोरनो छे ए खास लक्षमां राखवुं.

१२. अनेक जातना सरबतो, सोडा प्रमुख, गुलाबजळ, केवडानुं जळ न वापरवुं. ते वापरवाथी अनेक प्रकारना दोष साथे गुलाबजळ प्रमुखमां जीव उत्पत्तिनो संभव होवाथी ते सर्वे वर्जनीय छे.

१३. इंग्रेजी प्रवाही दवा मुख्यपणे वापरवीज नहि; तो पण अत्यंत रोगादिक कारणे केटलाएक वापरे छे, पण तेमां अचित पाणी खास जोइए. एनुं प्रायश्चित्त साजा थवाथी लेवुं जोइए.

१४. बरफ, करा प्रमुख सचित्त (मूळ अभक्ष्य) छे तेथी न ज वपराय.

१५. लीलां दातण बावळ प्रमुख हरकोइ जातना सचित्त छे, तेथी तेना सर्वथा त्याग होवो जोइए.

१६. नागरवेलनां पान, लींबडा, तुळशी, एलची प्रमुखना पान सचित्त होवाथी नज वपराय, पण लींबडाना पान कढी प्रमुखमां नांखेल होय के नागरवेलनुं पान घीप्रमुख उनुं करवामां नांख्युं होय तो ते चीज अचित्त थयेथी वपराय छे.

१७. लींबडा, आंबा प्रमुखना महोर तथा गुलाब प्रमुखनां फुल सचित्त छे, ते न वपराय. गुलाबना फुल मिठाइ उपर छांटे छे ते अचित्त थयेथी वपराय.

१८. चटणी जे कोथमीर फोदीनानी करे छे तेमां ते वनस्पति तथा निमक बन्ने जो के सचित छे, पण ते घूंटायाथी ते वनस्पति अने निमकने अन्योन्य एक बीजानुं शस्त्र लागवाथी बे घडी पछी अचित्त थाय छे, माटे सचित्त त्यागीने बे घडी बाद वापरी शकाय.

१९. संभारा के अथाणां (जे त्रण दिवस वापरी शकाय ते) नुं पण प्रायः उपर मुजब अन्योन्यना शस्त्र लागवाथी बे घडी बाद वपराय; पण गुवार प्रमुखनुं अथाणुं अचित्त थतां वखत लागतो हशे, कारण तेनी अंदर मींज छे तेथी मीठानुं शस्त्र जल्दी न लागे.

२०. दाडम, जमरुख ए बीजो सचित्त छे, अने बे घडी बाद पण अचित्त न थाय, तेथी तेनो सर्वथा त्याग[1] होवो जोइए. एटले के सचित्त न वपराय, पण जो अचित्त अग्निना शस्त्रथी (तेनुं शाक करे छे) करेल वपराय. जमरुखने अग्नि लागवाथी पण मींज कठार रहे छे तेथी मीश्रतानो दोष लागे,

२१. शेलडी तथा शेतुर सचित्त छे, तेथी तेनो सर्वथा त्याग होवो जोइए. शेलडीनो रस काढ्या पछी बे घडीए अचित्त थाय.

२२. सीताफळनो सचित्त त्यागीने अवश्य त्याग होय, वळी ते अचित्त पण थवा संभव नथी; कारणके तेमांथी ठळीया जुदा पडी शके नहि. तेमज जांबुं, रायण, बोर, खलेलां, लीलीबदाम, लालीद्राक्ष प्रमुखमांथी ठळीया बी काढ्या वगरज वपराय छे ते सर्वे न वापरी शकाय.

---

१ सर्वथा त्यागना बे भेद छे—एक सचित्त सर्वथा त्याग, बीजो वस्तु सर्वथा त्याग; एटले जेने सचित्त सर्वथा त्याग छे तेने अग्नि प्रमुखथी अचित्त करेल वपराय, पण जेने दाडम, जमरुख वस्तुनोज त्याग छे तेने तो सचित्त के अचित कांइ न वपराय. आ स्फुट करवानुं कारण एटलुंज के अर्थनो अनर्थ न थाय, केमके आपणामां वक्रता अने जडताए बहु वास कर्यो छे; तेथीज दरेक बाबत स्वमतिए धारणनो निषेध छे माटे गुरुगमथी धारवुं; नहितर अनेक प्रकारे एवा अनर्थ थया संभळाय छे.

२३. केळां बी सहित पाकां आवे छे ते सचित्तज छे एवो निर्धार करी शकातो नथी, तोपण तेवां बीजवाळां केळां कलकत्तादिक तरफ थाय छे ते वापरवां नहि, सोनेरी केळां छाल उतार्याथी तरत अचित्त छे.

२४. पाकां चीभडां, सकरटेटीमांथी बी एकेएक उपयोग पूर्वक काढ्या पछी बे घडीए वापरी शकाय.

२५. काकडीमांथी बी जुदां पडी शके नहि, तेथी ते सचित न खवाय पण शाक प्रमुख अचित्त करेल वपराय.

२६. केरीनो रस काढीने गोटली काढ्या बाद बे घडीए लेवानो व्यवहार छे.

२७. श्रीफळ (नाळीयेर) नुं पाणा के टोपरुं तेमांथी बी काढ्या पछी बे घडीए वपराय. जे त्रोफा आवे छे जेमां पाणी होय छे ते पण जुदा वासणमां काढ्या पछी बे घडीए लेवाय.

२८. पाकी आंबली (जेनुं आंबलवाणुं करे छे), खारेक अने खजुर (सुको) मांथी ठळीया काढ्या पछी बे घडीए वापरी शकाय.

२९. सोपारी आखी भांग्या पछी ने [1]बदाम अने अखरो-

---

१ ते स्वदेशमां थयेलां सचित्त संभवे छे, अने बहु दूर देशथी आवेल होय ते तो अचित्त होइ शके छे.

टना मींज काढ्या पछी बे घडीए लेवाय. केटलीक वस्तु तरत अचित्त पण थइ जाय छे, परंतु आपणे ते जाणी शकीए नहि जेथी बे घडी बाद वापरवुं उचित छे.

३०. पीस्तां तथा जायफळ तेना छोडामांथी बहार काढ्या पछी बे घडीए वपराय.

३१. काळी तथा राती मोटी द्राक्ष जेमां बी होय छे ते बी काढ्या पछी बे घडीए वपराय.

३२. जरदालुनो ठळीयो काढ्या पछी बे घडीए वापरी शकाय, तेम तेमांथी नीकळता ठळीआमां जे बदाम होय छे ते पण भांग्या पछी बे घडीए खवाय.

३३. झाड उपरथी तुरतना उतारेल गुंदर बे घडी पछी अ-चित्त थाय.

३४. सुकां अंजीर जेमां बी घणां होय छे ते जुदा पडतां नथी, तेथी सचित्त त्यागीने ते वस्तुनो सर्वथा त्याग होवो जोइए.

३५. सचित्त त्यागीने कोइवार पाणीनी जोगवाइना अभावे सचित्त पाणीमां साकर के राख नाखवाथी ते पाणी बे घडी पछी अचित्त थाय. पण श्रीपालीताणामां तळाटी उपर जे साकरनां पाणी करे छे ते सांभळवा मुजब एठा प्याला बोळवाथी तेमां संमूर्च्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय छे, तो तेवुं जळ के साकरनुं

पाणी सामान्य श्रावकने पीवुं न जोइए, त्यारे सचित्त त्यागीने केम पीवाय ! तेवीज रीते केटलेक ठेकाणे चा करे छे त्यां डबाडब थाय छे ते पण अनुचित छे.

आ उपर लखेली सचित्त आश्री सूचनाओ सचित्त त्यागीने खास उपयोगी छे; वळी वीजाओने पण एकासणां प्रमुखना पच्चक्खाणमां सचित्तनो त्याग होय छे तेथी समजवानी जरुर छे. जे बावत उपयोगमां आवी ते दर्शावी छे, ते शिवाय गुरुगमथी स्फुट रीते समजवुं जोइए.

उपर मुजब समजी विचारी तदनुसार वर्तवा खास उपयोग राखवो. बावीश अभक्ष्यनो श्रीजिनेश्वर भगवंते निषेध कर्यो छे ते तथा बीजी अभक्ष्य अनाचरणीयनो त्याग करवो, तथा वनस्पति प्रमुखनो जरुर नियम करवो. नियम-प्रतिज्ञा करवाथीज विरतिपणु थाय छे, अने विरतिनुं फळ घणु मोटुं छे. वळी कह्युं छे के "ज्ञानस्य फलं विरतिः" ज्ञान (भण्या-जाणपणा) नुं फळ विरति छे; अने जो तेम न थाय तो फक्त ज्ञान (जाणवा) मात्रथी शुं ? ते तो ज्यारे रहेणीमां आवे त्यारे सारभूत छे. चिदानंदजी महाराजे पण कह्युं छे जेः—

शुक रामको नाम बखाणे, नवि परमारथ तस जाणे;
या विध भणी वेद सुणावे, पण अकल कला नवि पावे ॥
कथणी कथे सब कोइ, रहणी अति दुर्लभ होइ ॥१॥

षट त्रीश प्रकारे रसोइ, मुख गणतां तृप्ति न होइ;
शिशु नाम नहि तस लेवे, रस स्वादत सुख अति लेवे ॥
॥ कथणी ॥ २ ॥
जब रहणीका घर पावे, कथणी तब गिणती आवे;
अब चिदानंद इम जोइ, रहणीकी सेज रहे सोइ ॥
॥ कथणी ॥ ३ ॥

भावार्थ एवो छे के—कथणी ज्यारे रहेणी रूपे थाय त्यारेज तेनो उत्तम रस प्राप्त थाय छे; अन्यथा छत्रीश प्रकारनी रसोइना नाम मात्र गणवाथी क्षुधा शांत थती नथी. तेवीज रीते ज्ञान संपादन करीने ते यथाप्रकारे अमलमां मूकवुं जोइए. ते विरतिवंत क्रियारुची जीव शुकलपक्षी कहेवाय. मन, वचन, कायाना व्यापार चालता न होय तोपण अविरतिथी निगोदिया विगेरे जीवोनी माफक घणो कर्मबंध थाय छे. कह्युं छे के "जे भव्यप्राणि भावथी विरतिनो (देश अथवा सर्वथी) अंगीकार करे छे तेओनी विरति करवाने असमर्थ एवा देवता घणी प्रशंसा करे छे." एकेंद्रिय जीवो कवलाहार बिल्कुल करता नथी, तो पण उपवासनुं फल तेमने मळतुं नथी, ए अविरतिनुं कारण जाणवुं. एकेन्द्रिय जीवो मन वचन ने कायाथी सावद्य व्यापार करता नथी तोपण तेमने उत्कृष्टथी अनंता काळ सुधी ते कायामां रहेवुं पडे छे; अने जो परभवे विरति करी होत तो तिर्यंच जीवो आ भवमां चाबुक, अंकुश, परोणानी तीक्ष्ण आरो इत्यादिना प्रहार तथा वध, बंधन,

मारण, परवशपणुं इत्यादि सेंकडो दुःख न पामत. हे सुज्ञो ! अविरतिपणाथी महादुःखो परवशपणे तिर्यंच नारकी विगेरे भवोमां भोगववां पडे छे, तेथो विरतिने अंगीकार करो ! नजीवा कष्टथी पाळी शकाय तेवा नियमो अति फळने आपनारां थाय छे, अने ते कष्ट–दुःख (अज्ञानीने बाह्यथो भासे छे) नथी, पण परिणामे सुखना हेतु होवाथी (नियमो) महा सुखज छे; जेथी सकाम निर्जरा थाय छे. अने जो ते नहि अंगीकार करीए तो परभवे तिर्यंच तथा नारकीओमां परमाधामी विगेरे क्रूर जनोथी महा आकरी वेदनाओ पमाडाती परवशपणे भोगववी पडशे ! जेथी विशेष हवे शुं ? पण टुंकामां प्राणान्त कष्टे पण तीर्थंकर महाराजे निषेधेली वस्तुओनुं भक्षण करवुं नहि, अने तेमां पण अमुक शेरनी छुट–आगार विगेरे शिथिलपणानो त्याग करी बावीश अभक्ष्यनो सर्वथा त्याग अने बीजा पण अनाचरणीय–अभक्ष्यनो पण अवश्य त्यागनो नियम करवो.

हवे नियम (प्रतिज्ञा-व्रत) केम अंगीकार करवो तथा पाळवो? ते जणावे छे–व्रतने अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार अने अनाचार एम चार प्रकारे दोष लागे छे. जेम के कोइए चोविहार (चार आहारनो त्याग) कर्यो होय अने अति तृषा लागे त्यारे पाणी पीवानी मात्र इच्छा करे ते अतिक्रम; जे स्थानके होय ते स्थानकथी पाणी पीवाना स्थळे जाय ते व्यतिक्रम दोष लागे; पाणी पीवा पाणीना वासणमांथी प्यालो भरी मुख आगळ धरे पण पीये नहि

त्यां सुधी अतिचार लागे, अने ज्यारे ते निडरपणे पाणी पीये त्यारे तेणे अनाचार (महा दोष–पाप) सेव्यो कहेवाय. त्यारे ता तेने परभवनी पण बीक न रही; पण ज्यारे परमाधामीओ उना धगधगता सीसाना रस बळात्कारे तेने पाय छे त्यारे ते अत्यंत त्रासजनक वेदना भोगवे छे, अने तेमांथी छुटवा प्रयास करे छे पण करेलां कर्म भोगव्या वगर ते बिचारो क्यांथी मुक्त थाय? एम समजी अतिक्रम दोष पण न लागे तेवा भवभीरु थइ व्रत पाळवुं. धन्य छे व्रत पाळवामां दृढ एवा सिंह श्रेष्ठिने के जेणे दिशिनो अंगीकार करेलो नियम अति विकट स्थितिमां पण भंग नहि करतां अनशन करी एक मासमां केवळज्ञान उपार्जी मोक्षगति मेळवी! शरीर (पुद्गल) के जेनो स्वभाव सडन, पडन अने विध्वंस थवानो छे, तेथी तेना उपर मोह न करतां उभयलोकमां सुखनुं भाजन एवुं जे व्रत तेने प्राण करतां पण वधारे प्रिय गणवुं. अग्निमां प्रवेश करवो सारो पण अंगीकार करेला व्रतनो कदि भंग न करवो. (Sacrifice money, even life rather than principle) माटे सत्य प्रतिज्ञावंत थवुं. सुज्ञेषु किंबहुना?

श्रावके गृहमां दश ठेकाणे चंदरवा अवश्य बांधवा जोइए.

१ चूला उपर, २ पाणीयारा उपर, ३ भोजन करवाना स्थान उपर, ४ घंटी उपर, ५ खाणीयापर, ६ वलोवणां (छाश

करवाना स्थान) उपर, ७ सुवाना बिछाना पर, ८ न्हावाने ठेकाणे, ९ सामायक प्रमुख धर्म क्रिया करवाना स्थाने (पौषधशाळामां) अने १० देरासरमां.

ए रीते दश चंदरवा बांधवा; जेमांना प्रथमना छ चंदरुवा भोजन आश्री छे तेज कही आपे छे के भोजनना संबंधमां बहु जयणा पूर्वक वर्तवानी आवश्यकता छे. तेथी शारीरिक तन्दुरस्तिनो घणो लाभ छे, अने शरीरनुं जो आरोग्यपणुं होय तो सारी रीते धर्मसाधन वगेरे करी शकाय, तेथी हवे विशेष स्फुट करवा जेवुं नथी.

वळी सात गरणां राखवा जोइएः–

१ पाणी गळवानुं; २ घीगरणी; ३. तेल गरणी; ४ दूध गळवानुं; ५ छाश गाळवानुं; ६ उकाळेलुं अचित्त पाणी गळवानुं; ७ आटो चाळवानुं (आंक).

ए मुजब सात गरणां जरुर राखवां; तेथी कीडी, कंसारी, मच्छर, मांखी वगेरे त्रस जीवना पुद्गलो होय तो गळवाथी नीकळी जाय छे. पाणी अने आटो गळवाथी त्रस जीवनुं रक्षण थाय छे. पाणी माटे मजबूत पाणकोरानुं के तेवुं घट्ट गरणुं राखवुं. आ प्रमाणे करनारा भव्य प्राणिओने प्रत्यक्ष तेनो लाभ अनुभवाय छे. पाणी पहोरे पहोरे गळवुं जोइए; ते संबंधमां कुमारपाळ महाराजनुं सुचरित्र वारंवार मनन करवुं तथा तदनुसार जेटलुं बने तेटलुं वर्तन राखवुं योग्य छे. एवा आत्मार्थी परमार्थी पुरुषोनी बलिहारी छे! तेज धन्यवंत छे, तेज पुण्यवंत छे, तेज महंत छे, तेज परम सुखी

छे, वळी तेज उत्तम भाग्यशाळी छे के जेना हृदयपटने विषे दया-जयणारूपी चित्रामण चित्राइ रहेलुं छे. जैनशासन जयवंतु वर्तो !

हवे केवा भाजनमां तथा केवी रीते भोजन करवुं ते संक्षेपथी कहीए छीए–जे दोषो रात्री भोजनमां छे तेवाज दोषो अंधारा-वाळी जग्यामां खावा पीवाथी लागे अने ते ते दोष सांकडां मो-ढाना भाजन (जेमां नजर पहोंचे नहि एवा शीरोइ लोटाआदि) वापरवाथी लागे छे.

समयने अनुसरीने कांसाना अथवा कलइवाळा तांबा पीतळना वासण सामान्य प्रकारे ठीक गणाय छे पण अत्यारे आफानी दुनि-यानो वेग विचित्र प्रकारनो थतो जाय छे; कोण जाणे केवा प्रका-रनो पवन भरायो छे ते समजी शकातुं नथी के आपणा पूज्य वडीलश्रीओनी पद्धतिओ उपर तिरस्कारनी दृष्टिए जोतां, ते उवेखीने हवे टीन (इनेमल) लोढाना वासणोनो आदर करता जाय छे के जे वासणो कोइ पण जैन अगर हिंदु बंधुए वापरवा उचित नथी. मुंबइ समाचार वगेरे उपरथी जाणवामां आवेल छे जे तेने ग्लेज करवामां इंडानो रस वपराय छे, अने जीवता बळदोने मारी तेना आंतरडाओनो प्रवाही भाग पण वापरे छे, तेथी ते खरेखर त्रासजनक छे; माटे ते वासणनो शीघ्र त्याग करवो जोइए. आवा प्रथम सस्ती सुशोभित चीजो परिणामे बहु मोंघी ने नकामी थइ पडे छे; अने आ प्रमाणे आपणे आवी चीजो वापरवाथी अल्प वखतमां केवी निर्धन अवस्थाए पण पहों-

च्या छीए के जे वस्तु खरीद कर्या पछी वपराये तेनी कांइ पण किंमत उपजी शके नहि, अने कांसा के त्रांबा पीत्तळना वासणोनी फुट्या पछी पण गमे त्यारे तेना (मूळ किंमतना) अडधा भागना के तेथी विशेष पण नाणां अवश्य उपजे छे. अहो ! आपणा वडीलो—अगम बुद्धिवंतो व्यवहार अने धर्म कार्यमां केवा कुशळ हता, अने हवे आपणे केवा थया ! जे तेमना वचनोनो अनादर करी स्वेच्छाए वर्ती पोताने डाह्या मानी पूर्वोपार्जित अगणित मूडी गुमावी बेठा छीए; अने शाणी सरकार के जेओ आपणुं कांसु खरीदीने तेना पैसा सिक्काओ पाडे छे; हवे तो आपणने " विनाशकाळे विपरीत बुद्धि " अनुसार आपणुं सारुं सुवर्ण जेवुं छे तेने लोहुं मानीने ते वेची जे लोहुं छे तेने सुवर्ण सम मानी हर्षथी (तेना केटलाक मिथ्या फायदाओ कल्पी) ग्रहीए छीए, पण केवी दयाजनक स्थितिमां आपणे पोताने जोइए छीए; ते आपणांज कर्मनो दोष छे. खरे हजु पण आपणे चेतशुं नहि तो तेथी पण वधारे खराब अवस्थाए पहोंचशुं; माटे हे सुज्ञ बंधुओ चेतो ! एवा मलिन वासणोनो त्याग करीने कांसा अथवा पीतळना भाजनमांज आहार करो. पीतळना रसोइ तथा भोजन करवाना सर्व वासणने अवश्य कलइ होवीज जोइए. तेमज पत्रावाळां तथा पडीआने आश्री त्रस स्थावर जीवो होय छे, तेथी तेवा के केळ प्रमुखना पानमां पण भोजन न करवुं. अन्य दर्शनीने त्यां खास उपयोग राखवो. दिवस छतां पण अंधारामां जमवुं नहि. माटे दिवसे ज्यां

सारुं अजवाळुं आवतुं होय त्यां पहोळा स्वच्छ वासणमां भक्ष्याभक्ष्यनो विवेक पूर्वक विचार करी स्थिर चित्ते तथा प्रायः मौनपणेज भोजन करवुं. एठे माढे वात करवाथी एक तो ज्ञानावर्णीय कर्मनो बंध थाय, बीजुं वातोमां ध्यान जवाथी भोजनमां माखी प्रमुख त्रस जीव पडवाथी ते जीवनो प्राण जाय, वळी माखी खावामां आवी जाय तो वमन थाय, वळी अन्न वखाणवुं वखोडवुं कहेवाथी दोष लागे, माटे मौनपणे जमवुं; कदाच बोलवानी जरुर जणाय तो पाणीथी मुख शुद्धि करीने बोलवुं. भोजनमां कोइपण सजीव के निर्जीवनुं कलेवर आवी न जाय तेम स्थिरचित्त राखी चक्षुवडे बराबर तपास करी उपयोग पूर्वक हित मित (पथ्य अने प्रमाणोपेत) भोजन करवुं. [1]भोजन करती वेळानुं पंचीयुं (धोतीयुं) जुदुं होवुं जोइए, तथा हाथ पगनी शुद्धी करवी युक्त छे; तेमां पण जेओ नित्य प्रभुनी पूजा करनारा छे तेणे राखवडे बराबर हस्तशुद्धि करवी; कारण के केसरना डाघ होय के घीवाळा हाथ होय तेथी जो बरोबर शुद्धि न थाय तो केशर के घीनो सूक्ष्म अंश पेटमां

---

१ आपणा देशमां जे भेगा बेसीने जमवानी प्रवृत्ति छे ते युक्त नथी, केमके कोइने रोगादि खस, खरज, गुंमडादि होय तेथी भेगा जमनारने चेप लागे, वळी एक बीजानुं एठुं खावुं ते पण ठीक नथी, एठवाड घणो वधी पडे, जीवोत्पत्ति बहु थाय वगेरे घणा दोषो छे.

जवाथी देवद्रव्यना[1] भक्षणनो महा दोष लागे, माटे शुद्धि बराबर करवी. (प्रसंगोपात लखवानुं जे कोइ वखते हाथ धोवामां जे सचित्त माटी वपराय छे तेथी बहु दोष लागे, माटे राख प्रमुख साधनथी हस्तशुद्धि करवी सारी छे. अगाशीमां के माथे ढांकण न होय तेवा उघाडा स्थानमां पण आहार करवो नहि. घी, गोळ, दूध, दहिं, छाश, दाळ, शाक, पाणी प्रमुखना भाजन मुद्दल क्षणवार पण उघाडा न मूकवां. श्रावके प्रथम तो जोइए ते करतां ओछुंज भोजन लेवुं, अथवा जरूर जेटलुंज लेवुं, अने एठुं मुद्दल न मूकतां थाळी वाटका प्रमुख धोइने पी जवां जोइए; थाळी धोइने पीवाथी आयंबीलनुं फळ मळे छे. आवी रीते नित्य प्रथम शुद्धमान आहार[2] निर्ग्रंथ मुनिमहाराजने वहोराव्या बाद उपयोग पूर्वक भोजन करवाथी ते अमृत समान फळ आपे, नहितर तेना विषसमान फळो अवश्य चाखवां पडे ते निःसंदेह जाणवुं. एम सद्दहि भव्य बंधुओ! अष्टप्रवचन माताने हृदयमां स्थान आपी आ मनुष्य जन्मनुं सार्थक करो! जेथी अष्टकर्मनुं विदारण करी अल्प भवोमां शिवसंपदा–सुखडां पामीए!

---

१ देवद्रव्य ज्ञानद्रव्य प्रमुखनुं भक्षण करनारनुं अन्न पाणी कदि लेवुं नहि.

२ शुद्धमान आहारमां प्रथम तो न्यायोपार्जित द्रव्यनुं भोजन जोइए. अन्यायथी मेळवेल धननो आहार तुच्छ छे, तेथी नीतिने न्याय पूर्वक व्यापारादिकमांथी मेळवेलुं धन होय तेनुंज उत्तम अने शुद्ध भोजन छे, तेवो तथा श्रावकथी लागता दोषो टाळीने जे

जमेलां–एठां तथा रसोइनां भाजनो कलाकोना कलाको पड्या रहेवाथी तेमां त्रस जीवो पडी तेना प्रिय प्राण खुवे छे, तथा एठां वासणोमां बे घडी लगभगमां संमूर्छिम जीवोनी उत्पत्ति थाय छे, जेथी तुरतज उटकी नांखवा के नोकर पासे उटकाववां; पाणी गळाववुं, चूलो संध्रुकवो, शाकपान समारवुं, इंधण (लाकडां) छाणां पुंजवा वगेरे काम नोकर के रसोयाने विश्वासे मूकवाथी अनेक जीवोनी नित्य हानि थइ जाय, तेथी गृहिणी (स्त्री) ए जाते जे करवा जेवुं होय ते बनी शके तो प्रमाद मूकी पोते करवुं, अने जे नोकर पासे कराववुं होय ते पण बने त्यां सुधी पासे उभा रही जयणा पूर्वक कराववुं, अने नोकरोने पण शिखामण आपी जेम यत्नाथी प्रवर्ताय तेमज वर्तवुं उचित छे. सुज्ञेषु किंबहुना ?

निर्दोष आहार वहोराववो तेज शुद्धमान आहार छे. तेवीज रीते न्यायोपार्जित अल्प मूडीमां पुणिया श्रावक एक दिवस पोते उपवास करता अने बीजे दिवस तेनी स्त्री उपवास करती, अने तेम करीने दररोज एक साधर्मी भाइनी भक्ति करता हता. आपणे पण तेवीज राते न्यायपूर्वक द्रव्य मेळववुं उचित छे, नहितर कुडकपट करी अन्याय मार्गेथी मेळवेल द्रव्य अहीं मूकी जइ हाय द्रव्य! हाय द्रव्य! करतां मृत्यु पामी तेना फळ भोगववां पडशे. अन्याय अनीति ज्यां त्यां सवत्र प्रसरी रही छे, कोइ विरला न्यायमार्गे चाकनारा हशे, तेनुं अनुकरण थाय तो उत्तम छे.

सुज्ञ व्हेनोने खास ध्यानमां लेवाजोग सूचनाओ.

जेम राज्यमां मंत्रीनुं प्रधानपणुं छे, तेम गृह मध्ये स्त्रीनुं प्रधानपणुं छे; अने तेथी स्त्रीओए आ "अभक्ष्य अनंतकाय" नुं वर्णन मननपूर्वक वांचवा वर्तवानी आवश्यकता छे. सुज्ञ श्राविकाओ ! तमेज गृहरूपी राज्य सुधारवा धारी शको तो बने, नहितर पुरुषथी बनवुं मुश्केल छे, केमके पुरुष आखो दिवस तेना व्यापार धंधाथी वींटायेलोज प्रायः होय, तेथी नीचे लखेल सूचनाओ ध्यानमां लइ ते प्रमाणे वर्तन राखशो तो तमे स्व तथा परना कल्याणना कारणिक थशो.

१. सूर्यना किरण फुट्यां पहेलां चूलानो आरंभ करवो नहि. प्रथम सर्व जग्याएथी काजो लीधा बाद तमाम कामनो आरंभ करवो.

२. सवारमां पहेलां पुंजणीथी दररोज दरेक ठाम–वासण चूलो वगेरे यत्नाथी पुंजवां, अने ते जीवोने कोरी जग्याए मूकवा के ज्यां मनुष्य जनावर प्रमुखनी हालचाल न होय. लाकडां, [1]छाणां, कोयला, सगडी वगेरे रसोइनां साधनो बरोबर पुंज्या

---

१ छाणां भांगी नाखीने वापरवा, चोमासामां छाणां के नाळीयेरीना छालां बाळवा नहि; केमके तेमां बहु त्रस जीवो थइ जाय छे.

पछी उपयोगमां लेवा, तेमां पण चोमासानी ऋतुमां बे त्रण वख्त खूब संभाळथी पुंजवां, कारण के चोमासामां जीवनी बहु उत्पत्ति थाय छे. लाकडामां कोइ जातमां अंदर मोटा जीव थाय छे, जे अंदरथी लाकडुं कोरी कोराने लोट जेवो भुको काढे छे, तो ते उपरथी लाकडामां तेवा जीवनी उत्पत्ति छे एम जरुर जाणवुं. वळी ते खंखेरतां करतां पण नीकळी शकता नथी, अने तेथी ते जीवो अग्निमां बळी भस्म थाय छे; तो तेवां लाकडां एककोरे मुकी देवा अने ते बाबत बहु उपयोग राखवो.

३. रसोडानां ठाम वासण तथा मशालो, घी, तेल, दूध, दहिं, रोटला, रोटलीना तथा पाणी एठवाड वगेरेनां वासणो उघाडां मुद्दल राखवां नहि. एठवाड बे घडी पहेलां जानवरने पाइ देवो के ताप पडतो होय तेवी जग्यामां छांटी देवो वगेरे योग्य व्यवस्था करवी, नहितर तेमां असंख्य संमूर्च्छिम जीव उपजे.

४. मीठुं, मरचुं, वगेरे मशालो राखवाना वाटला (लाकडाना खानांवाळा) बहु स्वच्छ राखवा, अने वाटलाओमां राखवा करतां पण मजबूत बुचवाळी शीशीओमां राखवा युक्त छे, कारणके चोमासामां हवा लागवाथी मरचामां तद्वर्णी लाल सूक्ष्म इयळो पडे छे, तथा कुंथुआ, लीलफुग प्रमुख थाय छे, अने वाटलाओमां त्रस जीव पण चडी जाय छे; जे पछी रसोइमां उतावळे जोया तपास्या वगर वापरवाथी आवा प्राणीओनो विनाश थइ जाय छे. मशाला दाळ शाकमां, साकर चीनी प्रमुख चा दूधमां, घी तेल

प्रमुख दाळ शाक के रोटलीमां वापरतां पहेलां खूब बारिकीथी तपास करवो के तेमां सजीव:के निर्जीवनुं कलेवर तो नथी; नहि तर अल्प प्रमादे मोटो अनर्थ अहर्निश थाय छे.

५. सांजे सूर्यास्त पहेलां चूलो ठारी नांखवो, ते पण सचित्त (काचुं) पाणी छांटीने ठारवो नहि; कारण तेथी अग्नि तथा पाणीना जीवोने अतितीव्र किलामना थइ तेनो नाश थाय छे. वाशी मुद्दल न राखवुं; नानां छोकरांओ होय तो सवारमां ताजुं करी आपवुं, जेथी शारीरिक अने धार्मिक एम बे मोटा लाभ छे. नानां बच्चाओने प्रथमथीज अभक्ष्य–अनंतकाय माटे उपदेश करतां रहेवुं, जेथी तेओ मोटी उम्मरे तेवी चीजोथी दूर रहे. कुमळी डाळी जेम वाळवी होय तेम वळी शके छे, पण तेज थड थइ गया पछी वळे नहि; तेथी शिशुवयना बाळकोनो स्वार्थ सुधारवो के बगाडवो ते तेनी माता उपर विशेष आधार राखे छे.

६. जो तमे श्रीमंत हशो तो ते पण पूर्व पुन्यना उदयथीज छो, तो नोकर वगेरेने हुकम करी जे काम करावबुं तेमां विशेष विचार करवो, जे कार्य पोताथी जयणाथी थाय ते नोकर कदिपण न करी शके. नोकरने शाक समारवा आप्युं होय तो शाकनी साथे बीजा जीवोनुं पण छेदन करी नांखे, पाणी गळे ते पण धडा विनानुं, तथा तेनो संखारो नीचे नांखी दे के खारा पाणीनो संखारो मीठा पाणीमां नांखी आवे के मीठा पाणीनो संखारो खारा पाणीमां नांखी आवे, पाणीना एठा वासण गोळामां बोळे. वळी

तमे नोकर उपर विश्वास मूकी तमारा जमेला एठा वासणो एमने एम मूकी हींडोळा उपर के सुखशय्यामां आराम करो, पछवाडे बे कलाक सुधी ते वासणो पड्या रहे, अने तेमां धवोधव जीवो पडी तरफडीयां मारी प्राण छोडे. खरी रीते श्रावकनो एज धर्म छे के थाळी वगेरे धोइने पी जवुं जोइए, कारण तेमां बे घडीमां असंख्य जीव उपजे; वळी प्रमादने लीधे पाणीयारा आगळ गोळानी आसपास लील पण थइ जाय; आवा अनेक दोषो आपणा प्रमादथी थाय छे. जो तमाराथी आवुं काम थवुं अशक्य होय तो नोकर पासे उभा रही यत्नाथी करावुं ते पण योग्य छे; नहितर पुण्यरूपी मुडी व्याज सुद्धां खाइ जवाना, त्यारे परभवे क्यांथी सुखो मळशे. अजरामर सुख लेवानो अवसर आव्यो छे छतां शामाटे विषय कषाय ने विकथामां गरकाव थइ जाओ छो ! प्रमाद मूको अने मनुष्य जन्मनुं सार्थक करो ! दुष्ट प्रमादज दुर्गतिने विषे लइ जवामां मोटो तस्कर समान छे, जेथी चेतो !

७. चार महा विगइनो अवश्य त्याग करो; आइसक्रीम बरफ विगेरे उपरथी ममता छोडो; तमारा बाळकोने अफीण (बाळा गोळी) ना व्यसन छोडावो; काची माटी, काचां मिठानो त्याग करो-प्रमाद मूकी अचित्त मिठुं तैयार करी वापरो; रात्रिभोजननो तमे त्याग करो, जेथी तमारा पुत्र वगेरे तमारुं अनुकरण करे; तल, खसखसनो त्याग करो; बोळ अथाणा वगेरेनां स्वाद मूको-मूकावो (यथार्थ रीते जोतां स्त्रीओज आवी अनेक

चीजो विचित्र प्रकारे बनावी पुरुषोने रस इंद्रियने आधीन करे छे); विदलनो खास उपयोग राखो, कारण के तेमां तमारुं प्रधानपणुं छे. कदाच पुरुष विरतिवंत न होय तोपण तमे तेने आवा दोषमांथी अटकावी शको छो; वेंगण (रींगणां) प्रमुख शाकनो भडथो करवानो त्याग करो; चणीबोर खावानो त्याग करो; विकथानो पण त्याग करो, " क्षण लाखेणो जाय " जरा विचारो, धर्मकार्यमां प्रवृत्त थाव; चलित रस, वाशी माटे बहु उपयोग राखो; लोट, मुरब्बो, अथाणां, सेव, वडी, पापड प्रमुख विगेरे माटे लखेली हकीकत खास ध्यानमां ल्यो ने ते प्रमाणे वर्तो, तथा जेने उपयोग न होय तेने नम्रताथी कहो-शीखवो. अनंतकायनो त्याग करो; आ मनुष्य जन्म सफळ करवा माटे लीली हळ्दर, आदु, लसण वगेरे गमे ते रोग छतां पण मूको; आपणो अनादिनो कर्मरूपो रोग टळशे त्यारेज खरूं शाश्वतसुख पामशुं; फागण चोमासुं बेठा पहेलां तेल आठ मास माटे सारा ठाममां भरावी राखो; अशाड चोमासामां खांड, काजु, बदाम, पस्ता, द्राक्ष वगेरेनो उपयोग बंध करो; सुकवणी अशाड चोमासा पहेलां वापरी नांखो अने त्यारथी कार्तिक चोमासा पर्यंत तेनो त्याग करो; लीलो वांस, बीली, बीलां, केरडां, नागरवेलना पानने जलांजलि आपो; परदेशी मेंदो, परसुदीनो लोट के रवो बजारमांथी मंगाववो बंध करो; भले जरा तस्दी लेजो पण तेथी अनेक जीवोनो आशीर्वाद मळशे. पाणी घीनी माफक वापरो अने मजबुत गळणां वती दिवसमां बे त्रण वखत गळवा श्रम उठावशो तो परभवे पसीनानां टीपां नहि

पडे—अर्थात् सुखी थशो ने अनुक्रमे शिव संपदाने पण पामशो. विशेष तो तमारा प्रधानपणामां तमेज वाकेफ हो, तेथी दरेक कार्य उपयोग, विवेक, जयणा पूर्वक करो.

८. तिथीने दिवसे दळवुं, खांडवुं, भरडवुं, धोवुं, माथुं गुंथवुं, न्हावुं, छाश लेवा जवुं, गार करवी वगेरे करवुं कराववुं अनुमोदवुं नहि; तथा त्रण चोमासानी, बे आंबेलनी ओळीनी तथा पर्युषण पर्वनी एम छ अठ्ठाइमां उपर मुजवना कोइ पण आरंभ त्रियोगे (मन, वचन, कायाए) करवा नहि.

९. मिथ्यात्व लौकिकपर्व—जेमके दिवासो, रक्षाबंधन, श्राद्ध, नोरतां, हुताशनी, संक्रांत, गणेशचोथ, नागपांचम, रांधणछठ, शालसातम (वाशी खावुं), गोकळआठम, नोलीनवमी, अहवादशमी, भीमअगीआरशो, धनतेरशी, अनंतचौदश, अमावास्या, सोमप्रदोश, सोमवती, बुद्धाष्टमी, दशेरा, ताबुत, बकरी इद प्रमुख पर्वो मिथ्यात्वना हेतु तथा अनर्थ कारक छे, तेथी तेनो त्याग करो; आपणे दुधपाक, बासुदी, लाडु वगेरे करीने खावाना क्यां बीजा दिवसो नथी के तेज दिवसे खावुं के उत्तेजन आपवुं? आवा मिथ्या आचरणनो त्याग करी आपणो आचार शुं छे ते जाणवा—पाळवा उजमाळ थाओ! धन्य छे सुलसा श्राविकाने के जेनुं सम्यक्त्व अत्यंत द्रढ हतुं, जेथी ते श्राविका आवती चोवीसीमां आ भरतक्षेत्रमां पंदरमा श्री निर्मम नामना तीर्थंकर थशे.

१०. रडवा कूटवाना चाल, दशा, अग्यारमुं, बारमुं, तेरमुं, दाडो, वास्तु, अघरणी, श्राद्ध, बाळलग्न विगेरे [illegible] रिवाजो हवे पडता मूको ! तेथी फायदो तो लगारे नथी अने नुकशान तो पारावार थाय छे.

सुज्ञ ब्हेनो ! उपरनी सूचनाओ वांची विचारी ते मुजब वर्तवा उजमाळ थशो तो अवश्य आपणो सारो उदय थशेज.

चौद स्थानकने वीषे उपजता संमूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय जीवनी प्रमाद दोषथी सेवाती हिंसा—ते संबंधी करेलो उल्लेख समजी विचारी जेम बने तेम उपयोग राखी ते दोषमांथी मुक्त थवा माटे यथाशक्ति वीर्य फोरववुं.

१. जेओ नाना गाममां रहे छे, अथवा जेओने नजीकमां नदी, तळाव, दरीया किनारो, जंगल, क्षेत्र, छुटी वाड विगेरे भूमिओ होय तेओए ज्यां सुधी बने त्यां सुधी तेवा स्थानकोने विषे झाडा (वडीनीति) अर्थे जवुं, केमजे बंधेज पायखानामां जाय छे त्यां प्रकाशनी खामी, हवानो अभाव, दुर्गंधीना कारणो विगेरेथी शारीरिक आरोग्यताने नुकशान थाय छे, तथा धार्मिक रीते तपासतां त्यां कीडा वगेरे अगणित जीवोनी उत्पत्ति विनाश तथा असंख्य संमूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय जीवोनी उत्पत्ति विनाश थाय छे. कोइ तेवा रोगीना झाडा पेशाबपर लघुनीति, वडीनीति करवाथी भयं-

कर रोग पण लागु पडी जाय छे. साथळना मूळ वगेरेमां धाधरना रोग घणाने लागु पडे छे. ते वगेरे अनेक शारीरिक अने धार्मिक नुकशान न थवाने अथ छुटमां जवुं ते बहेतर छे. ते पण कोरी जग्याए ज्यां कीडी प्रमुखनां दर (स्थानो) न होय; लीलोतरी, कादव, भेजवाळी जग्या न होय तेवी भूमिने विषे जवुं, तेथी शारीरिक तंदुरस्ती सारी रहे छे, तथा अनेक जीवोनी दया पळे छे, माटे ते बाबत खास उपयोग राखवो.

२. लघुनीति (पेशाब) करवो, ते पण छुटमां कोरी जग्यामां के ज्यां तुरतमां सुकाइ जाय त्यां करवो युक्त छे. पेशाब उपर पेशाब करवाथी शारीरिक प्रत्यक्ष नुकशान छे. मोरी, गटर वगेरेमां पेशाब करवाथी असंख्य संमूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय जीवो तथा कीडा प्रमुख त्रस जीवोनी उत्पत्ति विनाश थाय छे, तेथी तेवां स्थानो वर्जवां. शास्त्रमां मोरी वगेरे स्थानके पेशाब करनारने छट्ठ एटले बे उपवासनुं प्रायश्चित्त कहुं छे, त्यारे पायखानामां झाडो प्रमुख करनारने केटलो बधो दोष लागे? जेथी लघुनीति (पेशाब), वडीनीति (झाडो) छुटमां कोरा जग्याए ज्यां सूर्यनो प्रकाश पडे त्यां करवो उचित छे.

३. मुखमांथी बळखो नांखतां, नाकमांथी लींट काढतां, थुंकतां, वमन (उलटी) थतां, काननो मेल, परु परठवतां या शरीरना कोइपण भागमांथी लोही, रसी, प्रमुख परठवतां निर्जीव स्थानके ज्यां तरत सुकाइ जाय, दिवस होय तो सूर्यनो प्रकाश

पडे तेवा स्थाने घरथी दुर जइ परठवीने तेना उपर राख बराबर नांखवी. आ बाबतनो उपयोग विवेकी धर्मात्माए जरुर करवो युक्त छे. वळी आ प्रमाणे उपयोग धारे तो दरेक समजु माणस करी शके तेम छे. तेम न वर्ततां अजयणाए परठववाथी तेमां असंख्य संमूर्छिम पंचेंद्रिय जीवोनी उत्पत्ति विनाश थाय छे. वळी मांखी, कीडी, मंकोडा प्रमुख जीवो तेने खावानो पदार्थ समजी चोंटे छे, अने तेनो स्पर्श थतां तेनी पांख अंग प्रमुख बळखा, लींट, प्रमुखनी चीकाशने लीधे चोटी जवाथी आवा अनेक त्रस जीवो प्राण खुवे छे वगेरे घणा दोषो थाय छे, तेथी कोरी जग्याए परठवीने तुरतज राखथी ढांकी देवुं, नहींतर फक्त अंतर्मुहूर्तना काळमां (काची बे घडीनी अंदर) तेमां समूर्छिम पंचेंद्रिय जीवो उपजे छे, जेथी आ बाबत विवेकी श्रावके दयाना कोमळ परिणाम राखी उपयोग राखवो जोइए.

४. शरीरे अभ्यंग (तेल मर्दन–पोठी चोळवी) करीने स्नान करवुं, या ते वगर फक्त स्नान करवुं होय तो मोरी, खाळ वगेरेमां स्नान न करवुं; केमके ते पाणीमां शरीरना मेल वगेरने लीधे ते पाणी जेमने तेम रहेवाथी असंख्य संमूर्छिम जीवो उत्पन्न थाय, तथा घणो वखत या दीवसो सुधी ते पाणी एक जग्यामां रहेवाथी तेमां बीजा पण अनेक त्रस जीवादिनी उत्पत्ति विनाश थाय छे; तेथी ज्यारे स्नान करवुं होय त्यारे निर्जीव जग्याए रेती प्रमुख होय तेवा स्थाने, ज्यां सूर्यना प्रकाशथी तुरतमां सुकाय जाय त्यां स्नान

करवुं उचित छे. वळी श्रावके नदी, तळाव, कुंड प्रमुखमां कदी स्नान करवुं जोइए नहीं, तेथी अनेक जीवोनी हिंसा थाय छे, वळी पाणीनुं परिमाण रहेतुं नथी. चौद नियमवाळा श्रावके तो बनतां सुधी नदी प्रमुख जळाशयमां न्हावुं न जोइए, केटलीक वखत झेरी जंतुथी प्राण खोवानो वखत आवे छे, अथवा पाणीमां मुंझाइ जवाथी या तरतां न आवडवाथी या कोइ तेवा स्थानमां पग प्रमुख खुंची जवाथी प्राण जाय छे वगेरे अनेक दोषो होवाथी तेवा जळाशयोमां स्नान करवुं नहिं. स्मशानादि जवाना कारणे उपयोगी श्रावक घारे तो पाणी गळीने स्नान करी शके छे. श्रावक अणगल पाणीथी स्नानादि कांइ करी शके नहीं, त्यारे जळाशयमां स्नान करवुं-क्रीडा करवी ते केटला दोषनुं कारण छे? आ बाबत विशेष विवेचन न करतां जे विषयपर आ लखवुं छे ते माटे एटले स्नान मोरी-खाल, जळाशयोमां न करतां उपर कह्या मुजब जयणापूर्वक करवुं उचित छे.

एटलुं खास ध्यान राखवुं जे लघुनीति (पेशाब), वडीनीति (झाडो) जिनमंदिरथी जघन्यपणे सो हाथ दूर करवुं जोइए; तेमज नाकनुं लींट, बळखो प्रमुख जिनमंदिरना कम्पाउन्डमां नज नाखवां जोइए. घणी जग्याए जिनमंदिर पासे ओरडी प्रमुखमां स्नान करवानी जग्याओ राखवामां आवे छे, जे पाणी एकंदर गटर-मोरीमां जाय छे, वळी त्यां स्नान करवानी जग्याए कोगळा करवा, मों साफ करवुं, बळखा लींट काढवां, साबु प्रमुखथी न्हावुं वगेरे

अनेक दोषो सेवाय छे, तेथी करीने ते प्रमाणे आचरण करनाराओने जाणता छतां जेओ आंखआडा कान करी चलावे छे तेओ पण तेना जोखमदार छे. आ माटे जेओथी बने तेओए यथाशक्ति उपाय शोधी ते ते दोषो दूर करवा कराववा प्रयास करवो युक्त छे.

५. शास्त्रमां कहेल छे जे एठुं भोजन मुकवुं नहीं, केमजे तेथी तेमां अंतर्मुहूर्तमां असंख्य संमूर्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय छे; तेथी खावानी थाळी धोइ पी जवी जोइए. आ बाबत मोटा जमणवारो–नातोमां बहु अणउपयोग जोवामां आवे छे. विरतिवंत तथा बीजा पण विवेकी श्रावक बंधुओए एवे प्रसंगे उपयोग पूर्वक जरूर जोइतुं खावापीवानुं लेवुं; जेथी एठुं वधवानो प्रसंग न आवे.

६. तेवीज रीते पाणीना संबंधमां पण समजवानुं छे. पाणी काढवाने माटे जुदोज लोटो राखवो जोइए. एठां भाजनो पाणीना गोळामां बोळवाथी पण पूर्वोक्त दोष लागे छे, तेथी आ बाबत खास उपयोग राखवो जोइए. काठीयावाड, गुजरात प्रमुख देशोमां आ दोष वधारे प्रचलित छे; तेथी तेओ वधारे टीकापात्र थाय छे. हवे तो त्यांना भाइओ, बेनोए कंइक जागृत थइ वधारे कडवी टीकाना पात्र न थवाय तेम चेती लेवानी पुरी जरूर छे.

छेवटे समाप्तिमां आ ग्रंथमां जे कोइ मति मंदताथी उत्सूत्रता आदि दोष लाग्या होय तेनी क्षमा चाहुं छुं इति शम्.

सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारणं ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१॥

समाप्त.

८

परमार्हत श्रीकुमारपाळ भूपाळना बार व्रतनी संक्षिप्त नोंध.

***लेखक—मुनि पुण्यविजयजी.**

केटलाक श्रावको स्व अने परने एम बन्नेने उपकार करवाने समर्थ छे. एवी रीते तेओ बन्ने प्रकारथी कुमारपाल भूपालनी पेठे सार वाळा रत्न सरिखा होय छे. अत्रे अंतमां ते श्रीकुमारपाळ महाराजे ग्रहण करेल सम्यकत्वमूल बार व्रतनो संक्षेप सार लखवामां आवे छे. ज्यारे एक राजकार्यभारनो मोटो वहेवार चलाववा छतां तेमनी व्रतादिमां केवा उत्तम वृत्ति हता त्यारे आजकालना श्रावको जे ते राजाना अपेक्षाए एक अंश मात्र उपाधिवंत होइने केटले दरज्जे पछात छे ते तेनुं तादृश ब्यान वांचवाथी आपणी प्रमाद दशा प्रत्यक्ष तरी आवशे. तेओ एक राजा होवा छतां (सुकोमळपणाने अंगे) केवा दृढ चुस्त व्रतधारी हता ते विचारो!!!

श्री कुमारपाल राजा समकित मूळ बार व्रतोने धरनारा हता;

---

*आ अभक्ष्य अनंतकायनी बुकना कर्त्ता श्री जुनागढनिवासी मि. प्राणलाल मंगळजीए दीक्षा लीधी हती तेनुं नाम मुनि पुण्यविजयजी हतुं जेमणे आ लेख लख्यो छे.

सम्यकत्व ए एक अपूर्व वस्तु छे, जे संसारमां भ्रमण करता प्राणिने घणे प्रयासे अने घणे काले प्राप्त थइ शके छे. एवा सम्यक्त्व वगरनी करणी लुण वगरना धान्यनी जेम तुच्छ छे. अढार दूषण रहित वीतराग जिनेश्वर प्रभु तेज सुदेव; पंचमहाव्रत युक्त संवेग रंगरूपी तरंगमां [illegible] शुद्ध प्ररूपणाना करनार तेज गुरु, तथा तीर्थंकर महाराजे फरमावेल आज्ञा पूर्वक अहिंसामय धर्म तेज सुधर्म; ए त्रण तत्व सद्दहनार तथा प्राणान्ते पण चलायमान नहि थनार एवा सम्यक्त्वधारक कुमारपाल त्रिकाल जिन पूजा करता, अष्टमी चतुर्दशीए पौषधोपवास करता, पारणाने दिवसे दृष्टिए पडेला सेंकडो गमे मनुष्योने यथायोग्य आजीविका आपी संतुष्ट करता, साथे पौषध करनाराओने पोताने घेर पारणां करावता, धनहीन थयेल दरेक साधर्मीने हजार हजार सोना महोरो आपता, एक वर्षमां साधर्मीओने क्रोड सोना महोरनुं दान देता, ए प्रमाणे चौद वर्षमां चौद क्रोड सुवर्ण महोरनुं साधर्मीओने दान आप्युं, अट्ठाणुं लाख द्रव्यनुं उचित दान आप्युं बहोंतेर लाख द्रव्य आपी करजदारोना लखत फडाव्यां, एकवीश ज्ञान भंडार लखाव्या, नित्य श्री त्रिभुवनपाल विहारमां स्नात्रोत्सव कराव्यो, श्रीहेमचंद्राचार्यना चरणकमलोमां द्वादशावर्त्त वंदन कर्युं, पछी अनुक्रमे सर्व साधुओने वंदन कर्युं; पहेलेथी पौषधादिव्रत लेनार योग्य श्रावकने वंदन तथा मानादिक आप्युं, अढार देशोमां अमारि पडह वजडाव्यो, न्याय घंटा वगडावी. बीजा चौद देशोमां धनने बळे तथा मित्राइने बळे जीव रक्षा करावी, चारसो चुंमाळीश

नवा जिन मंदिरो कराव्या, सोळसो जीर्णोद्धार कराव्या अने सात तीर्थयात्रा करी.

प्रथम व्रत.

प्रथम व्रतने विषे " मारि " एवो जो अक्षर मुखथी बोलाय तोपण उपवास करता. (ज्यारे आजकाल क्रोधादिने वश बनी मारि नांखीश, मरतो नथी ? मरी जा ! प्रमुख अनेक तुच्छ वाक्यो सहेजे बोलाय छे; पण भाइ हसतां बांध्या कर्म ते रोतां पण छूटवां मुश्केल थशे, जेथी वचन शुद्धिनो खास उपयोग राखवो. गृहस्थोमां अने खेदनी वात छे जे मुनिपणुं अंगीकार कर्या छतां पण वचन-शुद्धिनो अविवेक जोवामां आवे छे. प्रथम तो घरने विषे घरना मुख्य माणसे नम्रतावाळी भाषा बोलवी जोइए, जेथी आसपासना पुत्र पुत्रादि पण तेवा विनयवान विवेकी बने, अने मुनिने विषे पण तेना नायकोए आ बाबत स्वयमेव खास उपयोग राखवो अने अंकुशथी पण निवारवा. पण ज्यारे साधुपणुं अंगीकार करी भाषासमितिनो उपयोग न राखे अने सारा गृहस्थने पण न छाजे तेवा वचनो जेम तेम बोले तो ते अति लज्जास्पद छे; तो मुनिओए तथा श्रावकोए कुमारपाल महाराजना प्रथम व्रतना नियमपरथी धडो लेवो जोइए.)

बीजुं व्रत.

बीजा व्रतमां भूल आदिकथी असत्य बोलतां आंबेलादि तप करता. (ज्यारे वर्तमान कलिकालमां श्रावको कपाळने विषे प्रभु आणारूप तिलक (निशानि—चांडला) लांबु चोडुं करी व्यापारादिकने विषे कपट माया मृषावादपणे आखा दिवसमां अनेक वार असत्य बोले छे ते शुं ? मार्गानुसारिपणाना पांत्रीश गुण मांहेलो प्रथम गुण न्यायोपार्जित द्रव्यथी आजीविका करे एवुं प्रभुनुं फरमान भूली जाय छे ! हजु सम्यक्त्व, अणुव्रत अने देश विरतिपणुं तो घणुं दूर छे. केमके ज्यां मूळ (बीज) नुं ठेकाणुं नहि तो शाखा वृक्ष ने फळ क्यांथी संभवे ? दुकानो पर घराकोने ठगवा तथा पोतानी दुकान छोडी बीजे माल न खरीदे ते माटे विश्वास पमाडवा धर्मना सोगन पण खाय, अने कहे के छेवट आ भाव पडशे, अने सोगन खाधा पछी न्यून कहे ! अरे साचा पण धर्मना सोगन समकिति प्राणि खाय नहि, त्यारे केवळ पापी पेटने भरवा माटे अने जे कुटुंबादिक नर्क गतिने विषे दीवो देखाडवाळुं छे तेना अर्थे आ अति खेदजनक छे के धर्मना जुठा सोगन खातां पण आ बिचाराओ लेश मात्र डरता नथी. वळी कोइ हितशिक्षा देतां बचाव अर्थे कहेशे जे 'साचुं नभतुं नथी. साचुं बोलीए तो व्हेला भुखे मरीए', आवा वक्र उत्तर देनाराए जाणवुं जोइए के—हाल पण अनेक मोटां शहेरोमां इंग्लीश फर्म—इंग्रेजनी दुकानोमां तथा केटलाक पारसीओ अने विरला हिंदुओ पण एकज भाव राखे छे (बोर्ड उपर

फक्त लखेल एकज भाव एटलुंज नहि पण नानाथी मोटा दरेकने माटे एकज भाव लेवो.), जेओ पोतानी सत्यपणाना विश्वासनी छापने अंगे व्यापारमां घणो लाभ प्राप्त करे छे, तो सत्य प्रतिज्ञावंत थवुं. श्रावको ज कुडकपट असत्यने विषे कंठ प्रमाणमां डुबी रह्या छे एटलुंज नहि पण जैन मुनिनुं लिंग–वेश धारण करी अनेक प्रकारना कलह कदाग्रह प्रमुखने वश बनी बीजा व्रतनी मर्यादानुं उल्लंघन करनार थाय छे त्यारे हवे पोकार क्यां करवो ? जेने माटे उपाध्यायजी महाराज सवासो गाथानी सामंधर स्वामिनी विनति करता प्रथम ढालमां साफ लाव्या छेः—

कलहकारी कदाग्रह भर्या,
स्थापता आपणा बोलरे;
जिनवचन अन्यथा दाखवे,
आज तो वाजते ढोलरे.

तेओ कहे छे जे–कलहना करवावाळा, क्लेशमां राचीमाची रहेला अने कदाग्रहथी भरपुर छे, ते पोताना वचननी स्थापना करे छे अने प्रभुना आप्त–सत्य वचनोने आ वर्तमान काळमां खुल्ले छोगे निडरपणे ओळवे छे. शुं कारण ते कहे छे—

केई निज दोषने गोपवा,
रोपवा केइ मतकंदरे;

धर्मनी देशना पालटे,
सत्य भाखे नहि मंदरे.

कोई तो पोताना व्रतादिकने विषे खंडना-विराधनाना दोषोने संताडवा असत्य बोले छे, केमके सत्य कहे तो पोतानी कीर्तिनो नाश थाय, लोकमां तिरस्कारने पात्र थाय, तेवा भयथी जुठुं बोले छे; पण एक भूलने माटे प्रसंगोपात अनेकवार तेवुं जुठुं बोलवुं पडे छे, पण ते बिचारो कर्मवशात् भगवंतनी माशीना जेम सत्य कही शकतो नथी. ते (भगवंतनी माशा) महावीर स्वामि प्रत्ये अनेक वखत दीक्षा आपवा माटे विनंति करती हती, ज्यारे भगवंत " हजु योग्यता नथी " ते उत्तर आपता. एकदा समये कोइए आलोयण पूछ्ये छते भगवंते एक माखीनी हिंसा माटे जबरी आलोयण बतावी त्यारे ते भगवंतनी माशी पोतानां गुह्य पूर्वे करेला पापने माटे अति भयभ्रांत थइ छती समवसरणमां बार पर्षदानी वच्चे आवी पोतानुं पाप प्रगट करती हवी, जे हे प्रभो ! हुं पापीणी के जेणे माथाना केश प्रमाण अर्थात् अनेक पति भोगव्या ते दुर्भागिणिनी शी गति थशे अने तेनी शी आलोयणा (दंड) ? तेज वखते भगवंते कह्युं जे तुं ते सर्व पापथी (स्पष्टपणे अति निंदा पूर्वक पाप प्रकाशवाथी) मुक्त छे, अने हवे तुं दीक्षाने योग्य थइ छे. त्यारे तेणे दीक्षा लइ आत्महित कर्युं. तेवी रीते पोताना गुह्य पापने स्पष्ट प्रकाशवा ते तो दूर रहो, पण गीतार्थ सन्मुख तेनुं प्रायश्चित लेवुं ते पण दुष्कर छे, आजथी अेंशीमी चोवीशीने विषे लक्ष्मणा

साध्वीए सशल्य पणे ज्ञानिने प्रायश्चित्त पूछी पचास वर्ष पर्यंत घोर तप कर्यों छतां अनेक दुर्गतिओमां घणो काळ रखडी. आखरे श्री पद्मनाभ तीर्थंकरना समयम निःशल्य थइ मोक्षे जशे. त्यारे पोताना दुष्कृतो आखा जीवित पर्यंत गोपवी अनेक असत्य वचनो बोलनार प्राणि पापोनी आलोयण लीधा वगर केटला भव पर्यंत भमशे? वळी कोइ पोताना मतरूपी वृक्षनुं कंद रोपवाने अर्थे धर्मनी देशना पण उलट पुलटपणे प्रकाशे छे, अरे! ते बिचारा अज्ञानिओ लेश मात्र सत्य वचन न बोले त्यारे तेना शी गति? अने तेवी स्थिति होइने वळी आगळ कहे छे जे—

बहु मुखे बोल एम सांभळी,
नवि धरे लोक विश्वासरे;
ढुंढता धर्म तेणे थया,
भ्रमर जीम कमलनी वासरे.

उपर मुजब जुदे जुदे स्थळे असत्य उपदेश सांभळीने लोकोनो विश्वास (आस्था) उठी जाय छे, अने भ्रमर जेम कमलनी वास लेवाने माटे एक फुलथी बीजे, बीजेथी त्रीजे एम भमे छे तेम आ कलिकालमां असत्यवादिकुगुरुओना फंदमां फसायेला प्राणीओ धर्मने अर्थे ढुंढे छे—भमे छे, पण सत्यधर्म सद्वक्ता पंच महाव्रतना धोरी एवा सुगुरु वगर क्यांथी पामी शके? तेथी जैनलिंग—वेषने अंगीकार करी ते मुजब यथातथ्य सत्य वचन प्रकाशवा उद्यमवंत

थवुं अने कुमारपाळ महाराज ज्यारे एक भूलवशात् सहेज असत्य बोलातुं त्यारे आंबेलादि तप करता, ते तो अणुव्रत (देशविरति) धारी होइने केटला भवभीरु हता, तो त्रिविधे त्रिविधे असत्य न बोलवानुं व्रत ग्रहण करी उपर कहेला कोइ पण कारणोने अंगे हलाहल असत्य बोलाय तो केटलो संसार वधे ? तो तेवा श्रावकनुं पण दृष्टांत लइ सत्य प्रकाशवा पोतानी भुल सुधारवा मुनिपणुं धारण करी सत्य मुनिपणुं बतावबुं युक्त छे. तेमज श्रावके विश्वासघात प्रमुख दोषो वर्जी न्यायोपार्जित द्रव्य मेळववा सत्य बोलवुं तथा उपरना दृष्टांत मुजब सामान्य कारणोमां पण कदि असत्य बोलवुं नहि. तेने माटे इंग्रेजीमां कहेवत छे. के—

" Speak the truth and speak it ever "

साचुं बोल अने वळी ते (सत्य) सदा बोल.
सत्य वचनपर शास्त्रमां अनेक दृष्टांत छे तेनुं मनन करवुं.

त्रीजुं व्रत.

त्रीजा व्रतमां मृत्यु पामेलानुं द्रव्य लेता नहि. (कलिकाळना महिमा वडे आजकाल अन्यायोपार्जित द्रव्य एकठुं करी स्वपर आत्माने मलिन करनारा प्राणिओ अनेक चोरीनां पापाचरणो सेवी पोताने दुर्गतिमां जवानुं संबल वहोरे छे. जेवा के व्यापार नोकरी

प्रमुखमां कूडां तोल, कूडां माप, सारा नरता मालमां सेळभेळ, वस्तु लइने पाछी आपवी नहि, एकना आठ दश गणा दाम करवा, कुडा लेख लखवा, लांच लेवा-देवी, घराकने छेतरवा, सारो माल बतावी हलको आपवो, चोराइ वस्तु लेवी, दाणचोरी करवी, जकात न आपवी, कोइ चीज शेठनी लावतां या कोइ कार्य प्रमुखे मोकलतां चोरी करवी, हाथ चालाकी करीं भय देखाडी अन्यने ठगवुं, खीसा कातरवा, हिसाबमां ठगवुं, भूमिपर पडेली वस्तु उपाडी लेवी अने जेनी होय तेने न आपता या जाहेरमां न मूकतां पचावी पाडवी, ताळुं उघाडी गांठ छोडी चोरी करवी, रेलवेनी मुसाफरीमां लगेज टीकीट प्रमुखनी अनेक चोरी अने विश्वासघात विगेरे अनेक चोरीना भेदो छे ते आचरवां, जे अति निंद्य छे, आलोक तथा परलोकमां अति दुःखनुं कारण छे तेथी तेवां अकृत्यो सर्वथा वर्जवा. कहेलुं छे के " विविध प्रकारना उपाय अने छळ प्रपंच करीने जे बीजाओने ठगे छे ते महा मोहनो मित्र बनीने पोतेज स्वर्ग अने मोक्षना सुखथी ठगाय छे." उपर लखेलां नहि करवा योग्य अकृत्यो-चोरीनो त्याग करवाथी निर्वाह थाय नहि एम समजवुं नहि केमके निर्वाह तो पोताना पुण्य ने उद्यमथीज थाय छे. " Honesty is the best policy " प्रमाणिकपणुं ते उत्तम मार्ग छे, जेना उपर हेलाक श्रेष्ठीनुं दृष्टांत विचारवुं के जे प्रथम अन्यायथी व्यापार करता, एक वखत पुत्रनी वहुए कह्युं के ससराजी ! तमने असत्य व्यापार करवो योग्य नथी. शेठे कह्युं शुं करीए आ

संसार एवोज छे. त्यारे वहुए कह्युं जे व्यवहारशुद्धि सर्व प्रकारना अर्थ साधन करवा समर्थ छे, तो छ मास तमे न्यायथी व्यापार करी जुओ. ते वात शेठे मान्य करी अने तेम करवाथी ग्राहकनी वृद्धि थइ, माल घणो खपवा लाग्यो अने छ मासिक हिसाब करवाथी एक पल प्रमाण (अढी तोला) सुवर्णनो लाभ थयो. ते वात पुत्र वधुने कहेवाथी तेणीए कह्युं के आ न्यायोपार्जित वित्तथी कोइ पण प्रकारे हानि थायज नहि, ए वात सांभळी शेठे अजायब थइ ते सोना उपर लोखंड जडावीने तेनुं एक शेर तोळवानुं काटलुं कर्युं, तेना उपर पोताना नामनी महोर छाप मारीने दुकानमां तोळवा माटे ते शेर राख्यो. ते जेम तेम दुकानमां रखडतो पड्यो रहे तो पण तेने लइ जवानी कोइनी बुद्धि थइ नहि, पछी ए शेरनी परीक्षा माटे शेठे तेने एक नाना तळावमां नाखी दीधो. बनवा काळथी तेने एक मत्स्ये तेना पर चाकाश विगेरे होवाथी गळी लीधो अने थोडाज वखतमां ते मत्स्यने माछीए पकडी तेने चीरता पेटमांथी शेरीओ नीकळ्यो, तेना पर हेलाक शेठनुं नाम होवाथी ते शेठनी दुकाने पाछो आपी गयो. आथी शेठने प्रतिति पूर्ण थइ अने " सत्यताथीज वेपार चलाववो " एवो निश्चय कर्यो. तेम करवाथी अति लाभ थयो, मोटो श्रीमंत वळी राजमान्य थयो, उत्तम श्रावकना व्रत पाळनारो अने सर्व लोकोमां प्रख्यात थयो के आ सत्यज वेपार करे छे. तेनुं दृष्टांत लइ घणा लोको सत्य वेपार करवाने आदरवंत थया. अने वळी एथी पण एनी एटला बधी अधिकता थइ के ते हेलाक शेठनुं

जे कोइ नाम दे तेनुं चहाब तेवुं विघ्न दूर थइ जाय; एवो सर्व लोकने निर्णय थयो. जेनुं नाम हजी सुधी चालुज देखाय छे. समुद्रमां होडी –वहाण हांकनार खलासीओ हलेसां पाणीमां चलावतां "हेलाशाह हेलाशाह" एवो शब्द बोले छे. तेओ जेम ते शेठना प्रमाणिकपणाने प्रभावे महा समुद्र उलंघी जाय छे, तेम जे भव्यो नीति न्यायथी व्यापार नोकरी वगेरे करो मार्गानुसारीपणानो प्रथम गुण न्यायोपार्जित वैभवनुं सेवन करे ते अनुक्रमे सम्यक्त्व, देशविरति अने सर्व विरतिना अधिकारी थइ संसाररूपी महासमुद्रनो पार पामी निर्वाणपदने पामे छे.

श्रावकोए न्यायोपार्जित द्रव्यथी आजीविका करवानो खास ख्याल राखवो जोइए. वळी मुनिओए आ बिचारा मुग्ध कर्मादान प्रमुखना आरंभमय तथा अन्याय पूर्वक द्रव्य मेळवनारा श्रावकोने प्रथम तेज उपदेश अवार नवार आपवानी जरुर छे. केमके जेवा द्रव्यनो आहार तेवो ओडकार, तेमज तेवा अन्यायथी द्रव्य प्राप्त करी ते मुनिओने आहार पाणी (दानादि) वहोरावे त्यारे तेमनी पण मन शुद्धि क्यांथी थाय ? अन्योअन्य फरज बजाववी युक्त छे. पूर्वे पण सांभळीये छीये के एक श्रेष्ठिए मंदिरमांथी देवे मुकेल सुगंधी चोखाने बदले तेनाथी विशेष गुणा चोखा मूकी ते चोखानी खीर करी एक मुनिने वहोराववाथी तेमने प्रबळ प्रमत्त भाव थयो. तेनुं कारण तपासतां पूर्वोक्त अन्याय मालुम पड्यो. बाद ते मुनिने सर्व आहारनुं वमनादि करावी शुद्धिमां आण्या. आ उपरथी अन्यायथी प्राप्त

करेल द्रव्य श्रावकोने तेमज मुनिओने पण ते अशुद्धतानुं कारण होइ केटलुं अनर्थकारक छे, तेथी प्रथम ज न्यायोपार्जित द्रव्यथी आजीविका करवानुं दृढ ध्यान राखवुं. मुनिओ पण स्ववर्तनमां कटिबद्ध थइ निस्पृहपणे उपदेश आपवा उद्यमवंत थाय तो आ प्रकारे अनीति अने अन्याये प्राप्त कराती आजीविकामांथी श्रावकोने मुक्त करी शके. क्यारे एवो उत्तम सोनेरी अवसर आवशे के राम, हरिश्चंद्र, विक्रम अने कुमारपाल महाराजाना राज्यनी जेम न्याय वैभव सत्यता प्रमाणिकता प्रमुखनुं साम्राज्य वर्ते ? Be honest, Speak the truth, Leave off immoriality. (प्रामाणिकपणुं भजो, सत्य वदो, अनीति त्यजो !) त्यारे कुमारपाळ महाराजनी जेम परमार्हतपणानुं बिरुद प्राप्त थशे.)

चतुर्थ व्रत.

चतुर्थ व्रतमां कुमारपाळ महाराजाए धर्म पाम्या पछी परणवानुं नियम कर्युं. चातुर्मासमां मन वचन अने काया एम त्रण प्रकारे शील–ब्रह्मचर्य पाळता, मनथी शील भांगते छते क्षपणक (उपवास) करता, वचनथी भांगते छते आयंबिल करता अने कायाथी भांगते छते एकाशन करता. परस्त्री प्रत्ये सहोदरनुं बिरुद धारण करता, भोपल देवी विगेरे आठे राणीना मृत्यु बाद प्रधानादिकोए घणुं कह्या छतां पण परणवाना नियमनो तेमणे भंग कर्यो

नहि. आरात्रिक (आरति) माटे साथे राखवा भोपलदेवी राणीनी सुवर्णनी मूर्ति करावी. श्री गुरुमहाराजे वासक्षेप पूर्वक तेमने राजर्षिनुं बिरुद आप्युं.

उपर मुजब कुमारपाळ महाराजा चतुर्थ व्रतने विषे त्रिविधे सख्त प्रतिज्ञा पूर्वक शियलनुं पालन करता. परस्त्री तो जेमने सदा मा व्हेन तुल्य ज हती. ज्यारे आज काल परदारा लंपट मनुष्यो ठेर ठेर श्वाननी जेम भटकता फरे छे, तेथी खरेखर श्वान (कुतरो) जेम हाडकांने चुसतां आनंद मानी लीये छे (पोताना मुखमां हाडकुं लागवाथी लोहि नीकळे छे तेने चाटे छे, पण तेथी जरा पण तृप्ति थती नथी) तेम पोतानीं वीर्य शक्तिनो नाश प्रत्यक्ष थवा उपरांत अनेक महारोगने वश थतां पण मैथुनने विषे लीन थइ जाय छे. परस्त्रीनी इच्छा मनथी पण करनार रावणनी जेम नर्के गति पामे छे त्यारे मन वचन अने कायाथी परस्त्री गमन करनारनुं तो शुं कहेवुं. स्वदारा संतोषी सुश्रावक सुदर्शन शेठनी धैर्यताने सहस्त्रवार धन्य छे के जेने अभया राणीए अनेक प्रकारे अनुकूल उपसर्ग करता छतां पण तेओ मनथी किंचित् डग्या नहि. वळी जंबुस्वामि के जेणे आठ कन्या साथे पाणि ग्रहण कर्यां छतां पण विषयने विषतुल्य समजी आठे स्त्रीने पण प्रतिबोधी प्रातःकाळे चारित्र अंगीकार कर्युं. सर्वथी आश्चर्यजनक श्री स्थूलिभद्र स्वामिनुं चरित्र छे के जेणे कोश्या वेश्याने त्यां बार वर्ष पर्यंत रह्या छतां पण चारित्र लइने तेज कोश्याने त्यां चातुर्मास रही षटरस भोजन करतां, कोश्याना अनु-

कुल उपसर्ग प्रमुख छतां कामराजानो पराजय कर्यो. शास्त्रने विषे अनेक दृष्टांतो छे तेनो धडो लइ श्रावकोए बने तो सर्वथा मैथुन-त्याग छेवट स्वदारासंतोषी अवश्य थवुं जोइए. तेमां पण पर्युषणादिक छ अठ्ठाइओ, कल्याणकना दिवसो अने बारतिथिना दिवसने विषे सर्वथा मैथुननो त्याग करवो जोइए. वळी उत्तम श्रावक तथा श्राविकाए आ संसारना प्रत्यक्ष वैराग्यजनक नाटकनो विचार करी कामने उत्तेजक, पैसानुं पाणी करनार तथा उजागराथी शरीरने हानिकारक अने वखतनो गेरउपयोग करवाळां नाटक प्रमुखनो अवश्य त्याग करवो जोइए. कारण के प्रायः घणा जनो नाटकमां मन अने वचनथी परवश थइ महाकर्म बांधे छे. चतुर्थ व्रत पाळवाना इच्छकोए रसनेंद्रियने बराबर वश राखवी जोइए. बने त्यां सुधी अचित्त जल वापरवुं, मादक पदार्थोथी दुर रहेवुं, चक्षु इंद्रियने मर्कटनी जेम ज्यां त्यां दोडवा न देतां वश राखवी, चालतां पण प्रायः नीची दृष्टि पूर्वक चालवुं, नव वाडोनुं स्वरूप समजी बराबर पाळवी, एकांतमां परस्त्री साथे तो शुं पण स्वमाता के व्हेन साथे पण रहेवुं नहि—वात करवी नहि, तंबोळनो अवश्य त्याग करवो अने पूर्वे थयेला महा शियलवंत पुरुषोनां चरित्रो विचारी मनथी पण अब्रह्मनो त्याग करवो. पंच महाव्रत धारक मुनिओ तथा साध्वीओए चतुर्थ व्रतना रक्षण माटे खास लक्ष राखवुं युक्त छे. मुनिए साध्वी तथा श्राविका प्रमुखनो परिचय तथा साध्वीओए मुनि तथा श्रावक प्रमुखनो परिचय राखवो युक्त नथी. नववाडो.

बरोबर पालन करवुं. जेओ आ महाव्रतनुं खंडन करी जैन मुनिनुं लिंग धारण करी अनेक अनाचार सेवे ते महा पापी शासननी केवल हीलना करावे छे. जो पाते व्रत पालवाने असमर्थ थयो होय तो तेणे वेशने छोडी देवो युक्त छे. पूर्वे पण आर्द्रकुमार तथा नंदीषेण मुनिने (भोगावळी कर्म अवश्य छते) तेवो प्रसंग पडतां वेशने छोडी दीधो छे. केम के गधाडानी उपर हाथिनी अंबाडी कदि शोभे नहि. मनथी पण अब्रह्मनो विचार थतां रहनेमिनी जेम प्रतिबोध पामी विषयथी विरमी लागेल दोषनुं प्रायश्चित्त अंगीकार करी शुद्ध थइ चारित्रनुं पालन करवुं जोइए. तेम नहि करतां जे वेशधारीओ प्रत्यक्षपणे अनाचारनुं सेवन कर छे ते महा कर्म बांधी दुर्गतिना दास थवाना. कुमारपाळना व्रतनी दृढतानुं दृष्टांत लइ हइडे सान लावी विषयथी विरमवुं युक्त छे.

पांचमुं व्रत.

छ क्रोड सुवर्ण महोर, आठ क्रोड रुपा महोर, दश सो (हजार) तोला मोटी किंमतना मणिरत्नो विगेरे, बत्रीश हजार मण घी, बत्रीश हजार मण तेल, त्रण लाख मण चावल तथा चणा, जुवार अने मग आदिक धान्योना दरेकना पांच लाख मुडा, घरहाट सभा वहाण गाडी पालखी इत्यादि; अग्यारसो हस्तिओ; पचास हजार रथो, अग्यार लाख घोडा, अढार लाख सुभटो एवी रीते

सर्वं सैन्यनो मेलाप हतो, इत्यादि. (श्रावके उपर मुजब कुमारपाल महाराजना परिग्रहनुं परिमाण जाणी जेम बने तेम अल्प परिग्रह राखवो. केमके परिग्रह ते पापनुं मूळ छे, पुणिया श्रावकनी जेम संतोषवृत्ति धारण करवी. परिग्रह रूपी ग्रहथी सर्व जगत् प्रायः ग्रसायेलुं छे. मुनिपणुं धारण करी परिग्रह, धन, कंचन, स्त्री प्रमुखने विषे मूर्छा धारण करे छे, तेओ श्रावकथी थता दान धर्मथी भ्रष्ट थाय छे, अने पंच महाव्रतथी विमुख थइ अतो भ्रष्ट ततो भ्रष्ट थाय छे; तेवा वेश विंडबक, लंपटी, छत्र धारण करनार–करावनार, पालखी मीयानाने विषे आरुढ थनार, रेल प्रमुख वाहनने विषे मुसाफरी करी पोताने सत्य मार्गपालक कहेवरावनार, पगमां बुट मोजां चांखडी प्रमुख धारण करनार, तंबोल–पान चावनार, हाथमां (फेशनेबल) सुशोभित लाकडी छत्री राखनार, रात्रि भोजन करनार, यतणिओ राखनार, जिन मार्गना उलट पुलट प्रकाशक, सचित्त पाणी वापरनार, आरंभादि करनार अने करावनार, गादी तकीयाना मालेक, भक्ष्याभक्ष्य पेयापेयनो विचार नहि राखनार, पीळां कपडां पहेरवामात्रे संवेगी मनावनार, लोकोने ठगनार, देवद्रव्य ज्ञानद्रव्यनुं भक्षण करनार, जिन मंदिरनुं उपरीपणुं धरावनार, उपाश्रयना मालिक थइ बेसनार, पोतानी मानता–पूजा करावनार, पोतानां पगलां या मूर्ति स्थापन करनार–करावनार, गुण नहि छतां श्रीपूज्य, पंन्यास, आचार्य, उपाध्याय, भट्टारक, प्रमुख पद्वी धारण करी फरनार, मंत्र जंत्र दोरा धागा करनार, गृहस्थ प्रमुखने औषधादि आपनार–बतावनार, प्रतिक्रमणादि क्रि-

याथी विमुख रहेनार, स्नान-दातण देह शुद्धि करनार, जातिकुल प्रमुखथी आजीविका चलावनार, मायाधारी, गृहस्थना कार्य करनार. (इत्यादि) यति नाम धरावे छे तेओने उत्तराध्ययनजीमां पाप श्रमण कही बोलाव्या छे. तेवा अनेक कुगुरुओना फंदमां अविवेकी एवा अनेक श्रावक श्राविका फसायेला जोवामां आवे छे; तो तेवा परिग्रहवंतथी सदा दूर रहेवुं, तेओनुं मुख पण जोवुं अकल्याणकारी छे, तेवा कुगुरुओने कोइ प्रकारे उत्तेजन आपवुं नहि. सामान्यपणे परिग्रह राखनार रत्नाकर पचीशीना कर्ता रत्नाकर सूरिने एक श्रावके परिग्रहनुं स्वरुप पूछतां गुरु महाराजे घणुं स्पष्टपणे स्वरुप समजाव्या छतां घणा दिवसो सुधी श्रावक कहे जे बरोबर समजातुं नथी. गुरु महाराजे विचार्युं के न समजवानुं कांइ पण गंभीर कारण होवुं जोइए. ते बाबत पोताने विचारतां समजायुं जे हुं मारी पासे परिग्रह धरावुं छुं तेथीज ते श्रावक ए प्रकारे कहे छे; एवुं धारी पोते सर्व परिग्रह त्यागी निस्पृही बनी बीजे दिवसे पाट उपर जेवामां महाराज बिराजे छे के तुरतज श्रावके नम्रपणे हस्त जोडी कह्युं के हे कृपानाथ ! हवे हुं यथार्थ स्वरुप समज्यो, एम कही पोते गुरु महाराजनी स्तुति करी. आ प्रमाणे पूर्वे श्रावको पण स्थिर करनार हता, अने मुनिओ पण पोतानी भूल स्वीकारी सन्मार्गनुं सेवन करवा तत्पर थता. परिग्रहपर मूर्छा राखनार मुनिए पण परिग्रहनो त्याग सर्वथा करवो उचित छे अने श्रावक श्रावि-

काए पण यथोचित परिणाम करवुं. मील, जीन, प्रेस प्रमुख कर्मादानोना व्यापारो खरेखर दुर्गतिनुं कारण समजी न करवा. कलिकाळमां तेनुं प्रबळ वधतुं ज जाय छे, तो भवभीरुए विचार करवो.)

छट्ठुं व्रत.

वर्षाकाळमां श्री पाटणना सीमाडानी बहार गमन करवानो निषेध हतो.

कुमारपाल महाराजनी जेम कृष्ण वासुदेव पण चातुर्मासने विषे द्वारिकानी बाहार गमन करता नहि, तेम श्रावकोए अवश्य करी छट्ठा व्रतने विषे अति संक्षेप करवो. अढार देशनुं सर्वोपरिपणुं धरावनार कुमारपाळ अने त्रण खंडना धणी श्रीकृष्ण वासुदेव जेवा अनेक प्रकारनी राजकीय खटपट होवा छतां चातुर्मासने विषे केवी निवृत्ति मेळवता, आवी निवृत्ति प्राप्त करीने पण सामायक, पौषध, प्रतिक्रमण, व्याख्यानश्रवण अने प्रभु भक्ति वगेरेमां तेओ प्रायः लीन रहेता. वळी चातुर्मासने विषे वर्षाना कारणे लीलफुग वगेरे वनस्पति थवाथी तथा अनेक त्रस जीव उत्पन्न थवाथी भवभीरु श्रावके अवश्य दिशी परिणाम करवुं जोइए. चातुर्मासने विषे कुमारपाळ महाराजपर परसैन्य आवतां छतां पण तेमणे व्रतनुं पालन कर्युं हतुं. वळी पूर्वे सिंह श्रेष्टिए पण दिशी परिमाणना नियमने अंगे पादपोपगमन नामनुं अनशन करी अंते

एक मासे केवलज्ञान प्राप्त करी सिद्धि पद मेळव्युं हतुं पण व्रतनो भंग कर्यो नहि, तेनी जेम श्रावके लीधेला व्रतनुं पालन करवुं जोइए- शेषाकाळ तथा यावज्जीव माटे बने त्यां सुधी दिशा परिमाण करवुं जोइए- अनार्य देशोमां जवाथी प्रायः बुद्धिनी भ्रष्टता थवा पामे छे, भक्ष्याभक्ष्य पेयापेयनो विचार रहेतो नथी, फेशन (मोजशोखनी फीशीयारी) मां फसाइ जवाय छे, बहुधा इंद्रिओ काबुमां नहि रहेवाथी विषयी—लंपटी बनी जाय छे अने तेना लीधे केटलाएक तो महा रोगोने वश पडी देशमां आवतां थोडा अरसामां परलोकगमन करी जाय छे, अने अंते कांइ धर्मसंबल पामी शकता नथी- आर्य देशपणुं महापुण्य योगे पामी शकाय छे पण जे प्राणिओ आजीविका माटे या कर्मने वश थइ मोजशोख के मान पाननी खातर दुर देशोमां भ्रमण करी जीवित पायमाल करे छे, तेओए कुमारपाळ महाराजनो धडो लेवो जोइए-

---

सातमुं व्रत.

कुमारपाळ महाराजने मद्य, मांस, मध, माखण, बहु बीज, पांच जातिना उदुंबर फल, अभक्ष्य, अनंतकाय, घेवर आदिकनो नियम हतो- देव पासे नहि धरेलां वस्त्र फल तथा आहार आदिकनो त्याग हतो- धर्या पछी बाकीनुं वापरता- एक पान रुपि सचित्त अने तेना पण एक दिवसमां आठ बीडा खपता- रात्रिए

चारे प्रकारना आहारनो निषेध हतो. वर्षाकाळमां एक घीनी विगय छुटी हती. शाड्वल (लीलोतरी) शाकनो त्याग हतो. नित्य एकाशन करता. पर्वने दिवसे मैथुन, विगय तथा सचित्तनो त्याग हतो.

श्रावकोए कुमारपाळ महाराजनी जेम बावीश अभक्ष्य, अनंतकाय (जेनुं विवरण विस्तारथी अगाउ लखवामां आवेल छे.) नो समजपूर्वक त्याग करवो. वस्त्रनो उपयोग माटे या व्यापारार्थे नियम करवो. फळ वनस्पतिनो नियम यावज्जीव माटे ग्रहण करवो. सचित्तनो बने तो सर्वथा या यथाशक्ति त्याग करवो. पन्नर कर्मादानना व्यापारनो अवश्य त्याग करवो. आ बाबत शास्त्रकार ज्यारे भार दइ त्याग करवा उपदिशे छे त्यारे आजकाल अनेक श्रीमंत गणाता श्रावको मील, जीन, प्रेस, फेकटरीओ, अने माइन्स (खाणो) ना महा आरंभदायक व्यापारोमां मशगुल थइ रह्या छे. जे मील प्रमुखना आरंभनुं वर्णन करतां एक ग्रंथ थवा पामे, आम त्रासदायक रीते अनेक जीवोनो विनाश थतां पण आ मील प्रमुखना मालेकोना मगजपर असर थती नथी; तेनुं कारण कलिकाळनो केर अने तेथी तद्दन निःशूक परिणाम थवाथी तेओने स्वप्ने पण तेथी मुक्त थवानो विचार न आवे. आखी जींदगी निष्फळ करी, अनेक पापनी पोटली शिरपर बांधी, पोते एकलोज दुर्गतिमां कडवा फळ चाखशे. भवभीरूए तेथी विरमवुं जोइए. आ महा आरंभदायक मील वगेरेना शेरो लेवा, के तेना पार्टनरो (भागीदारो) थवुं, या दलाली करवी वगेरेथी आत्मार्थीजनोए दूर रहेवुं. जमीनदारोने पण अनेक आरंभो करवा

कराववा पडे छे, तेथी निर्दोष व्यापारथी आजीविका चलाववी युक्त छे. एकाशनादि व्रत नित्य करवा, पर्वने दिवसे तथा कल्याणकादि अट्ठाइना दिवसोने विषे मैथुननो अवश्य त्याग करवो तथा बीजा पण आरंभो वर्जवा.

आठमुं व्रत.

कुमारपाळ महाराजे साते व्यसनोने देशमांथी समुद्रमां फेंक्यां.

श्रावकोने सात व्यसननो अवश्य त्याग होवो जोइए. तेमज अपध्यान—मननुं आहट दोहट चिंतववुं; पापोपदेश—पापनो उपदेश विना स्वार्थे देवो; हिंस्त्रप्रदान—जेनाथी हिंसा थाय तेवी चीजो वगर स्वार्थे लेवी देवी (जेमके घंटी, खाणीया, छरी,सूडी, कोदाळी, कोश, अग्नि, दीवासळी, अनेक प्रकारना हथियार, अधिकरणो); प्रमादाचरण—प्रमादना आचरण एटले विकथा मद प्रमुख करवुं ते; उपर लखेल चारे प्रकारनो त्याग करवो. जुगटुं रमवुं नहि, होड पण करवो नहि, पशु पंखी क्रीडा अर्थे पांजरे न राखवां, होळी प्रमुख जोवां नहि, नाटक नाच घोडानी शरत प्रमुख जोवां नहि, फांसी दे त्यां जवुं नहि, झाड वनस्पति वगर कामे न तोडवां, गंजीफो चोपाट पासानी रमत प्रमुखनो त्याग करवो, दीवाळी प्रमुख प्रसंगे दारुखानुं फोडवुं नहि, वांदरा, भवाया, नट,

मदारी, ताबुत, हवन, अन्य देव देवलानां दर्शन, गरबी, सरघस, मेळा, वरघोडा, हाथी पाडाना युद्धो, रात्रिनी गमतो जेमके संगीतश्रवण, चापार्टीनी मीजलसमां जवुं वगेरेनो त्याग करवो. केमके तेथी अनर्थना कारणो, वखतनो गेर व्यय, मिथ्यात्वनी वृद्धि प्रमुख अनेक दोषो थाय छे.

नवमुं व्रत.

नवमा व्रतमां कुमारपाल भूपालने बन्ने वखत सामायित करवुं तथा ते करते छते श्री हेमचंद्राचार्य विना बीजाओ साथे बोलवानो तेने त्याग हतो. हमेशां योगशास्त्रना बार प्रकाश तथा वीतराग स्तवना वीश प्रकाशनो पाठ करता.

आ कुमारपाल महाराजनी जेम तथा पुणिया श्रावकनी जेम श्रावके सामायकने विशे ज्यारे ज्यारे अवकाश मळे त्यारे त्यारे उद्यमी थवुं जोइए. छेवट बे वखत प्रतिक्रमण, सामायक, अवश्य करवानो नियम होवो जोइए. आजकाल विकथामां कलाकना कलाको नीकळी जाय, प्रमाद निद्रा या नाटक चेटकमां पहोरना पहोर चाल्या जाय पण फक्त बे घडीना सामायिकनी फुरसद न मळे ते जीवोनी हीन पुण्याइ समजवी. समजुने विवेकी श्रावके अवश्य सामायिक करवानो खप करवो जोइए. वळी सामायिकमां थता बत्रीश दोषोने जाणी तेने वर्जवा जोइए. पण सामायिक लइ

बे घडीनो काळ जेम तेम पूर्ण करवो, या निद्रा लेवी, के नकामी परचुरण वातोमां वखत काढवो, या वाद विवादनी वातो कहाडी चर्चा उठाववी ते युक्त नथी. जुओ के कुमारपाल महाराज सामायकमां गुरुमहाराज शिवाय अन्य साथे बोलता पण नहि ते केटलो अभ्यास करता तेज तेमनो आदर–विवेक दर्शावी आपे छे. तो सामायिक अंगीकार करी नित्य ज्ञानाभ्यास वधारवो, तत्वनी वातो समजवी तथा समभावमां वर्तवुं.

दशमुं व्रत.

दशमा व्रतमां चोमासामां रणसंग्राम न करवो. गीझनीना सुलतान आवते छते पण नियमथी चलायमान थया नहोता.

श्रावके दशमाव्रतने विषे चौद नियमनो अतिसंक्षेप करवो. ते दिवसे वर्तमान प्रवृत्तिने अनुसारे उपाश्रयने विषे दश सामायक करवां, अने यथाशक्ति उपवास एकासणुं करवुं, धर्मध्यानमां प्रवर्तवुं. आ दशमुं व्रत मैथुनना त्यागी तथा रात्रे कामकाजनी जेओने उपाधि नथी तेओने संध्याथी लइ प्रातःकाळ पर्यंत चार पहोरनुं देशावकाशिक ज्यारे धारे त्यारे बनी शके तेवुं छे. उपाश्रयनी जोगवाइ छते त्यांज या स्वगृहने विषे संध्याये प्रतिक्रमण साथे चार पहोर या एक बे त्रण पहोर (जेवी स्थिरता) ना देशावकाशिकनो नियम करी बने तेटला सामायिक करवा. एक

या बे वखत प्रतिक्रमण करवां. बाकीनो वखत संवरभावमां वतवुं धर्मकथा शिवाय विकथा तथा सांसरिक कार्य के खटपटनो त्याग करवो. विवेकी श्रावक आ व्रतनो अवकाश मळे त्यारे लाभ लइ शके तेवुं छे तेथी तेनो जरुर खप करवो.

अग्यारमुं व्रत.

कुमारपाल महाराज पौषधोपवास करते छते रात्रिए काउस्सग्ग ध्याने रह्या हता, ते वखते पगे मंकोडो चोटयो, माणसो तेने उखेडवा लाग्या, परंतु क्रोधथी ते चोटीज रह्यो, ते वखते ते मंकोडो मरा जवानी शंकाथी पोताना पगनी चामडी सहीत तेने दूर कर्यो. पारणाने दिवसे सघळा पोसातीओने भोजन करावता.

श्रावकोए आ महान् सुकोमल कुमारपाल महाराजना व्रतनी दृढतानो विचार करवो के एक मंकोडानी दया माटे पोताना पगनी चामडी छेदी नंखावी, तेवा वीर पुरुषोनी बलिहारी छे. पौषधोपवास ज्यारे ज्यारे बनी शके त्यारे त्यारे करी आत्माने धर्मनी पुष्टि करवी युक्त छे.

बारमुं व्रत.

अतिथि संविभाग—दुःखी एवा साधर्मी श्रावकोनो बहोंतेर लाख द्रव्यनो कर मूकी दीधो.

मुनिमहाराजने (प्रथम तथा अंतिम तीर्थंकर महाराजना) राज्यपिंड कल्पे नहि तेथी भरत चक्रवर्तिनी जेम कुमारपाल महाराजे सीदाता एवा अनेक साधर्मि बंधुनो उद्धार कर्यो. श्रावके बनी शके तो नित्य गुरु महाराजनी छती जोगवाइए अशन, पान, खादिम अने स्वादिमथी प्रतिलाभी पछी पोते भोजन करवुं उचित छे. छेवट पौषधोपवासने पारणे मुनिमहाराजने निमंत्रणा करी दरेक वस्तु वहोरवा माटे विनंति करवी. तेमांथी जे वस्तु मुनिमहाराजना सत्पात्रने विषे पडे, ते वस्तुथी अतिथी संविभागने दिवसे एकाशन करे या यथाशक्ति बीयासण प्रमुख करे. वर्तमान काळमां लग्न प्रसंगोमां, या बारमुं तेरमुं करवामां, या मोजशोखमां, हजारो लाखोना पाणी थाय छे पण सीदाता पोताना स्वधर्मी बंधुने उचित सहाय करवामां, के आजीविकादिकथी जोडवामां, घणी खामी जोवामां आवे छे. तेवी रीते नोकारशी टोळी वगेरे जमाडी हजारो रुपीआ खर्चवामां आवे छे. (नोकारशी स्वामीवत्सल करवा योग्य छे) छतां अनेक सीदाता श्रावक वर्ग अने श्राविका वर्गनी कफोडी

स्थितीनो ख्याल बाजुपर रहे छे. सीदाता बंधुओनो उद्धार करवो ते उत्तम प्रकारनो स्वामिवत्सलज समजवो. केटलाक लज्जावडे पोतानी मंदस्थिती जाहेर न करी शके तेवा अनेक श्रावक श्राविका बारिकीथी तपास करवामां आवे तो मालुम पडे. तेथी आ बाबत लक्षमां लेवा योग्य छे. वळी श्रावकना नित्य अभंग (उघाडां) द्वार कह्या छे. केमके बंध बारणा होवाथी उत्तम पात्र एवा मुनिराज आवे तो ते पाछा वळी जाय, अने दुःखी भिक्षुक अपंग वगेरे आवे ते निराश थइने चाल्या जाय तेथी तीर्थंकर महाराजाए अनुकंपादाननो निषेध कर्यो नथी, तो स्वशक्ति अनुसार भीखारी वगेरे जे दयाने पात्र ले, तेने दान आपवुं. अरे! दान आपवुं तो दूर रह्युं पण अज्ञानवशात् केटलीक वेळा तेवा बिचाराने गाळो देवामां आवे छे या हांकी काढवामां आवे छे ते केटली मूर्खता ! तेथी केवा कर्मनो बंध पडे ? शक्ति होय तो आपवुं अन्यथा मिष्ट वचने उत्तर आपवो पण अपशब्द बोलवा या प्रहारादि करवा नहि. ज्यारे एक माणस गरीब भिक्षुक स्थितीमां मूकाय छे,त्यारे तेना दुःखनो ख्याल तेनेज आवी शके. तेथी तेतो क्षुधाथी के तृषाथी पीडित थइ वारंवार माग्या करे. परंतु सज्जन पुरुषे विचार करवो जोइए के हुं आवी निर्धन स्थितीमां होउं तो केम करुं ? तेथी सदा कुमळुं हृदय राखवुं अने दीन क्षीणनो पण उद्धार करवो. जे पुरुष श्रीमंताइनो गर्व धरावी

दीनदुःखी जनोनो तिरस्कार करशे ते अवश्य परभवे अधम स्थिती पामशे. लक्ष्मी आज छे ने काल नथी एवुं धारी विक्रम, कुमार-पाळ, वस्तुपाल, तेजपाल प्रमुखनी जेम अनेक प्रकारना सत्कार्योमां लक्ष्मी वापरवी.

वळी पण श्रीकुमारपाळ महाराजे श्रीहेमचंद्राचार्य महाराजनी धर्मशाळानी मुहुपत्ति पडिलेहनार धार्मिकने पांचशें घोडा तथा बार गामनुं अधिपतिपणुं आप्युं, तथा सघळी मुहपत्ति पडिलेहनाराओने कुल्ले पांचशो गामनुं दान आप्युं. एवी रीते विवेकीमां शिरोमणि सरखा ते कुमारपाळ राजाना बीजा पण अनेक प्रकारना पुण्य मार्गो हता, तेमांथी अहिं केटलाक लखी शकाय ? एवी रीते उत्तम धर्मक्रियाथी तेणे फक्त पोताना बाकी बे भवो रहेवारुप कार्य सिद्ध कर्युं (आवती उत्सर्प्पिणीमां पद्मनाभ महाराजना गणधर थइ ते भवे सिद्धि पामशे); तेमज साधर्मीओने योग्य दान, मान, धर्मनी सहायता, करोनुं छोडवुं, दुःखीओना उद्धारादि तथा अढार देशो-मां अमारी (अहिंसा) प्रवर्तनादिकथी तेनो परोपकार प्रगट्ज देखाय छे.

अत्रे कुमारपाल महाराजना सम्यक्त्व मूल बारव्रतादिकनुं किंचित् वर्णन कर्युं छे तेनो हेतु मात्र एज छे जे अढार देशनुं राज्य

पाळता छतां पण श्रावकनां व्रतने विषे तेओश्री केटले दरज्जे गया छे के जेनुं अनुकरण करवुं ते तो दूर रह्युं पण तेनी भावना विचारी आपणे केटला पछात छइए अने हजु आपणे केटला प्रयासनी जरुर छे, तेवी शुभ भावना प्राप्त करवा निमित्ते प्रसंगोपात आ विषय उमेर्यो छे. आणंद कामदेवादिक श्रावको के जेनी स्वयं महावीर स्वामिए प्रशंसा करी छे. वळी जेओए श्रावकनी पडिमा वहन करी के जे पडिमाने विपे निरवद्य आहार लेवो पडे छे ते उत्सर्ग मार्ग समजवो. जो तेवा प्रकारनी शक्ति न होय तो सचित्त त्यागी होय, आखर जो ते पण न करी शके तो बावीश अभक्ष्य अनंतकायनो तो जरुर त्याग करे. अत्रे लक्षमां राखवुं जोइए के अभक्ष्यादिनो अमुक नियम कर्यो, तेथी संतोष पामवानो नथी पण आणंद, कामदेव, तथा कुमारपाल, महाराज वगेरेनी जेम श्रावकना द्वादशव्रत अंगीकार करी अनुक्रमे पंचमहाव्रतनी प्राप्ति माटे उद्यम करवो युक्त छे. शास्त्रकार महाराज प्रथम तो सर्वविरतिपणानोज उपदेश करे छे, पण ज्यारे श्रावक असमर्थ तथा उत्साह रहित जणाय छे, त्यारे पछी देशविरति प्रमुखनो उपदेश आपे छे.

ता. क.—पृष्ट ९४ नी २१ मी कलममां शेरडीनो रस बे घडी पछी अचित्त छे एम लख्युं छे, पण तेनो काळ जणाव्यो नथी, तो

श्री लघुप्रवचनसारोद्धारमां तेनो काळ बे पहोरनो कहेलो छे, ते पछी अभक्ष्य छे. आ बाबत स्फुट करवानुं कारण ए छे के—वरसी तपने पारणे केटलाक अजाण लोको आवो काळातीत रस वापरे छे. तो तेमणे उपयोग राखवा जरुर छे.

સમાપ્ત.

तैयार पुस्तकोनुं सूचीपत्र.

शिक्षणनां पुस्तको.

नंबर.	नाम.	मूल्य.
१	बाळपोथी (जैन शिक्षण-माळा (आवृत्ति बीजी.)	०-१-६
२	पहेली चोपडी सदर	०-२-०
३	बीजी चोपडी सदर	०-३-०
४	त्रीजी चोपडी सदर	०-४-०
५	जैनो वांचनमाळा	०-१-६
६	पंचप्रतिक्रमण मूळ गुजराती... ...	०-१०-०
७	सामायिक सूत्र अर्थ सहित	०-१-०
८	सामायिक सूत्र सार्थ अवचूरीवाळुं ...	०-२-६
९	बे प्रतिक्रमण सार्थ अवचूरीवाळुं ...	०-४-०
१०	समकितना सडसठ बोलनी सज्झाय...	०-०-९
११	जीवविचार सार्थ	०-५-०
१२	भाष्यत्रय सार्थ शास्त्री	०-६-०
१३	भाष्यत्रय सार्थ गुजराती	०-४-०
१४	कर्मग्रंथ सार्थ प्रथम विभाग	०-६-०
१५	कर्मग्रंथ सार्थ द्वितीय विभाग	०-१२-०

वांचननां पुस्तको.

नंबर.	नाम.	मूल्य.
१६	जैन हितबोध ...	०-४-०
१७	जैन हितबोध हिंदी	०-६-०
१८	जैन हितोपदेश भाग पहेलो	०-४-०

सद्ग्रन्थोना प्रचार अर्थे जैन प्रजाने

बे बोल.

दिव्य प्रतिभावंत सत्पुरुषोना हृदयमांथी वहेतां ज्ञानामृतनां झरणांओना संग्रहग्रन्थो जगतनुं अनेकधा हित साधे छे, तप्त हृदयोमां शान्ति रेडे छे अने मरवा पडेली दिव्य भावनाओने पुनर्जीवन आपे छे ज्ञानीओना स्थूल देहना विरहे तेमना अक्षरदेहनो समागम पण अत्यंत उपकारक नीवडे छे. एवा पुरुषोना अक्षरदेहरूप ग्रन्थो ए देश प्रजा अने धर्मनी अमूल्य मिलकत छे तेने संभाळ भरेली रीते जाळवी राखवा, सर्वत्र विस्तारवा अने तेना परथी योग्यतानुसार अनुवाद करवा, ए देश प्रजा अने धर्मनी उत्तम सेवा बजाववारूप छे.

पोताना व्हालांओनां पुण्यार्थे के स्मरणार्थे विधिवाद, अर्थवाद के कथाओना ग्रन्थो छपावी तेने विना मूल्ये के अल्प मूल्ये गामोगाम अने घरोघर फेलाववानी जरूर छे. ए जरूरने कांइक अंशे पुरी पाडवाने अमोए धनवान अने उदार सज्जन श्री पुरुषोनी द्रव्यादि सहायवडे आचार अने अध्यात्मना न्हाना म्होटा ग्रन्थो छपावी प्रजामां हजारोनी संख्यामां फेलाव्या छे. हजु पण अमारो एज उद्देश छे.

जे जे सज्जन श्री पुरुषोने पोताना के पोतानां व्हालांओनां पुण्यार्थे, स्मरणार्थे के मात्र परमार्थ हावे एवा उत्तम ग्रन्थो छपावी प्रजामां वहेंचाववा होय तेमनुं काम अमो निस्पृह भावे करी आपवाने तैयार छीए. दरेक कुटुंब तरफथी न्हानुं के म्होटुं एक पण उत्तम पुस्तक सर्वत्र छुटथी फेलावी जगतमां पोतानी हयाती सफळ करवी जोइए. मददगारोए नीचेना शीरनामे पत्रव्यवहार करवो.

लि. सेक्रेटरीओ—श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ,

म्हेसाणा.

